नगर संस्करण

प्रयागराज, रविवार 12 अक्टूबर 2025 से 18 अक्टूबर 2025 तक

वर्ष-13 , अंक-39

पृष्ठ- 8 मूल्य: 3 रूपये

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

आधुनिक समाचार

हिन्दी साप्ताहिक

डाक पंजीयन नं. 99/2018-20

E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com

website:www.adhuniksamachar.com

अफगानी मंत्री ने महिला पत्रकारों की एंट्री रोकी तो प्रियंका ने पीएम से पूछा सवाल- महिलाओं का अपमान कैसे होने दिया,जवाब में केंद्र बोला- हमारा कोई रोल नहीं

नयी दिल्ली। अफगानिस्तान के विदेश मंत्री अमीर खान मुत्तकी की

प्रेस कॉन्फ्रेंस में महिला पत्रकारों की एंट्री पर रोक लगाने पर विवाद हो गया है। कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा ने पीएम मोदी से पूछा- भारत में हमारे ही देश की कुछ सबसे सक्षम महिलाओं का अपमान कैसे होने दिया गया, जबकि महिलाएं ही देश की रीढ़ और गौरव हैं। वहीं, विवाद बढ़ने पर भारत के विदेश मंत्रालय ने कहा कि अफगानिस्तान के विदेश मंत्री की प्रेस कॉन्फ्रेंस में उनका कोई रोल नहीं था। न ही उनकी तरफ से पत्रकारों को बुलाया गया था। यह प्रेस कॉन्फ्रेंस अफगानी एंबेसी में हुई थी। विदेश मंत्रालय ने कहा- जब अफगानिस्तानी मंत्री दिल्ली आए तो मुंबई स्थित अफगानिस्तान के काउंसिल जनरल ने ही 10 अक्टूबर को चुनिंदा पत्रकारों को आमंत्रण भेजा था। अफगान दूतावास भारत सरकार के अधिकार क्षेत्र में नहीं आता है। बता दें कि अफगानी विदेश मंत्री 9 से 16 अक्टूबर तक भारत दौरे पर हैं। अफगानिस्तान के कार्यवाहक विदेश मंत्री अमीर मुत्तकी 9 अक्टूबर से भारत दौरे पर हैं। उन्होंने शुक्रवार को भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर के साथ द्विपक्षीय वार्ता की। दोनों मंत्रियों की मीटिंग के बाद कोई जॉइंट प्रेस कॉन्फ्रेंस नहीं हुई। अफगानी मंत्री ने अकेले अफगानिस्तान दूतावास में मीडिया से बात की। हालांकि, इस प्रेस कॉन्फ्रेंस में केवल चुनिंदा पुरुष पत्रकार और अफगान दूतावास के अधिकारी ही शामिल हुए। प्रेस कॉन्फ्रेंस में एक भी महिला पत्रकार नहीं थी। कई महिला पत्रकारों ने सोशल मीडिया पर दावा किया कि उन्हें एंट्री ही नहीं दी गई।

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, मुत्तकी के साथ आए तालिबान अधिकारियों ने ही ये तय किया था कि प्रेस कॉन्फ्रेंस में कौन शामिल होगा। फिलहाल, यह साफ नहीं है कि तालिबान ने भारत को पहले बताया था या नहीं कि वे महिला पत्रकारों को नहीं बुलाएंगे। अफगानिस्तान में 15 अगस्त, 2021 को तालिबान हुकूमत ने कब्जा कर लिया था। अफगानिस्तान में तालिबान सरकार आने के बाद से महिलाओं पर लगातार कई तरह के प्रतिबंध लगाए गए हैं, जिनमें लड़कियों के स्कूल जाने, सार्वजनिक रूप से बोलने, चेहरा दिखाने और खेलों में भाग लेने पर बैन शामिल है। राहुल गांधी, कांग्रेस सांसद और नेता प्रतिपक्ष- पीएम मोदी, जब आप महिला पत्रकारों को सार्वजनिक मंचों से बाहर रखने की इजाजत देते हैं, तो आप भारत की हर महिला को यह बता रहे होते हैं कि आप (पीएम) बहुत कमजोर हैं और उनके लिए खड़े नहीं हो सकते। इस तरह के भेदभाव पर आपकी चुप्पी नारी शक्ति पर आपके नारों की खोखलीपन को उजागर करती है। पी चिदंबरम, पूर्व गृह मंत्री और कांग्रेस नेता- मुझे इस बात पर हैरानी है कि अफगानिस्तान के अमीर खान मुत्तकी की प्रेस कॉन्फ्रेंस में महिला पत्रकारों को शामिल नहीं किया गया। मुझे लगता है कि जब पुरुष पत्रकारों को पता चला कि उनकी महिला सहकर्मियों को नहीं बुलाया गया है, तो उन्हें बाहर चले जाना चाहिए था। महुआ मोइत्रा, तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) सांसद- एक भारतीय मुस्लिम अपनी छत पर नमाज नहीं पढ़ सकता, पैगंबर से प्यार का इजहार नहीं कर सकता है, लेकिन एक विदेशी मुस्लिम कट्टरपंथी अपनी 'आस्था' के नाम पर हमारी जमीन पर हमारी औरतों के साथ हमारे कानूनों और मूल्यों का उल्लंघन करते हुए भेदभाव कर सकता है। इसके बारे में जरा सोचिए।

लड़के ने कलाई काटकर खून से भरी युवती की मांग,घर से खींचकर ले गया, शादी पर अड़ा; बोला- ये मेरी बीवा

आगरा। आगरा में एक शख्स ने फिल्मी स्टाइल में खून से लड़की की मांग भर दी। शुक्रवार रात हुई इस घटना का वीडियो भी सामने आ गया है। दरअसल, पिनाहट कस्बे में एक युवक जबरदस्ती युवती को घर में खींच ले गया। फिर उसने अपनी कलाई काटी और खून से उसकी मांग भर दी। शोर शराबा सुनकर आसपास के लोग मौके पर पहुंचे। सवाल किए तो जवाब मिला- मेरी बीवी है। फिर पुलिस को सूचना दी गई। पुलिस ने युवक को गिरफ्तार कर लिया है।वीडियो में नशे में धुत युवक भीड़ के बीच खड़ा है। एक महिला उससे कहती है कि सुबह तुम्हारी शादी करा देंगे। युवक कहता है कि अभी कराओ। एक युवक पूछता है कि ये तुम्हारी कौन लगती है। युवक कहता है कि वो मेरी पत्नी है। आओ तुम्हारे सामने उसकी मांग भरूं। फिर वो लोगों को लेकर युवती के घर पर पहुंच जाता है। वो जबरन युवती के घर में घुसता है और उसे हाथ पकड़कर बाहर निकाल लाता है। तभी एक व्यक्ति आता है जो युवक को पीटने लगता है। युवती भी विरोध करती है। इसके बाद युवती के परिजन दोनों को धक्का देकर निकाल देते हैं। युवक इसके बाद भी नहीं मानता। वो खून से युवती की मांग भर देता है। युवती को लेकर वहां से चला जाता है।

इसके बाद युवती के परिजनों ने पुलिस में शिकायत की। पुलिस ने आरोपी युवक को पकड़ लिया है। बताया गया है कि युवक-युवती के बीच पहले से प्रेम संबंध हैं। दोनों पहले भी घर से जा चुके हैं। डीसीपी सैयद अली अब्बास ने बताया-' पकड़े गए आरोपी का नाम जावेद है। वह कागारोल का रहने वाला है, युवती की मां की तहरीर पर आरोपी के खिलाफ अपहरण का मुकदमा दर्ज किया गया है। आरोपी को जेल भेज दिया गया है।'

रामपुर सांसद बोले- आजम की हरकतें ओछी, डरूंगा नहीं,वो मुझे जयाप्रदा की तरह प्रताड़ित करने का ख्वाब देख रहे

रामपुर। 'जिस तरह से एक्ट्रेस जया प्रदा को प्रताड़ित किया गया, उसी तरह का कुछ लोग ख्वाब देख रहे हैं, लेकिन मुझे डराने की कोशिश

न करें। रामपुर की जनता मेरे साथ खड़ी है। आजम खान ने 2024 के चुनाव का बहिष्कार किया, उनके लोगों ने बसपा को वोट दिया।' ये कहना है रामपुर के समाजवादी पार्टी के सांसद मौलाना मोहिबुल्ला नदवी का। उन्होंने कहा- पहले के लोगों ने रामपुर में एक मेडिकल कॉलेज तक नहीं बनवाया। पहले रामपुर खुशहाल शहरों में हुआ करता था। रामपुर में अब आजमवादी गैंग खत्म हो गया है। आजम खान के कायद और आलिम फाजिल जैसे तंज पर कहा, 'मैं तो खुद को नेता मानता ही नहीं, मैं तो एक छोटा सा मस्जिद का खादिम, मस्जिद का लोटा कहिए। मस्जिद के लिए जो चीज इस्तेमाल कर लीजिए, कम है।'

अतीक के बेटे को झांसी ले जाने वाला इंस्पेक्टर सस्पेंड,कैमरे पर बोला था-योगी जी बचा लीजिए

प्रयागराज। माफिया अतीक अहमद के बेटे अली अहमद को

प्रयागराज से झांसी जेल शिफ्ट करने के दौरान सुरक्षा में चूक को लेकर बड़ी कार्रवाई हुई है। मामले में इंस्पेक्टर अशोक कुमार को सस्पेंड कर दिया गया है। उनके खिलाफ विभागीय जांच भी शुरू करा दी गई है। दरअसल, नैनी जेल से झांसी ले जाते समय अली ने मीडिया के सामने बयानबाजी की थी, जिसे सुरक्षा में गंभीर चूक माना गया था। यही वजह रही कि ट्रांसफर के दौरान सुरक्षा टीम को लीड कर रहे इंस्पेक्टर पर कार्रवाई की गई। अब सुरक्षा में शामिल अन्य पुलिसकर्मियों के बयान भी दर्ज किए जाएंगे। अली ने मीडिया से कहा था- मेरा अल्लाह जानता है कि यहां सुरक्षित रहेंगे कि नहीं? मुख्यमंत्री जी से यही कहना है कि जो होना था, वो हो गया। हमें बचा लीजिए। मुझे बेवजह सताया न जाए। दरअसल, अली 38 महीने से नैनी जेल में बंद था। उसने 30 जुलाई, 2022 को प्रयागराज कोर्ट में सरेंडर किया था। गिरफ्तारी के बाद पहली बार अली मीडिया से बात कर पाया था। पुलिसवालों ने भी इतनी ढिलाई बरती थी कि वह अपनी बात मीडिया के सामने रख सके।अली के झांसी जेल पहुंचने के बाद जेल परिसर के अंदर का भी एक वीडियो सामने आया था। इसमें अली की फुटेज जेल के अंदर मोबाइल कैमरे से रिकॉर्ड करते दिखाया गया था। इसे लेकर भी सवाल उठे थे। पूर्व घ्इए अमिताभ ठाकुर ने भी इस मामले में उच्चस्तरीय जांच की मांग की थी। सूत्रों के अनुसार, जेल मैनुअल के मुताबिक मोबाइल लेकर जेल के भीतर प्रवेश करना पूरी तरह प्रतिबंधित है। इसके बावजूद वीडियो सामने आने से अब जेल प्रशासन की भूमिका पर भी सवाल उठ रहे हैं।1 अक्टूबर को अली अहमद प्रयागराज की नैनी सेंट्रल जेल से झांसी जेल में शिफ्ट किया गया था। तब उसने मीडिया से कहा- मैं तो दिल्ली में लॉ कर रहा था। फर्जी मुकदमे लगाकर मुझे जेल भेज दिया गया। जेल में रहते हुए मेरे ऊपर 8 मुकदमे लगा दिए गए। अली ने अपनी जान को खतरा बताया था। कहा- ये मेरा अल्लाह जानता है कि यहां सुरक्षित रहेंगे कि नहीं? मुख्यमंत्रीजी से यही कहना है कि जो होना था, वो हो गया। लेकिन सरकार के नाम पर कुछ लोग मुझे अन्यथा परेशान कर रहे हैं, उनसे हमें बचा लीजिए। मुझे बेवजह सताया जा रहा है। मुझे रास्ते में पानी पीने तक नहीं दिया गया।प्रयागराज में 24 फरवरी, 2023 को उमेश पाल की हत्या के बाद सीएम योगी ने विधानसभा में कहा था कि माफिया को मिट्?टी में मिला देंगे। 15 अप्रैल, 2023 को प्रयागराज के अस्पताल में मेडिकल के लिए ले जाते वक्त अली के पिता अतीक अहमद और चाचा अशरफ की हत्या कर दी गई थी। अली की मां शाइस्ता परवीन फरार है। भाई का भी एनकाउंटर हो चुका है।

सीजेआई बोले- डिजिटल युग में लड़कियां सबसे ज्यादा असुरक्षित,तकनीक सशक्तिकरण नहीं, शोषण का जरिया बनी,पुलिस को खास ट्रेनिंग जरूरा

नयी दिल्ली। मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) बीआर गवई ने शनिवार को कहा कि डिजिटल दौर में लड़कियां नई तरह की परेशानियों और खतरों का सामना कर रही हैं। तकनीक सशक्तिकरण नहीं, शोषण का जरिया बन गई है। सीजेआई गवई ने कहा-'लड़कियों के लिए आज ऑनलाइन हैरेसमेंट, साइबर बुलिंग, डिजिटल स्टॉकिंग, निजी डेटा के दुरुपयोग और डीपफेक तस्वीरें बड़ी चिंता बन गई हैं। इन खतरों से बचाने के लिए पुलिस और अधिकारियों को खास ट्रेनिंग देने की जरूरत है, ताकि वे ऐसे मामलों को समझदारी और संवेदनशीलता से संभाल सकें।' सीजेआई गवई सुप्रीम कोर्ट की जुवेनाइल जस्टिस कमेटी और यूनिसेफ इंडिया द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन 'सेफगार्डिंग द गर्ल चाइल्ड' में बोल रहे थे। कार्यक्रम में जस्टिस बीवी नागरत्ना, जस्टिस जेबी पारदीवाला, केंद्रीय महिला और बाल विकास मंत्री अन्नपूर्णा देवी और यूनिसेफ इंडिया

की प्रतिनिधि सिंथिया मैककैफ्री भी मौजूद थीं। सीजेआई गवई की 2 बड़ी बातें- 1. संवैधानिक गारंटी होने के बावजूद देश की कई लड़कियों को अब भी बुनियादी अधिकारों और सम्मान से वंचित रखा जाता है। यह स्थिति उन्हें यौन शोषण, मानव तस्करी, बाल विवाह और भेदभाव की परिस्थितियों में धकेल देती है। टैगोर की कविता 'पेंा्प श्ह् ंगे ग्प् दलू ईं' का जिक्र करते हुए सीजेआई ने कहा-' जब तक कोई भी लड़की डर में जी रही है, तब तक भारत उस 'स्वतंत्रता के स्वर्ग' तक नहीं पहुंच सकता।' 2. डिजिटल दौर में खतरे अब भौतिक दायरे से निकलकर वर्चुअल दुनिया तक पहुंच गए हैं। टेक्नोलॉजी जहां एक ओर अवसर देती है, वहीं यह नए तरह के शोषण का साधन भी बनती जा रही है। जस्टिस नागरत्ना बोलीं- लड़कियों को लड़कों के समान अधिकार मिले- जस्टिस बीवी नागरत्ना- एक लड़की तभी बराबर की नागरिक मानी जा सकती है, जब उसे वही अवसर, संसाधन और सम्मान मिले जो एक लड़के को मिलते हैं। जस्टिस जेबी पारदीवाला- हर लड़की का अधिकार है कि वह भय और भेदभाव से मुक्त होकर शिक्षा, स्वास्थ्य और समान अवसरों के साथ आगे बढ़ सके। चीफ जस्टिस बीआर गवई ने कहा कि भारतीय न्याय व्यवस्था रूल ऑफ लॉ यानी (कानून के शासन) से चलती है, इसमें बुलडोजर एक्शन की जगह नहीं है। उन्होंने कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने हाल के फैसले में अदालत ने स्पष्ट किया था कि किसी आरोपी के खिलाफ बुलडोजर चलाना कानून की प्रक्रिया को तोड़ना है।

अखिलेश का फेसबुक अकाउंट सस्पेंड:80 लाख फॉलोअर्स थे

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव का फेसबुक पेज सस्पेंड कर दिया गया

है। इस पेज से करीब 80 लाख लोग जुड़े थे। अब ये तकनीकी खामी है या कोई और मामला है, इसकी जानकारी अभी तक नहीं दी गई है। अभी तक इस मामले में मेटा या मेटा इंडिया की ओर से कोई बयान जारी नहीं किया गया है। फेसबुक ने कोई वॉर्निंग दी थी या नहीं, यह भी पता नहीं चल पाया है। फिलहाल, सपा नेता और कार्यकर्ता भड़क उठे हैं। मेरठ की सरधना सीट से विधायक अतुल प्रधान ने कहा, अखिलेश यादव का फेसबुक अकाउंट बंद करवाकर सरकार उनको जनता के दिलों से दूर नहीं कर सकती। अखिलेश यादव का फेसबुक पेज सर्च करने पर एक विंडो खुलकर सामने आती है। जिसमें लिखा है- ''यह कंटेंट अभी उपलब्ध नहीं है। आमतौर पर इसलिए होता है, क्योंकि इसके ओनर ने इसे केवल लोगों के एक छोटे समूह के साथ शेयर किया है, बदल दिया है कि इसे कौन देख सकता है या इसे हटा दिया गया है।'' सपा का एक्स अकाउंट अभी चल रहा है। पार्टी ने पोस्ट लिखकर फेसबुक से 6 सवाल पूछे हैं। ऐसा उन्होंने किस आधार पर किया? क्या ऐ नीतिगत मामला है? क्या बिना कारण ऐसा किया जाना अलोकतांत्रिक नहीं है? क्या आम जनता के लिए आवाज उठाने वालों के अकाउंट को बंद करना, मानवाधिकार का विषय नहीं है? या इसके पीछे कोई राजनीतिक कारण है? सपा प्रवक्ता मनोज काका ने फेसबुक पोस्ट लिखकर अपना गुस्सा जाहिर किया है। उन्होंने लिखा- भारत की तीसरी सबसे बड़ी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष, पूरी दुनिया में समाजवाद न्याय और लोकतांत्रिक मूल्यों के बड़े पैरोकार राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव का फेसबुक पेज डिएक्टिवेट करना ये दर्शाता है कि स्वतंत्र अभिव्यक्ति के प्रति प्रतिबद्धता मेटा, मेटा इंडिया की भी अब सरकारों के हाथों गुलाम हो गई है। मेटा से अपील है अखिलेश यादव के पेज यथाशीघ्र एक्टिव किया जाए। लखनऊ नॉर्थ से प्रत्याशी रहीं सपा नेता पूजा शुक्ला ने एक्स पर लिखा, फेसबुक ने अपनी हदें पार कर दीं हैं। उसने अखिलेश यादव जी का आधिकारिक पेज बिना किसी चेतावनी या सूचना के निलंबित कर दिया है। यह कोई साधारण अकाउंट नहीं है। यह अखिलेश यादव जी हैं, लाखों लोगों की आवाज़! फेसबुक को अपनी सीमाओं का ध्यान रखना चाहिए- वह लोकतंत्र को दबा नहीं सकता।समाजवादियों, अब फेसबुक को होश में लाने का समय आ गया है! ऐसा अहंकार बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। सपा प्रवक्ता फखरुल हसन चांद ने एक बातचीत में कहा, भारतीय जनता पार्टी के रहते हुए कौन विपक्ष की आवाज सुनेगा। देश की तीसरी सबसे बड़ी पार्टी के नेता का वेरिफाइड अकाउंट सस्पेंड होना कोई मामूली बात नहीं है। यह लोकतंत्र पर कुठाराघात है। भाजपा प्रवक्ता राकेश त्रिपाठी ने कहा, ऐसा क्यों हुआ यह तो फेसबुक ही जानकारी दे सकता है। इसका बीजेपी से कोई सरोकार नहीं है। समय समय पर बीजेपी नेताओं के भी अकाउंट भी सस्पेंड हुए हैं या हैक हुए हैं। इसका राजनीतिकरण नहीं करना चाहिए।उन्हें यह देखना चाहिए क्या कोई सामग्री अपलोड हुई जो नियमों का उल्लंघन करती थी? किसी को फेसबुक पर मैसेज करके, कमेंट करके या कॉल करके धमकी देने की गलती न करें। साथ ही किसी तरह की कोई भड़काऊ या गलत तरह की पोस्ट न लिखे। अगर आप ऐसा करते हैं और आपकी शिकायत होती है, तो आपके अकाउंट को ब्लॉक तक किया जा सकता है। फेसबुक पर ऐसी कोई पोस्ट शेयर न करें, जो नफरत पैदा करती हो और जिससे दंगे हो सकते हैं। इसलिए ध्यान रखें कि भड़काऊ पोस्ट, आपत्तिजनक फोटोज और वीडियो को शेयर करने से बचना चाहिए। वरना आपके फेसबुक अकाउंट को ब्लॉक किया जा सकता है और आप पर पुलिस द्वारा कार्रवाई भी की जा सकती है।फेसबुक पर आप अपनी तस्वीरें, वीडियो और विचार जैसी चीजें शेयर कर सकते हैं। यहां लोग अपने सामान को खरीद-बेच भी रहे हैं, लेकिन आपको यहां पर प्रतिबंधित चीजें, जैसे- हथियार, गोला-बारूद, बैन की हुई दवाएं, गांजा और नशे की सामग्री आदि बचने से बचना चाहिए। ऐसा करने पर आपके ऊपर कार्रवाई होते हुए आपके अकाउंट को ब्लॉक किया जा सकता है। महिला उत्पीड़न सदैव अपराध की श्रेणी में आता है। आपको इस बात का ध्यान फेसबुक पर भी रखना है। गलती से भी किसी महिला को अभद्र टिप्पणी न करें, उनकी किसी पोस्ट पर गलत बात न लिखें आदि। ऐसा करने की स्थिति में भी आपका फेसबुक अकाउंट ब्लॉक हो सकता है।

खोपड़ी का सूप पीने वाला राजा कोलंदर रिहा नहीं होगा,राज्यपाल ने रिहाई मंजूर की थी,भुगतभोगी का बेटा बोला- ये रहम का हकदार नहीं

प्रयागराज। यूपी की राज्यपाल आनंदी बेन पटेल ने इंसानी खोपड़ी का सूप बनाकर पीने वाले राम निरंजन कोल उर्फ राजा कोलंदर की रिहाई मंजूर की है।मंजूरी मिलने के बाद शासन ने 4 सितंबर को रिहाई का आदेश भी जारी कर दिया, जिसमें उत्तर प्रदेश प्रिजनर्स रिलीज ऑन प्रोबेशन एक्ट, 1938 की धारा-2 और संबंधित नियमों का हवाला दिया गया है। लेकिन राजा कोलंदर की रिहाई अटक गई है। राजा कोलंदर उन्नाव जेल में उम्रकैद की सजा काट रहा है। उन्नाव जेल के वरिष्ठ अधीक्षक पंकज कुमार सिंह ने बताया- दो मामलों में आजीवन कारावास की सजा होने के कारण उसकी रिहाई फिलहाल संभव नहीं है। एक ही मामले में उसका रिहाई आदेश जारी हुआ है। ऐसे में वह जेल में ही बंद रहेगा। उधर, रिहाई की खबर पर मृतक पत्रकार धीरेंद्र के बेटे संदीप ने कहा- कोलंदर महज उसके पिता का हत्यारा नहीं। उनके जैसे कई अन्य निर्दोषों की भी जानें उसने लीं। ऐसा अपराधी किसी भी तरह के रहम का हकदार नहीं। उसे फांसी की सजा होनी चाहिए।राजा कोलंदर प्रयागराज के शंकरगढ़ थाना क्षेत्र के हिनौती गांव का रहने वाला है। नैनी स्थित केंद्रीय आयुध भंडार छिवकी में कर्मी था। कर्मचारी होने के बावजूद वह खुद को राजा ही समझता था। उसका कहना था कि जो आदमी उसे पसंद नहीं उसे वह अपनी अदालत में सजा जरूर देता है। अजीब सोच के कारण कोलंदर

ने अपनी पत्नी का नाम फूलन देवी और दोनों बेटों के नाम अदालत और जमानत रखे थे। वहीं, बेटी का नाम आंदोलन रखा था। उसकी पत्नी फूलन देवी जिला पंचायत सदस्य चुनी गई थी। उस पर 14 लोगों की नृशंस हत्या का आरोप है। प्रयागराज में पत्रकार धीरेंद्र सिंह हत्याकांड में वर्ष 2012 में अदालत ने उसे उम्रकैद की सजा सुनाई थी। इसके अलावा पांच महीने पहले लखनऊ में भी एक अन्य डबल मर्डर और अपहरण मामले में आजीवन कारावास का दंड दिया गया था।राजा कोलंदर करीब 25 वर्षों से जेल में बंद है। उसने अब तक 23 वर्ष, 10 महीने, 27 दिन की अपरिहार्य सजा और 27 वर्ष, तीन महीने, तीन दिन की सपरिहार्य सजा काट ली है। रिहाई की मंजूरी नौ शर्तों के साथ दी गई थी। शासनादेश के अनुसार, उसका बेटा नवीन कुमार अभिरक्षक रहेगा और शर्तों के उल्लंघन पर कोलंदर को फिर से जेल भेजा जाएगा। यह आदेश चार सितंबर का है। लेकिन दूसरे केस में सजा होने के कारण वह अब जेल में ही रहेगा। कारागार प्रशासन ने राजा कोलंदर को लाइसेंस पर सशर्त रिहाई की अनुमति दी थी। इसके तहत उसे अपने अभिभावक नवीन कुमार की देखरेख में रहना था। उसे निवास, रोजगार और आचरण से संबंधित सभी नियमों का पालन करना अनिवार्य था। किसी भी शर्त के उल्लंघन पर राज्य सरकार लाइसेंस रद्द कर उसे फिर से जेल भेज सकती थी। राजा कोलंदर के रिहाई आदेश की खबर से पत्रकार धीरेंद्र सिंह के परिजनों में गहरा आक्रोश है। उनके बड़े भाई वीरेंद्र सिंह ने कहा- जिस नरभक्षी ने 14 लोगों को बेरहमी से मारा, उसकी रिहाई समाज के लिए गलत संदेश है। उन्होंने राज्यपाल, मुख्यमंत्री और रक्षा मंत्री को पत्र भेजकर आदेश पर पुनर्विचार की मांग की है। वीरेंद्र ने बताया- 14 दिसंबर 2000 को धीरेंद्र की हत्या के बाद पुलिस ने आरोपी की निशानदेही पर कई मानव कंकाल बरामद किए थे। उसके पिगरी फॉर्म हाउस से मानव खोपडियां भी बरामद हुई थीं। पत्रकार धीरेंद्र के बेटे संदीप ने कहा- कोलंदर महज उसके पिता का हत्यारा नहीं। उनके जैसे कई अन्य निर्दोषों की भी जानें उसने लीं। ऐसा अपराधी किसी भी तरह के रहम का हकदार नहीं। उसे फांसी की सजा होनी चाहिए।पत्रकार धीरेंद्र सिंह की पत्नी नीना सिंह और छोटे बेटे राहुल का निधन हो चुका है। परिवार में अब बेटा संदीप और बेटी नेहा हैं। नेहा की शादी हो चुकी है और संदीप अपने पैतृक गांव बसहरा (शंकरगढ़) में रहकर खेती करता है। भाई वीरेंद्र सिंह ने बताया कि धीरेंद्र की हत्या के छह महीने बाद ही उनकी पत्नी नीना की एक सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी। परिवार आज भी उस दर्द से उबर नहीं सका है।राजा कोलंदर की सीरियल किलिंग की भयावह कहानी पर नेटफ्लिक्स ने 'घ्र्ह्ग ईंदे: ऊप अैंबर्दे ईग्त खत्ते' नाम से डॉक्यूमेंट्री बनाई थी। यह सीरीज 2022 में आई थी और उस वक्त देशभर में सुर्खियों में रही थी।प्रयागराज में पत्रकार धीरेंद्र सिंह का 14 दिसंबर 2000 को शव मिला था। इस हत्याकांड की जांच करते हुए पुलिस पहली बार राजा कोलंदर तक पहुंची। पुलिस ने उसे गिरफ्तार किया। सख्ती से पूछताछ की, तो उसने जुर्म कबूल कर लिया। राजा कोलंदर ने पूछताछ में पुलिस को बताया- एक मामले में पत्रकार धीरेंद्र के भाई ने मेरे खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई थी। तभी तय कर लिया था कि धीरेंद्र सिंह की हत्या करनी है। राजा कोलंदर ने बताया कि धीरेंद्र सिंह को प्रयागराज स्थित अपने पिपरी फार्म हाउस पर बुलाया। धीरेंद्र सिंह बाइक से पहुंचा था। सर्दी थी, इसलिए अलाव जला रखा था। धीरेंद्र सिंह अलाव के पास बैठा था तभी राजा कोलंदर के साले वक्षराज ने गोली मार दी। मौके पर ही धीरेंद्र सिंह ने दम तोड़ दिया।

fresh weekly.pmd 1 11-Oct-25, 7:43 PM

यू0पी0 ट्रेड शो स्वदेशी मेला में पंजीकृत निर्माण श्रमिकों के हितार्थ संचालित विभिन्न योजनाओं की दी गई जानकारी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। सहायक श्रमायुक्त

आर0एल0 स्वर्णकार ने बताया है कि जनपद के जी0आई0सी0 ग्राउंड रायबरेली में यू0पी0 ट्रेड शो स्वदेशी मेला का आयोजन 09 से 18 अक्टूबर तक किया जा रहा है। जिसमें द्वितीय दिवस के अवसर पर मेला स्थल पर आयोजित कार्यक्रम में श्रम विभाग द्वारा '30प्र0 भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड' के अन्तर्गत पंजीकृत निर्माण श्रमिकों के हितार्थ संचालित विभिन्न योजनाओं, जैसे 'मातृत्व, शिशु एवं बालिका मदद योजना' जिसमें दो बच्चों के जन्म लेने पर लाभ देय है, 'कन्या विवाह सहायता योजना' जिसमें दो पुत्रियों के विवाह हेतु हितलाभ देय है एवं पंजीकृत निर्माण श्रमिक की मृत्यु होने की दशा में 'निर्माण कामगार मृत्यु व दिव्यांगता सहायता योजना' संचालित है जिसमें मृतक पंजीकृत श्रमिक के आश्रितों को हितलाभ देय है, के संबंध में विस्तार से उपस्थित श्रमिकों एवं आम जनमानस को जानकारी प्रदान की गयी है। श्रमिकों को यह भी जानकारी दी गयी कि पात्र पंजीकृत श्रमिक, उक्त योजनाओं के अन्तर्गत लाभ प्राप्त करने हेतु अपने नजदीकी जन सुविधा केन्द्र के माध्यम से आवेदन कर सकते हैं, योजनाओं में आवेदन करने हेतु नवीनीकरण अद्यतन होना आवश्यक है। पंजीकृत निर्माण श्रमिकों को अपना नवीनीकरण, नजदीकी जन सुविधा केन्द्र के माध्यम से कराने हेतु कहा गया तथा अपंजीकृत निर्माण श्रमिकों को अपना पंजीयन कराने हेतु कहा गया। इस कार्यक्रम में विशेष रूप से यह जानकारी दी गयी कि बोर्ड में पंजीकृत ऐसे निर्माण श्रमिक जिन्होंने विगत 04 वर्षों अथवा उससे अधिक समय से नवीनीकरण नहीं कराया है, उन्हें 15 अक्टूबर, 2025 के बाद निष्क्रिय सूची में डाल दिया जाएगा तथा निष्क्रिय श्रमिकों की गणना पंजीकृत निर्माण श्रमिकों में नहीं की जाएगी। उन्होंने सभी पंजीकृत निर्माण श्रमिकों से आह्वान किया कि वे 15 अक्टूबर से पूर्व अवश्य ही अपना नवीनीकरण करा लें।

भीड़ की पिटाई से मरे युवक के परिवार को मंत्रियों ने दी आर्थिक सहायता

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। विगत एक अक्टूबर को युवक की पीट पीट कर हुई हत्या के मामले में पीड़ित परिवार को सरकार की ओर से आर्थिक सहायता मुहैया कराई गई है। सरकार के कैबिनेट मंत्री राकेश सचान और राज्यमंत्री असीम अरुण ने ऊंचाहार पहुँच कर मृतक हरिओम के पिता गंगादीन को छह लाख 62 हजार और उनकी पत्नी पिंकी को छह लाख 92 हजार की आर्थिक सहायता के चेक सौंपे । इसके साथ ही मंत्री राकेश सचान और असीम अरुण ने परिवार से कहा है कि सरकार उनके दुख में उनके साथ खड़ी है। कैबिनेट मंत्री राकेश सचान ने कहा कि मृतक के बच्चों की पढ़ाई के लिए सहायता तथा अन्य सरकारी योजनाओं जैसे पेंशन, आवास आदि की सुविधा भी परिवार को उपलब्ध कराई जाएगी ।राज्यमंत्री असीम अरुण ने प्रदेश भर में चोर और ड्रोन की अफवाह फैलाने वालों को भी सख्त चेतावनी देते हुए कहा कि उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई होगी। इस दौरान उन्होंने पीड़ित को दलित के तौर पर पेश करने वालों को भी आड़े हाथों लिया और कहा कि घटना पूर्व नियोजित नहीं थी, पकड़े गए आरोपी भी दलित हैं। इसलिए इसे जातीय रंग न दिया जाए। परंतु कुछ दल इस घटना में अवसर तलाश रहे हैं। जैसा कि जानकारी है युवक को चोर समझकर पीट पीट कर हुई हत्या के मामले में अब तक पुलिस ने 12 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। इनमें से एक के साथ मुठभेड़ के दौरान उसके पैर में गोली भी लगी है। इस मामले में कुल चिन्हित 21 आरोपियों में से 9 लोगों की अभी भी तलाश है। मृतक हरिओम की पत्नी पिंकी ने पुलिस और प्रशासन की कार्रवाई से आश्वस्त होते हुए सीएम योगी को धन्यवाद दिया है। सरकारी मदद पाने वाली मृतक हरिओम वाल्मीकि की पत्नी पिंकी ने बताया कि वह सरकार की कार्रवाई से संतुष्ट है और वह चाहती है कि इस घटना में जो भी दोषी लोग हैं उन्हें सख्त सजा मिलनी चाहिए।

त्रिदिवसीय रामलीला महोत्सव 2025 का संपन्न

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। आदर्श लोककला समिति, गोहरी, प्रयागराज द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय रामलीला महोत्सव आज दिनांक 10 अक्टूबर को सम्पन्न हुआ। आज अंतिम सांस्कृतिक संस्था इण्डियन फोक एण्ड मार्डन आर्ट अकादमी, प्रयागराज की प्रस्तुति 'सीता हरण' प्रसंग का मंचन किया गया इस प्रस्तुति का निर्देशन वरिष्ठ रंगकर्मी रमेश कश्यप तथा सह निर्देशन शुभम कश्यप के द्वारा किया गया। कल द्वितीय दिवस पर आदर्श रामलीला समिति, द्वारा 'कैकेयी वरदान' की प्रस्तुति की गयी थी। चतुर्थ रामलीला महोत्सव 2025 की परिकल्पना व निर्देशन युवा रंगकर्मी कुंवर तेजभानु सिंह 'प्रिंस' ने किया। जबकि सह निर्देशन कुंवर करन सिंह व देवेन्द्र सिंह का था। रामलीला महोत्सव का मुख्य आकर्षण मानस की चैपाइयों पर आधारित पारंपरिक रामलीला की राधेश्यामी शैली पर आधारित प्रस्तुतियां रही। जिसमें अभिनेता अपने संवादों को स्वर-लयबद्ध करके गाते हैं। पारम्परिक राधेश्यामी धुन हमारे दशहरा मेलों की जान रही है। इन धुनों पर आधारित गाने दशहरा मेलों

में खूब बजते थे। आधुनिकता के कारण रामलीलाओं का स्वरुप समय के साथ बदलता गया। इसमें पारम्परिक धुनों के स्थान पर पहले से रिकार्डेड संवाद बजने लगे, जिस पर अभिनेता केवल अपनी भाव-भंगिमाओं को ही मंच पर प्रस्तुत करते हैं। राधेश्यामी रामलीला की परम्परिकता में जो लोक जनमानस की मिठास छुपी थी। इस रामलीला महोत्सव में इसी परम्परा को मंचीय आधुनिकता का समावेश करते हुआ पुनः जागृत करने का प्रयास किया गया। मंच पर जिन कालाकारों ने अभिनय किया उनमें- कुंवर करन सिंह (राम), देवेन्द्र सिंह (लक्ष्मण), जाह्नवी पाण्डेय(सीता), मोती चन्द पाण्डेय, दूधनाथ विष्वकर्मा, देवी चरण पाण्डेय, इन्द्रजीत सिंह, मिथिलेश यादव, हेमा बानो, ओम प्रकाश सिंह, जीतेन्द्र सिंह, शिवेन्द्र वैश्य, युवराज सिंह, रवि कुमार पटेल, अस्मिता तिवारी, अपराजिता तिवारी, रिया दिवाकर, शिवानी दुबे, कृति सिंह, आख्या चित्रांशी, विपिन सिंह, अनुज सिंह, समर्थ जायसवाल, अखिलेश पाल, सूरज विश्वकर्मा, निशि कुमारी, सृष्टि गुप्ता, तेजस्वी सिंह, अनाया सिंह, आयुशी श्रीवास्तव, कुमकुम कुमारी, आदित्य पाण्डेय, नैतिक पाण्डेय आदि। वहीं मंच परे पार्श्व गायन शरद राज, सुधा सिंह, मान्य, कृति, शिल्पी, शिवानी. अक्षय प्रताप सिंह (ढोलक), आकांक्षा मिश्रा (की-बोर्ड), आशुतोष मिश्रा (तबला) प्रकाश संयोजन (धीरज कुमार), मोहम्मद हामिद अंसारी (रूप सज्जा).

करवाचौथ पर्व पर सुहागिनों ने की अखंड सौभाग्य की कामना, श्रृंगार से सजी महिलाओं ने रखा निर्जला व्रत, चाँद को अर्घ्य देकर किया पूजन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। पारंपरिक आस्था और प्रेम का प्रतीक करवाचौथ पर्व धूमधाम से मनाया गया। शहर की विवाहित महिलाओं ने अपने पति की दीर्घायु एवं अखंड सौभाग्य की कामना करते हुए निर्जला व्रत रखा। शाम के समय महिलाओं ने सोलह श्रृंगार कर पूजा स्थल को सजाया और करवामाता की विधिवत पूजा-अर्चना की। रात में चाँद निकलने के बाद महिलाओं ने छलनी से अपने पति का चेहरा देखा और चाँद को अर्घ्य देकर व्रत का पारण किया। इस अवसर पर जगह-जगह सुंदर करवाचौथ आयोजन हुए, जिनमें करवा क्वीन प्रतियोगिता और सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने सभी का मन मोह लिया। सामाजिक संस्थाओं एवं मीडिया संगठनों द्वारा भी विशेष कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें महिलाओं को सम्मानित किया गया। पूरे दिन का यह व्रत न केवल पारंपरिक आस्था का प्रतीक रहा बल्कि प्यार, समर्पण और परिवारिक एकता का सुंदर संदेश भी देता नजर आया।

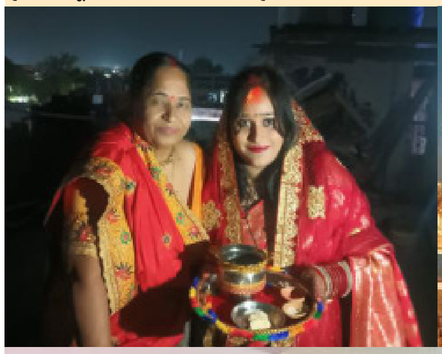

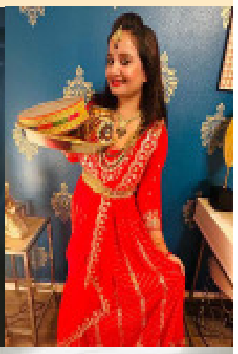

INDIAN SECURITY AND MANPOWER SERVICES

ADDRESS- Naini,Prayagraj U.P-211008. PAN No. ABJPA1540R,Reg.No.03-0068604

Regd. Under Additional Director General of Police U.P. vide Reg. No. 2453
+91-7985619757,+91-7007472337

We Are Providing Security & Manpower Services in School/ University/Institute/ Hospital/Office Premises

INDIAN SECURITY AND MANPOWER SERVICES:-

takes great pleasure in Providing Security arrangement and Office Staff for your Organization premises. We have with us talented and well trained Disciplined persons, each having exposure to industrial/commercial security and intelligence knowledge in their field. Our personnel's are physically fit, courageous disciplined and well trained in their field. They are bold but polite, peace loving but not coward, friendly but shrews while duty, sharp in act but very claim and affable where presence of mind is lost by the common man, ailing but smelling the red hounds, work in the common climate but vigilant and faithfully to the organization. It is on account of the above trait that our services are engaged by reputed organization which consists of Schools, University, Banks, Government, industrial Concern, Hotels, Hospitals, Educational Institutes, Housing Societies/Bungalows, Semi Government and Government Organization.

INDIAN SECURITY AND MANPOWER SERVICES is registered by:-
Additional Director General of Police, (Law & Order), Deputy Labour Commissioner, Employees Provident Fund Organization, Employees State Insurance Corporation, Goods & Services Tax, MSME Registration..(Govt. of India)

FOR JOB CONTACT:- 9569430885

INDIAN SECURITY AND MANPOWER SERVICES Manpower Category:-
Assignment Manager, Housekeeping Manager, Assignment Supervisor, Housekeeping Supervisor, Accountant, Driver, Computer Operator, Electrician, Data Entry operator, Carpenter, Clerk, Office Boy, M.T.S, Sweeper, Peon, Gardner, Computer Teacher, Agriculture Labour, TGT & PGT Teacher, Quality/Technical Manpower as per your requirement.

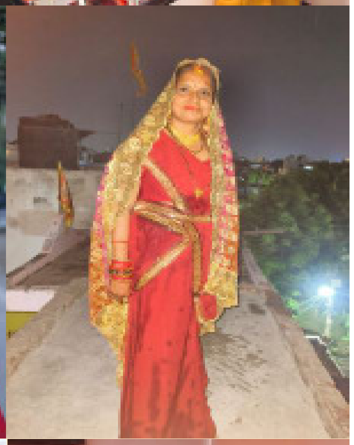

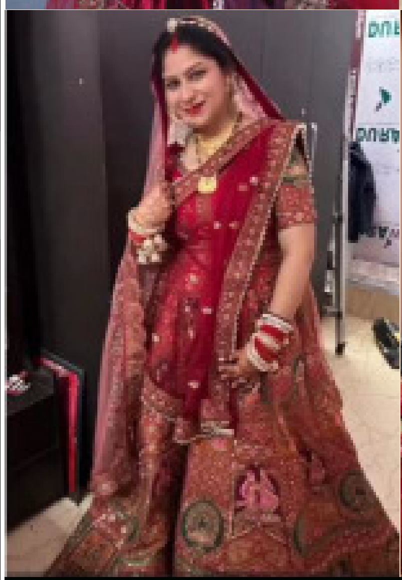

उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रदेश महासचिव ओमवीर यादव ने प्रियंका गांधी से की मुलाकात, प्रदेश की राजनीति पर हुई महत्वपूर्ण चर्चा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। के बहलोलपुर निवासी एवं उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रदेश

महासचिव ओमवीर यादव ने कांग्रेस की राष्ट्रीय महासचिव श्रीमती प्रियंका गांधी वाड्रा से विशेष मुलाकात की। इस दौरान उत्तर प्रदेश की मौजूदा राजनीतिक परिस्थितियों, संगठन की मजबूती, जमीनी स्तर पर जनसंपर्क को मज़बूत करने एवं आगामी राजनीतिक रणनीतियों को लेकर गहन चर्चा हुई। मुलाकात के दौरान ओमवीर यादव ने प्रियंका गांधी को गौतमबुद्ध नगर के साथ साथ प्रदेश की राजनीतिक स्थिति, जनभावनाओं तथा कांग्रेस पार्टी के कार्यकर्ताओं द्वारा किए जा रहे सामाजिक एवं राजनीतिक प्रयासों से अवगत कराया। साथ ही उन्होंने संगठन के विस्तार और युवाओं एवं आम नागरिकों को पार्टी से जोड़ने के लिए कई सुझाव भी प्रस्तुत किए। प्रियंका गांधी ने प्रदेश में कांग्रेस संगठन को मज़बूत बनाने के लिए ओमवीर यादव के योगदान की सराहना की और भविष्य में पार्टी के जनआंदोलनों एवं अभियानों को और प्रभावी बनाने हेतु मार्गदर्शन दिया। उन्होंने स्पष्ट किया कि उत्तर प्रदेश में कांग्रेस पार्टी जनता के मुद्दों को लेकर सशक्त विकल्प बनेगी और प्रत्येक कार्यकर्ता को इस दिशा में सक्रिय भूमिका निभानी होगी। ओमवीर यादव ने इस मुलाकात को 'प्रेरणादायक' बताते हुए कहा कि प्रियंका गांधी का नेतृत्व प्रदेश की राजनीति में नई ऊर्जा और दिशा प्रदान कर रहा है। उन्होंने कहा कि वह कांग्रेस की नीतियों को जन-जन तक पहुँचाने और संगठन को बूथ स्तर तक सशक्त बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

यूपी इंटरनेशनल ट्रेड शो की तर्ज पर नोएडा हाट में आयोजित हो रहा है 10 दिवसीय 'यू0पी0 ट्रेड शो-स्वदेशी मेला 2025'

ऊर्जा एवं अतिरिक्त ऊर्जा विभाग के माननीय मंत्री सोमेंद्र तोमर जी ने रिबन काटकर किया स्वदेशी मेले का उद्घाटन

आमजन अधिक से अधिक संख्या में स्वदेशी मेले में पहुंचकर स्वदेशी वस्तुओं एवं जीएसटी दरों में कमी का उठाएं लाभ,स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा देने की दिशा में सशक्त पहल 'यू0पी0 ट्रेड शो-स्वदेशी मेला 2025' : माननीय मंत्री

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। उत्तर प्रदेश के शिल्पियों, कारीगरों एवं स्थानीय उद्यमियों को

सशक्त बनाने और स्वदेशी उत्पादों को व्यापक पहचान दिलाने के उद्देश्य से आयोजित 'यू0पी0 ट्रेड शो-स्वदेशी मेला 2025' का आज

नोएडा हाट, सेक्टर-33ए में भव्य उद्घाटन हुआ। इस 10 दिवसीय मेले का उद्घाटन ऊर्जा एवं अतिरिक्त ऊर्जा विभाग उत्तर प्रदेश सरकार के माननीय राज्य मंत्री डॉ. सोमेंद्र तोमर जी के कर-कमलों द्वारा किया गया। उद्घाटन अवसर पर माननीय मंत्री जी का स्वागत मुख्य विकास अधिकारी डॉ. शिवकांत द्विवेदी द्वारा पुष्पगुच्छ भेंट कर किया गया। स्कूली बच्चों द्वारा आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी गई, जिसने उपस्थित अतिथियों को मंत्रमुग्ध कर दिया। मंत्री जी ने अपने संबोधन में कहा कि यह स्वदेशी मेला प्रदेश के कारीगरों और उद्यमियों के कौशल, परिश्रम और सृजनशीलता का प्रतीक है। माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को साकार करने हेतु उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी के नेतृत्व में राज्य

सरकार 'वोकल फॉर लोकल' एवं 'आत्मनिर्भर भारत' के संकल्प को साकार करने के लिए निरंतर कार्य कर रही है।मंत्री जी ने विशेष रूप से स्वयं सहायता समूह की महिलाओं द्वारा निर्मित उत्पादों की सराहना करते हुए कहा कि ये महिलाएं अपने हुनर से न केवल आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनी हैं, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी सशक्त बना रही हैं। राज्य सरकार इनके उत्पादों के विपणन और प्रोत्साहन हेतु निरंतर प्रयासरत है। ऐसे आयोजन न केवल स्थानीय उत्पादों के विपणन को बढ़ावा देते हैं, बल्कि युवाओं

को स्वरोजगार एवं नवाचार की दिशा में प्रेरित भी करते हैं। मंत्री जी ने इस अवसर पर मेले में लगाई गई विभिन्न ओडीओपी (वन डिस्ट्रिक्ट-वन प्रोडक्ट) स्टालों का विस्तृत अवलोकन किया। उन्होंने रेडीमेड गारमेंट्स, टेक्सटाइल, माटी कला, लकड़ी शिल्प, हथकरघा, हस्तशिल्प एवं घरेलू उत्पादों से सजे स्टालों पर प्रदर्शित वस्तुओं का बारीकी से अवलोकन किया और शिल्पियों एवं उद्यमियों से संवाद स्थापित किया। मंत्री जी ने उत्पादों की गुणवत्ता, डिज़ाइन और प्रस्तुति की सराहना करते हुए कहा कि 'प्रदेश के शिल्पी अपनी परंपरा, सृजनशीलता और गुणवत्ता से वैश्विक स्तर पर उत्तर प्रदेश की पहचान मजबूत कर रहे हैं।' इस अवसर पर माननीय राज्य मंत्री जी द्वारा ओडीओपी, टूल किट योजना तथा अन्य योजनाओं के लाभार्थियों को प्रमाणपत्र एवं सामग्री वितरित कर लाभान्वित भी किया गया। मेले में बड़ी संख्या में आगंतुकों ने शिल्पियों के कार्य को सराहा और स्वदेशी उत्पादों की खरीदारी कर 'स्थानीय से वैश्विक' की दिशा में योगदान दिया। मेले में लाइव डेमो, शिल्प कार्यशालाएँ एवं सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ भी विशेष आकर्षण का केंद्र हैं। मुख्य विकास अधिकारी ने बताया कि मेला 09 से 18 अक्टूबर 2025 तक आमजन के लिए खुला रहेगा। मेले में लगभग 100 स्टाल विभिन्न स्वदेशी उत्पादों के लगाए गए हैं। स्वदेशी उत्पादों के क्रय पर जी0एस0टी0 दरों में रियायतें भी उपलब्ध हैं, जिससे आमजन को लाभ प्राप्त होगा। साथ ही उन्होंने नागरिकों से आग्रह किया कि वे अधिकाधिक संख्या में मेले में पहुँचकर स्वदेशी उत्पादों के प्रोत्साहन में सहभागी बनें। इस अवसर पर माननीय एमएलसी श्रीचंद शर्मा, माननीय जिलाध्यक्ष भाजपा अभिषेक शर्मा, महानगर अध्यक्ष भाजपा महेश चौहान, सांसद प्रतिनिधि संजय बाली, अन्य जनप्रतिनिधिगण, मुख्य विकास अधिकारी डॉ. शिवकांत द्विवेदी, अपर जिलाधिकारी (भू.अ.) राजेश कुमार सिंह, उपायुक्त उद्योग अनिल कुमार तथा अन्य जिला स्तरीय अधिकारीगण उपस्थित रहे।

जप-तप से सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं - स्वामी पंचमानंद जी महाराज

गीधराज सुनि आरत बानी। रघुकुलतिलक नारि पहिचानी''-'' हे खग मृग हे मधुकर श्रेनी तुम देखी सीता मृग नैनी''

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। सेक्टर 82 स्थित पॉकेट 12 में आयोजित श्रीराम कथा के

आठवें दिन कथा व्यास महामंडलेश्वर स्वामी पंचमानंद महाराज ने कथा का प्रसंग सुनाते

हुए कहा कि भरत जी चित्रकूट में भगवान राम से मिलते हैं। भगवान राम उनको गले से लगा लेते हैं और पिता का वचन याद दिला कर वापस अयोध्या भेज देते हैं। आगे भगवान राम पंचवटी में निवास करते हैं जहां पर रावण की बहन सूर्पनखा पहुंचती है और विवाह का प्रस्ताव रखती है। बार बार मना करने पर भी नहीं मानती है तो लक्ष्मण जी उसके नाक कान काट लेते हैं। रावण दरबार में सुर्पणखा विलाप करती हुई पहुंचती हैं। रावण ने उसकी दशा देखकर पूछा कि तेरे नाक कान किसने काटे। सुर्पणखा ने कहा कि राम लक्ष्मण दशरथ के पुत्र हैं। राम के छोटे भाई लक्ष्मण ने नाक कान काटे है और उन्होंने खर दूषण और त्रिसरा का भी वध कर दिया। रावण सोचता हैं खर दूषण को मारने वाला निश्चित ही कोई अवतार है।'' तो मै जाइ बैर हठि करऊॅ। प्रभु सर प्रान तजे भव तरऊॅ''। रावण मारीचि के पास जाता हैं और राम से बदला लेने के लिए कपट मृग बनने को कहता हैं। मारीचि सोने का मृग बनकर पंचवटी से निकलता हैं तो सीता राम जी से उस स्वर्ण मृग की खाल लाने को कहती हैं। राम जी उसके पीछे जाते है और उस स्वर्ण मृग को एक बाण से मार देते हैं। मारीचि मरते समय हा लक्ष्मण हा लक्ष्मण की आवाज करता हैं। सीता जी ने राम को संकट में जानकर लक्ष्मण को उनकी सहायता में भेजती है। मौका देखकर लंकेश साधु का वेश रखकर सीता को जबरदस्ती सीता को रथ में बैठाकर आकाश मार्ग से जाता हैं।'' गीधराज सुनि आरत बानी। रघुकुलतिलक नारि पहिचानी''। जटायु रावण पर हमला कर देते हैं इसके बाद लंकेश जटायु के पंख तलवार से काट देता है।इधर राम लक्ष्मण पंचवटी पहुंचते हैं वहां पर सीता को न पाकर दुःखी होकर ढूंढने लगते हैं।'' हे खग मृग हे मधुकर श्रेनी तुम देखी सीता मृग नैनी''। रास्ते में घायल गिद्ध राज जटायु मिलते हैं वह सारा वृतांत बताते हैं और भगवान की गोद में अपने प्राण त्याग देते हैं। उसके बाद भगवान सबरी के आश्रम पहुंचते हैं जहां पर प्रेम भक्ति में सबरी के झूठे बेर खाते हैं। इस अवसर पर श्रीराम कथा आयोजन समिति के मीडिया प्रभारी देव मणि शुक्ल ने बताया कि श्रीराम कथा के नौवें दिन हनुमान जी राम जी की भेंट, सुग्रीव मित्रता, बाली वध, सीता खोज, लंका दहन, रावण वध और राम राज्याभिषेक आदि प्रसंगों का वर्णन किया जाएगा। इस मौके पर तमाम सेक्टरवासी भक्त गण मौजूद रहे।

समाजवादी नेता 'धरती पुत्र' श्रद्धेय मुलायम सिंह यादव जी की तीसरी पुण्य तिथि पर विनम्र श्रद्धांजलि सभा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। शुक्रवार उत्तर प्रदेश के ''नेताजी' के नाम से विख्यात, मुलायम सिंह यादव जी ने अपना

पूरा जीवन किसानों, गरीबों, पिछड़ों और समाज के वंचित वर्गों के अधिकारों की लड़ाई के लिए समर्पित कर दिया। उनकी सादगी, जमीन से जुड़ाव और संघर्ष की प्रेरणा आज भी लाखों लोगों को प्रेरित करती है।' कार्यक्रम में बोलते हुए पूर्व जिलाउपाध्यक्ष राम सेवक वर्मा जी कहा कि मुलायम सिंह यादव जी ने सदैव किसानों, गरीबों, पिछड़ों और वंचित वर्गों के अधिकारों की आवाज बुलंद की। उन्होंने राजनीति को जनसेवा का माध्यम माना और देश की राजनीति में समाजवादी विचारधारा को सशक्त आधार प्रदान किया।पूर्व उपाध्यक्ष राजेंद्र प्रताप ने कहा कि नेताजी की सादगी, संघर्ष और जनता से जुड़ाव आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत रहेगा। पार्टी के वरिष्ठ नेता राजेश चंद्र मो साहिल राहुल निर्मल उमा शंकर शुक्ला राम बहादुर पासवान डी डी कुशवाह आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए इस मौक़े पर भूपेंद्र यादव सुमित चौधरी पंकज पटेल संदीप यादव द्वारिका प्रसाद विक्रम यादव जितेंद्र शर्मा ऋषभ सेन आदि लोग उपस्थित रहे।

पूर्व मुख्यमंत्री और समाजवादी पार्टी के संस्थापक स्वर्गीय मुलायम सिंह यादव जी की तीसरी पुण्य तिथि के अवसर पर, उन्हें श्रद्धापूर्वक याद करने और उनके आदर्शों पर चलने का संकल्प लेने के लिए एक विशेष श्रद्धांजलि सभा का आयोजन पूर्व जिला पंचायत सदस्य चंद्रराज पटेल ने किया कार्यक्रम की अध्यक्षता जलीपा चौधरी ने की । इस अवसर पर बोलते हुए समाजवादी पार्टी के प्रदेश सचिव डॉ एस यू खान ने कहा कि-

स्वदेशी मेले में खरीददारों की भीड़, शाम को लोक गायन से कलाकारों ने दर्शकों का मन मोह लिया

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। उ0प्र0 इण्टरनेशनल ट्रेड

शो की तर्ज पर जनपद प्रयागराज में भारत स्काउट एण्ड गाइड इण्टर कालेज, ममफोर्डगंज, प्रयागराज में लगे स्वदेशी मेला प्रदर्शनी में आज दिनांक 11.10.2025 को प्रदर्शनी में स्थानीय विशिष्ट उत्पादों के स्टॉलों पर आगन्तुको की अत्यधिक भीड़ रही। कालीन उत्पाद केला प्रसंस्करण, ऑवला प्रसंस्करण उत्पाद, मसाला उत्पाद, हैण्डमेड उत्पादों आदि की अच्छी बिकी हुई जिससे स्टालधारकों में काफी उत्साह रहा। उद्घाटन के बाद से ही दर्शकों में स्वदेशी मेला प्रदर्शनी को लेकर उत्साह बना रहा । प्रदर्शनी में नित्य सायं 07:00 बजे से सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया जा रहा है जिसमें राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक स्तर के लोक कलाकारों द्वारा अपनी प्रस्तुति दी जा रही है । आज सायं 07:00 बजे श्रीमती रागिनी चन्द्रा एवं उनकी टीम द्वारा लोक गीत 'कजरी गायन ने दर्शकों का मन मोह लिया। कल दिनाक 12.10.2025 को सायं 07:00 बजे से श्री इन्द्रजीत पटेल एवं उनकी टीम द्वारा 'बिरहा गायन की प्रस्तुति की जायेगी।

अप्रेंटिस संबंधित सूचना

दिनांक 13 अक्टूबर 2025दिन सोमवार को प्रधानमंत्री राष्ट्रीय अप्रेंटिस मेंले का आयोजन राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान नैनी प्रयागराज में सुबह 10:00 से साय 3:00 तक होना सुनिश्चित हुआ है उक्त राष्ट्रीय अप्रेंटिस मेले में प्रयागराज जनपद तथा कुछ एनसीआर की निजी क्षेत्र की कंपनियां प्रतिभाग कर रही है जिसका विवरण निम्नवत है।

1 -- शिरडी साई इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड (ट्रेड- इलेक्ट्रीशियन, फिटर)मिर्जापुर रोड नैनी प्रयागराज

2 --त्रिवेणी इलेक्ट्रोप्लास्ट प्राइवेट लिमिटेड(फिटर इलेक्ट्रीशियन, इलेक्ट्रॉनिक, बेल्डर के ङमेल फीमेल) औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज

3-- अंबर ग्रुप औद्योगिक क्षेत्र गाजियाबाद उत्तर प्रदेश(मैकेनिकल, ऑटोमोबाइल ,इलेक्ट्रिकल ग्रुप के आईटीआई पास प्रशिक्षार्थी)

4--masu break pad limited Bahadurgarh Jhajjar Haryana(ITI pass out candidate electrical mechanical automobile group)

मेले में प्रतिभाग करने वाले प्रशिक्षार्थियों की आयु 18 से 28 वर्ष के मध्य होनी चाहिए। प्रशिक्षार्थी का NAPS portalपर रजिस्ट्रेशन होना चाहिए जो प्रशिक्षार्थी नैप्स पर रजिस्ट्रेशन नहीं कर पा रहे है वह मेले मे 13 अक्टूबर को रजिस्ट्रेशन काउंटर पर संस्थान के कर्मचारियों की मदद से रजिस्ट्रेशन करवा सकते है। प्रयागराज जनपद के कंपनियों का इस स्टाइपेंड रु9600 रहेगा ।एनसीआर की कंपनियों का स्टाइपेंड रु14000 रहेगा जिसमें कैंटीन बस ड्रेस की भी सुविधा रहेगी। समस्त प्रशिक्षार्थी अपना बायोडाटा शैक्षिक एवं टेक्निकल सर्टिफिकेट आधार कार्ड, पैन कार्ड, बैंक पासबुक की छाया प्रति वह मूल् प्रति प्रत्येक कंपनियों में साक्षात्कार के समय प्रस्तुत करना पड़ेगा। अधिक जानकारी के लिए अप्रेंटिस सेल कल्पना चावला भवन कमरा नंबर 17 राजकीय आईटीआई नैनी प्रयागराज से संपर्क कर सकते हैं।

मृतक हरिओम के परिवार को मुख्यमंत्री से मिलवाने ले गए विधायक मनोज पांडेय

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। सरकार के प्रतिनिधियों

से मुलाकात के बाद पीड़ित परिवार को प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मिलवाने के लिए पूर्व कैबिनेट मंत्री एवं ऊंचाहार विधायक मनोज कुमार पांडेय साथ में लेकर लखनऊ रवाना हो गये है। विधायक मनोज कुमार पांडे ने कहा कि हम सभी तथा पूरी सरकार पीड़ित परिवार के साथ खड़ी है। हमारी सरकार पीड़ित परिवार को हर संभव सहायता देने के लिए प्रतिबद्ध है। जो अपराध हुआ है उस पर सरकार व पुलिस प्रशासन की और से तेजी से कार्रवाई हुई है। 12 के करीब लोग गिरफ्तार हो चुके हैं।। एक व्यक्ति मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार हुआ। मैं मुख्यमंत्री से मिलाने के लिए आज पीड़ित परिवार को अपने साथ लेकर जा रहा हूं। जिससे पीड़ित परिवार मुख्यमंत्री को स्वयं अपनी व्यथा बता सके।

संघ के पद संचलन के मुख्य अतिथि होंगे स्वान्त रंजन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

के जिला संघ चालक जागेश्वर दयाल द्विवेदी ने बताया कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के शताब्दी वर्ष के अवसर पर हर जिले एवं हर बस्ती में कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं इसी कड़ी में रविवार को संघ का बौद्धिक एवं पद संचलन का कार्यक्रम अमरेशपुरी में आयोजित किया गया है। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राष्ट्रीय प्रचारक प्रमुख स्वात पर्यावरण स्वान्त रंजन होंगे अमरीश पुरी कॉलोनी के पार्क में शांत रंजन का बौद्धिक उद्बोधन होगा इसके बाद पक्ष पद संचलन का कार्यक्रम होगा पद संचलन लगभग ढाई किलोमीटर की दूरी तय करेगा पथ संचलन अमरीश पुरी कॉलोनी से प्रारंभ होकर पुलिस लाइन, राना नगर आदि क्षेत्र से होता हुआ अमरीश पुरी कॉलोनी के पार्क में संपन्न होगा। प्रेस वार्ता में प्रांतीय अभिलेख प्रमुख जगन्नाथ प्रसाद त्रिपाठी, सेवा भारती के डॉक्टर सुनील त्रिवेदी ,संजय अवस्थी, आशीष बाजपेई आदि स्वयंसेवक उपस्थित थेत

पति की दीर्घायु के लिए सुहागिनों ने रखा निर्जला व्रत

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। आज करवा चौथ की

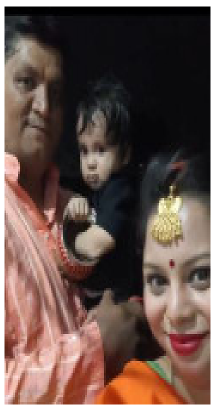

तिथि होने के फलस्वरूप पूरे शहर में काफी उत्सव का माहौल रहा। शहर के सभी इलाकों में सुबह से ही ग्रहणियों द्वारा उपवास रखा गया जो चंद्रोदय के साथ पूर्ण हुआ। करवा चौथ के दिन के लिए सुहागिनों ने काफी समय से तैयारी करना शुरू कर दिया था। पति के दीर्घायु होने के लिए सुबह से ही ग्रहणियों द्वारा उपवास रखा गया।दिन भर तरह-तरह के व्यंजन बनाए गए और शाम को पूजा स्थल पर प्रतिष्ठित किए गए चंद्रमा की पूजा अर्चना करने करवाचौथ व्रत कथा सुनने के बाद चंद्रोदय पर छत पर भगवान चंद्रमा की पूजा अर्चना की चलनी पर चंद्रमा एवं पति का दर्शन किया साथ ही पतो के हाथों से जल जल ग्रहण कर व्रत का पारण किया। इस अवसर पर छोटे-छोटे बच्चों द्वारा पटाखे छुड़ाए गए।

मौसम का विरोधाभासी व्यवहार चिंताजनक संकेत देता है

आज दुनिया में मौसम जिस तरह से चकमा दे रहा है और पारिस्थितिकी-तंत्र जैसे रूप बदल रहा है, उसे किस तरह से लिया जाए? एक तरफ तो ये वर्ष दुनिया के लिए गर्म रहा, वहीं अपने देश में सब कुछ सामान्य दिखाई दिया। इतना ही नहीं, मौसम के पैटर्न ने पारिस्थितिकी समझ को भी चकरा दिया। इस वर्ष कुछ देशों में गर्मी ने फिर वही हालात बनाए सामने आईं।वर्ल्ड वेदर एट्रिब्यूशन समूह के वैज्ञानिकों ने बताया कि वहां तापमान 3 डिग्री तक बढ़ गया, जिससे भारी मात्रा में बर्फ पिघली। इसका कारण मानवीय गतिविधियां तो हैं ही, यह भी देखा गया कि कई अन्य क्षेत्रों में तापमान गत वर्षों की प्रवृत्ति जैसा ही रहा। मई का महीना दुनिया भर में अब तक का सबसे गर्म महीना पाया गया। क्लाइमेट चेंज सर्विस की सबसे गर्म महीनों में शामिल रहे। भारत में फरवरी 2025, पिछले 125 वर्षों में सबसे गर्म रहा। परंतु मई और जून के महीने ला-नीना प्रभाव के कारण अपेक्षाकृत शीतल रहे। इस दौरान भारत और दुनिया भर में जनवरी का महीना सबसे गर्म साबित हुआ। इन सभी घटनाओं को देखकर चौंकना स्वाभाविक है। 2025 में भारत का मौसम अपेक्षाकृत

रखे, जैसे कि गत वर्षों में थे। और अन्य जगह सब कुछ सामान्य से नीचे स्तर का था। इसके पीछे कई कारण रहे हैं, विशेषकर उत्तरी गोलार्ध में पश्चिम-मध्य एशिया, पूर्वोत्तर रूस और पश्चिमी अंटार्कटिका में अत्यधिक गर्मी दर्ज की गई, जबकि हडसन खाड़ी से लेकर उत्तरी ऑस्ट्रेलिया और पूर्वी अंटार्कटिका तक अपेक्षाकृत ठंडक बनी रही। भारत भी इन असमान व्यवहार वाले क्षेत्रों में शामिल रहा। इस तरह का मौसम-व्यवहार कई बातों की ओर इशारा करता है। अब हमारे पास देश से जुड़ी भी कई असामान्य खबरें हैं। भारत के कई हिस्सों में मई के दौरान सामान्य से 20-40 प्रतिशत अधिक वर्षा हुई और तापमान 4 से 6 डिग्री तक गिर गया।वे शहर जो आमतौर पर अधिक तापमान के लिए जाने जाते हैं- जैसे दिल्ली, लखनऊ, पटना- वहां इस बार की गर्मियों में तापमान 35 डिग्री सेल्सियस से नीचे रहा। दुनिया में महत्वपूर्ण खबर यह रही कि ग्रीनलैंड और आइसलैंड में बर्फ पिघलने की घटनाएं रिपोर्ट में बताया गया कि मई में वैश्विक सतह तापमान 1850-1900 के औद्योगिक युग की तुलना में 1.4 डिग्री अधिक दर्ज किया गया। परंतु, भारत, अलास्का, दक्षिण अफ्रीका और पूर्वी एशिया जैसे क्षेत्रों में मई का तापमान सामान्य से नीचे रहा था। इस तरह का विरोधाभासी मौसम व्यवहार यह स्पष्ट करता है कि क्लाइमेट के सिस्टम में बड़ी गड़बड़ हो चुकी है। 2025 में सतह का औसत तापमान 15.79 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो 1991-2020 की तुलना में 0.5 डिग्री अधिक था। यह 2020-2024 की सबसे गर्म मई से केवल 0.12 डिग्री कम था। इससे स्पष्ट है कि वैश्विक तापमान में मामूली गिरावट तो है, परंतु मौसम का असामान्य व्यवहार बना हुआ है। यह वृद्धि मुख्यतः जीवाश्म ईंधनों के जलने से हुए उत्सर्जन का परिणाम है। रिपोर्ट में बताया गया कि पिछले 22 में से 21 महीने ऐसे रहे हैं, जिनमें वैश्विक तापमान 1.5 डिग्री सेल्सियस से अधिक रहा। इससे पहले मार्च, अप्रैल और फरवरी भी इतिहास के कम गर्म रहा। देश ने इस बार कोई गंभीर लू जैसी स्थिति नहीं झेली। अधिकतम तापमान लगभग 35 डिग्री के आसपास रहा। इसका एक प्रमुख कारण यह रहा कि समय-समय पर मौसम ने करवट बदली और बारिश हुई। इस वर्ष पश्चिमी विक्षोभ ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। लेकिन सबसे असामान्य बात यह रही कि इस बार मानसून समय से पहले आ गया। सामान्यतः मानसून जुलाई तक सक्रिय होता है, लेकिन इस बार समुद्री सतह के तापमान के बढ़ने के कारण यह जल्दी सक्रिय हो गया। समुद्र का लगातार ऊष्ण रहना भी अब नियमित हो चुका है। इसका मतलब है कि अब साल भर किसी न किसी रूप में बारिश देखने को मिल सकती है। जहां पहले कभी बारिश नहीं होती थी, जैसे राजस्थान जैसे शुष्क क्षेत्रों में भी वर्षा संभावित है, और जहां अत्यधिक वर्षा होती थी- जैसे पूर्वोत्तर भारत, वहां विपरीत प्रभाव दिख सकता है। (ये लेखक के अपने विचार हैं)

गणितीय ज्ञान की कमी के कारण हम पर कौन हावी होगा?

क्या आपको याद है जब पूरी प्राथमिक कक्षा एक सुर में 'एक एकम एक, एक दूनी दो' से लेकर '16 एकम 16, 16 दूनी 32' तक दोहराती थी। वास्तव में उस वक्त वो 1 से 16 तक के पहाड़े याद कर रही होती थी। जब तक हम 1 से 16 तक के पहाड़े याद करने में पारंगत नहीं हो जाते थे, उन दिनों में हमारे गणित के टीचर ब्लैक बोर्ड पर कुछ भी नहीं लिखते परेशानी होती है। तो फिर हमारी खरीद के भुगतान, वेतन, ओवरटाइम की गणना करते वक्त हमारे जीवन पर कौन हावी होने जा रहा है? बेशक, एआई? यह कहकर इसे खारिज मत कर देना कि एआई को हमारे रोजमर्रा के जीवन में दखल देने में अभी बहुत समय लगेगा। याद करो कि कैसे 1835 में घोड़ा गाड़ी मालिकों ने 1830 में यूके में

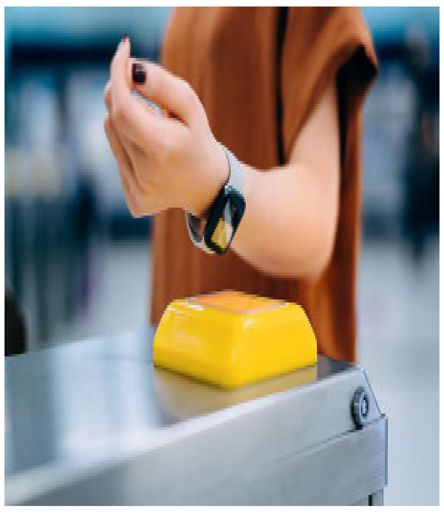

थे। और इसका नतीजा आज हम देख रहे हैं। उस बुनियाद के बल पर ही हम यह गणना तत्काल कर लेते हैं कि राशन वाले को कितने पैसे देने हैं और यदि किसी वस्तु पर 23 फीसदी छूट है तो हम कितनी बचत कर लेंगे। फिर कैलकुलेटर आए। धीरे-धीरे बच्चे हमसे सवाल करने लगे कि पहाड़े क्यों पढ़ें? जोर-जोर से पहाड़ों का दोहराना खत्म हो गया। फिर हाल ही चैटबॉट आया, जो यदि आप अपनी मातृभाषा में भी कुछ बड़बड़ाओ, तो भी आपकी पसंद की भाषा में वाक्य बना देगा। अब वो दिन दूर नहीं, जब अगली पीढ़ी सवाल करेगी कि वे भाषा भी क्यों पढ़ें। अब सीधे जुलाई 2025 पर आते हैं। ये हैरतअंगेज आंकड़ा है कि नवीं कक्षा के 63इ विद्यार्थी अंकों का सामान्य पैटर्न पहचानने में भी विफल रहे हैं। उन्हें भिन्न व पूर्णांक जैसे सामान्य अंकों की समझ नहीं है। भारत में छठी कक्षा के स्कूली छात्र पुस्तकों के मुख्य पाठों को ही नहीं समझ पाते। पिछले साल दिसंबर में शिक्षा मंत्रालय की ओर से कराए 'परख' राष्ट्रीय सर्वे में ये निष्कर्ष निकला है, जिसे पूर्व में राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण कहते थे। सर्वे में 36 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के 781 जिलों में स्थित 74,229 स्कूलों के तीसरी, छठी और नवीं कक्षा के 21,15,022 विद्यार्थियों का आकलन किया गया। इसमें पाया गया कि छठी कक्षा के 54फीसदी विद्यार्थी पूर्णांकों की तुलना करने और बड़ी संख्याओं को पढ़ने में असफल रहे। यह देश की शिक्षा प्रणाली में सीखने की कमजोरी को दर्शाता है। सर्वे में कहा गया कि छात्रों को 7 के गुणज, 3 की घात, अभाज्य संख्याएं पहचानने और रोजमर्रा की जरूरतों के लिए प्रतिशत व भिन्न की गणना करने में भी लिवरपूल से मैनचेस्टर तक शुरू हुई दुनिया की पहली रेल के प्रभाव को खारिज किया था। उन्होंने कहा कि रेल यातायात कभी भी उनके व्यवसाय पर भारी नहीं पड़ेगा। और रेल ने ना सिर्फ उनके व्यवसाय को खत्म कर दिया, बल्कि कुछ वर्षों में ही पूरे विश्व में औद्योगिक क्रांति को भी गति दी। 'सेपियन्स' के लेखक युवाल नोआ हरारी से जब मीडिया ने पूछा कि क्या एआई के युग में मानव की क्षमता कम हो जाएगी? उन्होंने जवाब दिया कि 'मुझे लगता है, जिन क्षेत्रों में हम सबसे पहले बड़े बदलाव देखेंगे, उनमें वि?त्तीय प्रणाली शामिल है।' क्योंकि वित्त शुद्ध रूप से एक सूचना संबंधी क्षेत्र है। सेल्फ ड्राइविंग वाहन आधुनिक जीवन पर अभी बहुत असर नहीं छोड़ पाए हैं, क्योंकि वे अभी पैदल चलने वालों की आदतें (बुरी आदतें) और गड्ढों के बारे में सीख रहे हैं। पर वित्त के मामले में ये 'इंफॉर्मेशन इन' और 'इंफॉर्मेशन आउट' का मामला ही है। इसीलिए इस क्षेत्र पर नियंत्रण कर लेना एआई के लिए बहुत आसान होगा। हरारी का पूर्वानुमान है कि एक बार एआई वित्त क्षेत्र में हावी हुआ तो यह उन उपकरणों में निवेश शुरू कर देगा, गणितीय जटिलताओं के कारण मानव मस्तिष्क जिनसे निपटने में अक्षम है। अब ऊपर बताए पहाड़ों को देखें, जिन्हें दोहराना बंद करने के कारण हमारे बच्चे अंकों के साथ मजबूत रिश्ता नहीं बना पाए। मोबाइल ने नंबर्स याद रखने की हमारी मेमोरी छीन ली। कोई भी ये मानने से इनकार नहीं कर सकता कि एआई गणना कर सकने वाला एक एजेंट तो है, लेकिन ऐसा औजार नहीं जिसका नियंत्रण हमारे हाथों में हो।

एक व्यस्त कर्मचारी की गतिविधियां परिणाम क्यों नहीं दे पाती?

आज से सात दिन बाद, यानी 15 अक्टूबर से 15 दिसंबर तक शुभमन गिल 19,066 एयरोनॉटिकल माइल्स की यात्रा करेंगे। इसमें वह ऑस्ट्रेलिया में तीन वनडे और पांच टी-20 अंतरराष्ट्रीय मैच और इसके बाद दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ घरेलू सीरीज में दो टेस्ट, तीन वनडे और पांच टी-20 अंतरराष्ट्रीय मैच खेलेंगे। इस दौरान अन्य खिलाड़ी भी इतनी ही यात्रा करेंगे, लेकिन गिल पर दबाव अधिक होगा। क्योंकि वह टेस्ट मैच के कप्तान और सूर्य कुमार यादव की कप्तानी वाली टी-20 टीम के उप-कप्तान हैं। हाल ही में उन्हें रोहित शर्मा की जगह वनडे टीम का कप्तान भी बनाया गया है। देश का हर क्रिकेट प्रेमी इस स्पेशलिस्ट बल्लेबाज से जीत और चमत्कार की उम्मीद करता है। यात्रा के दौरान बातचीत में एक सह-यात्री ने क्रिकेट का जिक्र तब किया, जब एक अन्य ने यह जोड़ा कि 'क्यों आज के शिक्षकों की अच्छी टीचिंग भी स्कूलों में बेहतर परिणाम नहीं दे रही?' और गिल की नई भूमिका के बारे में सुनकर उसने स्वयं ही जवाब दिया। उसने कहा कि हमारे समय में शिक्षकों को एक जिम्मेदारी दी जाती थी कि बच्चों को पहले एक जिम्मेदार बेटा/बेटी, फिर एक अच्छा नागरिक बनाएं और बाद में समय बचे तो कुछ शैक्षिक ज्ञान दें। आज शिक्षक की स्थिति अलग है। स्कूल प्रबंधन उन्हें दस मिनट भी खाली नहीं देख सकता, जो वास्तव में अगली कक्षा से पहले शिक्षक का सोचने का समय होता है। वे तुरंत उन्हें प्रशासनिक या गैर-शैक्षणिक कार्य दे देते हैं। इससे ये युवा शिक्षक ऐसी कठपुतली बन जाते हैं, जो बहुत-से ईमेल, प्रोजेक्ट्स और नए दाखिलों जैसी अत्याधिक मल्टीटास्किंग में उलझे होते हैं। यह ठीक वही बात है, जिसके बारे में कैल न्यूपोर्ट ने अपनी नई किताब 'डीप वर्क : रूल्स फॉर फोकस्ड सक्सेस इन अ डिस्ट्रैक्टेड वर्ल्ड' में बताया है। वे बताते हैं कि कैसे आज के पेशेवर गुणवत्ता से ज्यादा मात्रा को महत्व देने लगे हैं और इसने कैसे उन्हें अत्यधिक मल्टीटास्किंग वाले पेशेवरों में बदल दिया है। न्यूपोर्ट का कहना है कि 'यह उन्हें ऐसा 'डीप वर्क' करने से रोकता है, जो कि सभी भटकावों से मुक्त एक केंद्रित कार्य होता है।' न्यूपोर्ट अपने तर्कों को मजबूती देने के लिए साइकोलॉजी और न्यूरोसाइंस के सिद्धांतों का इस्तेमाल करते हैं।

वे बताते हैं कि किसी व्यक्ति की ज्ञान संबंधी क्षमताओं को कैसे बेहतर किया जाए और नियोक्ताओं को कैसे कर्मचारियों को प्रोत्साहित करना चाहिए कि वे प्रोजेक्ट्स पूरे करने के लिए शॉर्टकट ना अपनाएं। वे दावा करते हैं कि कॉर्पोरेट दौड़ से निकलने का सबसे अच्छा तरीका है कि तकनीक व सोशल मीडिया से ब्रेक लिया जाए। आत्मनिरीक्षण के लिए एकांत समय का उपयोग करें। न्यूपोर्ट कार्य पूरा करने के लिए गैर-तकनीकी व्यक्ति की धारणा पर जोर देते हैं, जिसमें कार्य उत्पादक हो और कुशलतापूर्वक किया जाए। इसका अर्थ है कि आज के पेशेवरों को हर समय खुद को व्यस्त दिखाने के बजाय सफलता के लिए अपनी प्राथमिकताओं को व्यवस्थित करना चाहिए। फिर से गिल के उदाहरण को देखें तो महज 26 की उम्र में वे 16 शीर्ष ब्रांडों से जुड़े हैं। गिल जानते हैं ये ब्रांड उनके साथ तभी रहेंगे, जब वे लगातार जीत हासिल करेंगे- एक फोकस्ड सक्सेस, जो क्रिकेट प्रेमियों और बीसीसीआई चयनकर्ताओं को खुश रखने के लिए जरूरी है। वे जानते हैं कि सिर्फ अच्छा खेलना ही उनके करियर और नेतृत्व को आगे नहीं बढ़ाएगा।, उन्हें डीप फोकस की जरूरत है, जो जीत के साथ प्रभाव पैदा कर सके। हम न शिक्षक हैं और ना क्रिकेटर। हम इस हाइपर कनेक्टेड दुनिया में सिर्फ कर्मचारी हैं, जहां हर तरफ भटकाव हैं।

अंतहीन ईमेल, एक के बाद एक बैठकें और लगातार नोटिफिकेशन्स। अपना दैनिक समय तय करें, शायद आधा दिन- जिसमें परिणाम देने वाला फोकस्ड कार्य करें। आपको खुद से कहना चाहिए कि 'अगर मैं आज शाम तक इसे हासिल कर लूं, तो मैं खुद को सफल मानूंगा।' ऐसी सोच वाकई में दुष्कर होती है, क्योंकि इसमें अनुशासन चाहिए। लेकिन आपको विचलित होने के बजाय रास्ते पर बनाए रखती है। फंडा यह है कि व्यस्तता और उत्पादकता समान नहीं है। सफलता उत्पादकता से ही मिलती है, व्यस्तता से नहीं। व्यस्तता महज दिखाएगी कि आप व्यस्त हैं, लेकिन प्रोडक्टिव नहीं हैं। एन. रघुरामन

जब मशीनें हमें हराने की कोशिश करने लगें, तब क्या करें?

एक टीवी शो में सपना नाम से एक ब्यूटी पार्लर है, उसमें सपना का किरदार निभाते हुए काल्पनिक मसाज करने वाले कैरेक्टर के हिसाब कुछ होटल भी 'एस्केप' खरीदने के लिए मोलभाव कर रहे हैं। आप ताज्जुब कर रहे हैं कि क्या ये डीप फेक है? कैसे ये रोबोट पेशेवर स्पा आधे समय में ये अधिक कसरत के कारण शरीर के पिछले हिस्से की मांसपेशियों में होने वाला दर्द दूर करेगी। पारंपरिक व एस्केप संचालित

से पटकथा लिखने वाले लेखक को निकट भविष्य में थोड़ी दुविधा हो सकती है। क्योंकि लेखक के लिए आसान था कि वह हर शो में कई बार एक ही लाइन को दोहराते। महिलाओं के कपड़े पहने उस पुरुष एक्टर को याद करें, जो कहता रहता है कि 'पहले उसके कपड़े उतारते हैं, और फिर तेल लगाते हैं।' उसके कम से कम 50फीसदी पुराने डायलॉग अब बदलने पड़ेंगे। अब वह अपने कथन की शुरुआत कर सकता है कि 'पहले उसके कपड़े उतारते हैं,' और फिर संभवतः वह कहेगा कि 'फिर उसे पार्लर के कपड़े पहनाते हैं...।' क्या आप भौहें तानकर मुझसे पूछ रहे हैं कि कोई कपड़ों के ऊपर से तेल कैसे लगा सकता है? तो भविष्य के स्पा में आपका स्वागत है। भविष्य के पांच सितारा स्पा कोई तेल नहीं लगाएंगे। जी, हां। भविष्य के स्पा में आपके बाल चिपचिपे नहीं होंगे। आपको तेल और लोशन को धोकर साफ नहीं करना पड़ेगा। आपको किसी को कोई टिप भी नहीं देना पड़ेगा। क्योंकि यह 'एस्केप' द्वारा संचालित मसाज है। यह नए दौर की एक मसाज टेबल है, जो एआई आधारित मशीनों से संचालित होती है। फोर सीजन्स, डब्ल्यू होटल्स, रिट्ज कार्लटन जैसी बड़ी होटल श्रृंखलाएं इसे पहले ही शुरू कर चुकी हैं और इसी हफ्ते मैंने सुना कि भारत के मसाज थेरेपिस्ट को मात देंगे या इस बात पर चिंतित हैं कि मानवीय हाथों का स्थान मशीनी हाथ ले रहे हैं, तो मुझे यह स्पष्ट करने दें। हाईटेक रिक्लाइनर कुर्सियों की उन सभी तस्वीरों को भूल जाइए, जो आपने मॉल्स या एयरपोर्ट के लाउन्ज में देखी हैं। यह सपना के पार्लर की भांति ही एक औपचारिक उपचार है और यहां पर भी एक पारंपरिक किन्तु अत्याधुनिक टेबल होगी। सिर्फ सपना यानी कोई थेरेपिस्ट नहीं होगा, लेकिन विशाल सफेद बांहें होंगी, जिसके मोटे पंजे आपकी पीठ दबाने को लिए तैयार होंगे। ये कैसे काम करता है? ग्राहक को मसाज शुरू कराने के लिए इस बड़ी मसाज टेबल पर उल्टे मुंह लेटना होता है, जहां वह पारंपरिक फेस पिलो के भीतर से आईपैड को देखता है। ये मशीन आपको नाम से पुकारेगी और बताएगी कि कितनी मिनटों के लिए आपने सुविधा बुक की है।

जैसे ही आपने बटन दबाया, यह आपसे दबाव समायोजित करने के बारे में पूछेगी और संगीत शुरू कर देगी। यदि आप असमंजस में है तो जैसे सपना हर सप्ताह नई-नई मसाज के बारे में बताती है, ये भी आपको सुझाव देगी। जैसे यदि आप 'एस्केप' मसाज का सबसे अच्छा अनुभव चाहते हैं तो 'इमर्स मोड' को चुनें। पहले मसाजों में प्रमुख अंतर ये है कि इस मसाज में ग्राहक को पूरे समय उल्टा मुंह लेटना होता है। अंत में यह आपसे उसके प्रदर्शन की रेटिंग देने और अपना सामान लेने के लिए कहती है, ताकि दूसरे ग्राहक के लिए जगह खाली हो। आपको यह कैसा लगा? यूजर्स बताते हैं कि यह किंक्स (शरीर के घुमाव और झुकाव वाली जगह), हैमस्ट्रिंग्स और दर्द वाली जगहों के लिए बहुत बेहतर है।

लेकिन उन सुगंधित क्रीम के बिना यह मसाज शरीर की सभी इंद्रियों को संतुष्ट नहीं करती है। जब यूजर्स कहते हैं कि यह पैरों की मसाज के लिए सही नहीं है, तो मेरा चेहरा लटक जाता है, क्योंकि यही मसाज मुझे सबसे ज्यादा पसंद है। और जब मैंने सुना कि ये रोबोट आईटी पेशेवरों को सबसे अच्छी लगने वाली गर्दन और सिर की मसाज नहीं कर सकते, तो मेरी इच्छा हुई कि इस मशीन को 5 में से 1 अंक की रेटिंग दूं। फंडा यह है कि यह एक ऐसा युग है, जिसमें मशीनें मानवों पर हावी होने की कोशिश करेंगी। लेकिन यही ऐसा समय भी है, जब वह सर्वाधिक विफल भी होंगी। इसलिए उनकी कमजोरियों को याद कर लीजिए और खुद को उत्कृष्ट बना लीजिए, ताकि भविष्य में मशीनों को हराया जा सके।

बारिश अब किसी एक ही मौसम तक सीमित क्यों नहीं रह गई है?

अक्टूबर की शुरुआत हो चुकी है, लेकिन बारिश का दौर अभी भी जारी है। दो घटनाएं प्रमुख रूप से सामने आई हैं। कोनों तक अपने प्रभाव की नई कहानी दर्ज कर रहा है। अक्टूबर में वर्षा होने का अर्थ स्पष्ट है- समुद्र अभी शांत नहीं इस बात को पूरी तरह समझ नहीं पाए हैं और न ही समझने का प्रयास कर रहे हैं कि इन घटनाओं के पीछे वास्तविक

नेपाल में लगातार हो रही वर्षा ने बिहार की स्थिति एक बार फिर गंभीर कर दी है। कोसी नदी इस कदर उफान पर है कि कई गांवों को लील जाने को तत्पर दिखाई देती है। अक्टूबर का महीना सामान्यतः शांत रहता है। मानसून प्रायः सितम्बर के मध्य या अंत तक अपनी अंतिम वर्षा देकर विदा ले लेता है। किंतु इस बार ऐसा नहीं हुआ। उत्तराखंड में भी इस बार अक्टूबर को लेकर यही अनुमान लगाया जा रहा है कि वर्षा का दौर अभी थमेगा नहीं। वहीं दूसरी ओर जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश सहित देश के कई अन्य राज्यों की स्थिति भी ऐसी ही है। इस बार के मानसून में अगर सबसे पहले किसी क्षेत्र ने प्रतिकूल प्रभाव झेला, तो वह उत्तराखंड, जम्मू-कश्मीर और हिमाचल रहा है। भारी तबाही, जान-माल की क्षति और विनाशकारी घटनाओं की खबरें लगातार आती रहीं। पहले लोग आसमान की ओर इस उम्मीद से देखा करते थे कि मानसून आएगा, खेत लहलहाएंगे, धरती पर हरियाली छा जाएगी और मिट्टी की सौंधी खुशबू नए मौसम के आगमन का संकेत देगी। लेकिन आज स्थिति उलट है- अब लोग आसमान की ओर इस चिंता से देखते हैं कि बरसात कब थमेगी और कब बादल अपने प्रवाह को रोकेंगे। मगर ऐसा होता दिखाई नहीं दे रहा। इस वर्ष का मानसून पहाड़ों से लेकर देश के अन्य हुए हैं। सभी जानते हैं कि समुद्र अपनी वाष्पोत्सर्जित हवाओं को भेजकर ही पहाड़ों को तर करते हैं, और वही पानी नदियों के रूप में हम सबके बीच बहता है। पहले यह प्रक्रिया अप्रैल से लेकर जुलाई-अगस्त तक सीमित रहती थी, परंतु अब यह क्रम लम्बा खिंच गया है। आज स्थिति यह है कि यह समस्या केवल हमारे देश तक सीमित नहीं रही, बल्कि पूरी दुनिया में भारी वर्षा और अतिवृष्टि जैसी घटनाएं बढ़ती जा रही हैं।

धरती के तापमान पर अभी तक कोई नियंत्रण नहीं हो पाया है। औसतन बढ़ते तापमान के कारण समुद्रों में निरंतर हलचल बनी हुई है, और इसी कारण वर्षा का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा। एक ओर पहाड़ अतिवृष्टि से आहत हैं, तो दूसरी ओर समुद्र चक्रवातों के नए रूप में लोगों को प्रभावित कर रहे हैं। हाल ही में रागो जैसे चक्रवातों ने फिलीपींस, चीन, मलेशिया और अन्य देशों को भी प्रभावित किया। वहीं दूसरी तरफ, पहाड़ों में हो रही आपदाएं देशभर में सुर्खियां बटोर रही हैं। सबसे चिंताजनक बात यह है कि अक्टूबर भी ऐसे ही संकेत दे रहा है, मानो मौसम और वर्षा ने यह ठान लिया हो कि उन्हें बरसना ही है- प्रकृति के प्रति मनुष्य के व्यवहार को सबक सिखाना ही है। अब तक हम कारण क्या हैं। सच्चाई यह है कि हर व्यक्ति, हर राज्य और हर देश कहीं न कहीं इस स्थिति के लिए दोषी है। हमने विकास के साथ-साथ विलासिता को इतना बढ़ा लिया कि धरती के संसाधनों का अत्याधिक दोहन होने लगा। विकास की आवश्यकता से इनकार नहीं किया जा सकता। परंतु समस्या यह है कि हमने विकास की सीमाओं को लांघते हुए विलासिता को ही जीवन का पर्याय बना लिया। गांव और शहर दोनों स्तरों पर हमने अपने जीवन को सुविधाजनक बनाने के नाम पर धरती को गर्म करने में बड़ा योगदान दिया है। यदि हम अपने फुटप्रिंट पर नजर डालें और उसकी तुलना चार दशक पहले से करें, तो साफ दिखेगा कि हमारी उपभोग की आदतें कई गुना बढ़ चुकी हैं। शहरों की स्थिति तो गंभीर है- वे आज इस हद तक आरामदेह जीवन के गुलाम हो चुके हैं कि उनके लिए जीवन का अर्थ केवल कारों, गैजेट्स और सुविधाओं तक सीमित हो गया है। इस तरह की विलासिता प्रकृति के पूर्णतः विपरीत है। अगर यह बारिश अक्टूबर के बाद भी जारी रही, तो भी आश्चर्य नहीं होगा, क्योंकि हमने पृथ्वी का तापमान इतना बढ़ा दिया है कि समुद्रों को सांस लेने का अवसर तक नहीं मिल पा रहा। (ये लेखक के निजी विचार हैं) डॉ. अनिल जोशी

भारत अब 'ग्लोबल साउथ' के नेतृत्व की ओर बढ़ रहा है

(पलकी शर्मा) प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हाल ही घाना, त्रिनिदाद एंड टोबेगो, अर्जेंटीना, ब्राजील और नामीबिया की आठ दिनों की उल्लेखनीय यात्रा पूरी की। यह सिर्फ कूटनीतिक मैराथन ही नहीं थी, बल्कि भारत के इरादों की स्पष्ट घोषणा भी थी। वैश्विक बदलावों और महाशक्तियों की प्रतिस्पर्धा के इस युग में भारत ग्लोबल साउथ के नेतृत्व की ओर बढ़ रहा है। कई द्विपक्षीय बैठकें, ब्रिक्स सम्मेलन में सहभागिता और चार राष्ट्रीय सम्मान- मोदी की यह यात्रा ?कई मायनों में प्रभावी रही है। लेकिन इसमें एक और बड़ी कहानी निहित है। यह रणनीतिक महत्वकांक्षाओं, भू-राजनीतिक संदेशों और वैश्विक मंच पर भारत की भूमिका का कथानक है। 1. एक ऐसी दुनिया में जिसमें अकसर आतंकवाद के पीड़ितों और प्रायोजकों में भेद नहीं किया जाता, मोदी ने स्पष्ट संदेश दिया। बिना किसी का नाम लिए उन्होंने आतंकवाद पर राजनीति नहीं करने पर जोर दिया। यह पाकिस्तान पर परोक्ष किंतु अचूक निशाना था। उन्होंने एक बार नहीं, बल्कि हर सार्वजनिक संबोधन में इसे बार-बार दोहराया। यह ऑपरेशन सिंदूर के बाद मोदी की यह दूसरी बड़ी विदेश यात्रा भी थी, जिसने आतंकवाद के खिलाफ समर्थन जुटाने के लिए भारत को अंतरराष्ट्रीय मंच प्रदान किया। 2. भारत लीथियम, रेयर अर्थ और तांबे जैसे महत्वपूर्ण खनिजों को लेकर चीन पर अत्यधिक निर्भर रहा है। ऐसे में जबकि चीन व्यापार को हथियार के तौर पर इस्तेमाल कर रहा है, यह निर्भरता कम करना जरूरी है। यहीं पर घाना और नामीबिया हमारे लिए जरूरी हो जाते हैं। घाना में हीरा, मैंगनीज और लीथियम के भंडार हैं। नामीबिया में यूरेनियम, तांबा और सोना हैं। दोनों ही देशों में मोदी ने बड़े सहयोग की बात कही है, खासतौर पर हीरे के क्षेत्र में। यह ऐसी नई आपूर्ति श्रृंखला रणनीति की ओर बढ़ाया गया कदम है, जिसमें खनिज सुरक्षा भी है और जो चीन पर हमारी निर्भरता भी कम करती है। 3. इस दौरे का एक और महत्वपूर्ण उद्देश्य विकासशील देशों में भारत के नेतृत्व को मजबूत करना था। अफ्रीका, एशिया और लैटिन अमेरिका में मौजूद इन देशों का एक साझा औपनिवेशिक अतीत है और अकसर इनकी गिनती आर्थिक विषमता और वैश्विक स्तर पर कम प्रतिनिधित्व वाले देशों में होती है। मोदी ने इसी साझा इतिहास की ओर संकेत करते हुए वैश्विक संस्थानों में सुधार पर जोर दिया। उन्होंने सिर्फ भू-राजनीतिक ही नहीं, बल्कि सभ्यतागत सहानुभूति के आधार पर भी एकजुटता की बात कही। स्वयं अपने एक औपनिवेशिक इतिहास के कारण भारत यह बहुत अच्छी तरह से कर सकता है। 4. ब्रिक्स में भारत की भूमिका को अकसर सावधानी के चश्मे से देखा जाता है। चीन और रूस जहां वैश्विक व्यवस्था में पूरी तरह से उलटफेर चाहते हैं, वहीं भारत अंदरूनी सुधारों की वकालत करता है। इस समिट में मोदी सिर्फ इसलिए ही प्रभावी नहीं रहे, क्योंकि वहां पुतिन और शी जिनपिंग गैर-मौजूद थे, बल्कि इसलिए कि उन्होंने कुशल स्टेट्समैन की भूमिका निभाई।

पीरियड्स में दफ्तर से एक दिन की छुट्टी,कर्नाटक में मेंस्ट्रुअल लीव पालिसी मंजूर,सरकारी, प्राइवेट ऑफिसेज में लागू

नयी दिल्ली। गुरुवार को कर्नाटक सरकार ने पीरियड लीव पॉलिसी 2025 अप्रूव कर दी है। इससे सरकारी दफ्तर, प्राइवेट कंपनीज और इंडस्ट्रियल सेक्टर्स

में काम करने वाली महिलाओं को हर महीने 1 पेड मेंस्ट्रुअल लीव यानी सालभर में 12 छुट्टियां मिलेंगी। चीफ मिनिस्टर सिद्धारम्मैय्या की कैबिनेट मीटिंग में इस पॉलिसी पर चर्चा की गई थी। कर्नाटक के लेबर मिनिस्टर संतोष लाड ने कहा, 'विभाग पिछले एक साल से इसपर काम कर रहा था। इसे लेकर कई लोगों ने अपने आपत्ति भी दर्ज कराई। हमने अलग-अलग विभागों से भी बात की। महिलाएं बहुत स्ट्रेस में होती हैं, खासतौर पर वो जो दिन में 10 से 12 घंटे तक काम करती हैं। इसलिए हम थोड़ा प्रगतिशील होते हुए एक दिन की छुट्टी उन्हें देना चाहते थे। अब उनके पास महीने में एक दिन छुट्टी लेने की छूट होगी। हम उम्मीद करते हैं कि इसका गलत फायदा नहीं उठाया जाएगा। अगर कुछ जरूरत लगी तो आने वाले समय में हम और नियम इसमें जोड़ेंगे।' लेबर डिपार्टमेंट के अनुसार राज्य में करीब 60 लाख कामकाजी महिलाएं हैं। इनमें से 25 से 30 लाख महिलाएं कॉर्पोरेट सेक्टर में काम करती हैं। विभाग सभी एम्प्लॉयर्स के साथ एक बार मीटिंग करके उन्हें इस नए नियम को लेकर अवेयर करेगा। पॉलिसी के अप्रूव होने से पहले 18 सदस्यों की एक कमेटी ने कुछ सुझाव दिए थे।

इसमें पीरियड्स के दौरान महिलाओं के शरीर में होने वाले बदलाव, उनकी मुश्किलें और ऐसे समय में उनके शरीर को आराम की जरूरत का उल्लेख किया गया था। इस कमेटी को क्राइस्ट यूनिवर्सिटी की लॉ डिपार्टमेंट की चीफ सपना एस लीड कर रही थीं। इसके बाद सरकार ने इसके फायदे-नुकसान को जाना। अलग-अलग विभागों और ऑर्गेनाइजेशन्स से इसपर सुझाव लिया। महिला प्रधान उद्योग जैसे कपड़ा उद्योग पर पड़ने वाले असर को भी समझा। इसी के साथ कर्नाटक देश के उन कुछ राज्यों का हिस्सा बन गया है जहां महिलाओं को पीरियड लीव दी जाती है। बिहार में महिलाओं को हर महीने दो पीरियड लीव मिलती हैं। हाल ही में ओडिशा में सरकारी विभागों में काम करने वाली महिलाओं के लिए 1 पीरियड लीव देने की घोषणा की गई थी।

सीएजी रिपोर्ट में खुलासा- तमिलनाडु में दवा जांच में अनदेखी,2024 में 1 लाख सैंपल में केवल 66 हजार जांचे गए

नयी दिल्ली। तमिलनाडु में बने कफ सिरप कोल्ड्रिफ; के कारण मध्य प्रदेश-राजस्थान

में बच्चों की मौत का मामला चर्चा में है। अब भारत के महालेखा परीक्षक (सीएजी) की तमिलनाडु के पब्लिक हेल्थ इंफ्रास्ट्रचर एंड मैनेजमेंट ऑफ हेल्थ सर्विस से जुड़ी एक रिपोर्ट सामने आई है। सीएजी ने 10 दिसंबर 2024 को तमिलनाडु की पब्लिक हेल्थ इंफ्रास्ट्रचर एंड मैनेजमेंट ऑफ हेल्थ सर्विस पर अपनी परफॉर्मेंस ऑडिट (रिपोर्ट) में बताया था कि राज्य में ड्रग इंस्पेक्शन (टेस्टिंग) में कमी देखी गई थी। साथ ही ड्रग्स (दवा) सैंपल कलेक्शन में भी कमी की गई थी। इधर, शुक्रवार को सुप्रीम कोर्ट ने मध्य प्रदेश-राजस्थान में कफ सिरप से बच्चों की मौत मामले में सीबीआई या ज्यूडिशियल जांच की मांग खारिज कर दी।सीजीआई डी.वाई. चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली बेंच ने ब्रीफ सुनवाई के बाद इस खारिज किया। एमपी के छिंदवाड़ा, बैतूल और पांढुर्णा में जहरीले कफ सिरप 'कोल्ड्रिफ' के सेवन से अब तक 25 बच्चों की मौत हो चुकी है।

सिरप बनाने वाली श्रीसन फार्मास्युटिकल का मालिक रंगनाथन 9 अक्टूबर को चेन्नई से गिरफ्तार किया गया। उसेआज छिंदवाड़ा लाया जा रहा है। मामले में जांच एसआईटी कर रही है। 2016-17 में तमिलनाडु में कुल 1,00,800 टेस्टिंग का टारगेट था, लेकिन 34फीसदी कम यानी 66,331 टेस्ट ही किए गए। 2020-21 में ड्रग्स इंस्पेक्शन की कमी बढ़कर 38फीसदी हो गई, इस दौरान 1लाख 800 टेस्ट की जगह केवल 62,358 टेस्ट ही किए गए। 2016 से 2021 के पीरियड में सबसे ज्यादा 40इ टेस्ट की कमी 2019-20 में दर्ज की गई थी। ड्रग्स इंस्पेक्टरों ने दवा के सैंपल कलेक्ट करने में लापरवाही दिखाई, साल 2018-19 और 2020-21 में सैंपल कलेक्शन में 54फीसदी की कमी रही।

चीन से 4.5 जनरेशन का जे-10सीई फाइटर जेट खरीदेगा बांग्लादेश:18.5 हजार करोड़ रुपए में लेगा 20 विमान 10 साल में किस्तों में चुकाएगा कीमत

बीजिंग। ढाका की मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, बांग्लादेश सरकार चीन से 20 जे-10सीई फाइटर जेट खरीदने की योजना बना रही है। इस सौदे की कीमत करीब 2.2 अरब अमेरिकी डॉलर (लगभग रु18,500 करोड़) बताई जा रही है। रिपोर्ट के मुताबिक, यह समझौता प्रशिक्षण, रखरखाव और अन्य तकनीकी सेवाओं को भी शामिल करेगा। भुगतान 10 वित्तीय वर्षों में, यानी 2036 तक किस्तों में किया जाएगा। हालांकि, सरकार की ओर से इस सौदे पर अभी कोई आधिकारिक घोषणा नहीं की गई है। वित्तीय सलाहकार सालेहुद्दीन अहमद ने पत्रकारों के सवाल पर कहा, 'मैं इस विषय पर कोई टिप्पणी नहीं करूंगा। सिर्फ इसलिए कि मुझे कुछ पता है, इसका मतलब यह नहीं कि मैं सब कुछ बता दूं।' सूत्रों के अनुसार, बांग्लादेश सरकार ने अक्टूबर 2025 में चीन के जे-10सीई मल्टीरोल फाइटर जेट की खरीद को मंजूरी दे दी है। 20 विमानों की डिलीवरी 2027 तक की जाएगी, जिसकी कुल लागत 2.2 अरब डॉलर (करीब 18,500 करोड़) होगी, जिसमें प्रशिक्षण और स्पेयर पार्ट्स शामिल हैं। भुगतान 10 वर्षों में किया

जाएगा। जे-10सीई विमान 4.5 पीढ़ी की तकनीक, एईएसए रडार, पीएल-15ई मिसाइल और उन्नत डेटा लिंक से लैस होंगे। इसके साथ बांग्लादेश चीन और पाकिस्तान के बाद तीसरा देश बन जाएगा, जिसके पास यह मॉडर्न पीढ़ी के फाइटर जेट होंगे। एयर चीफ मार्शल हसन महमूद खान ने बताया कि सरकार ने मल्टीरोल जेट, सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइलें और लंबी दूरी के रडार खरीदने को मंजूरी दे दी है, पर चीन का नाम स्पष्ट नहीं किया। बांग्लादेश वायु क्षमता में तेजी से वृद्धि कर रहा है और फोर्स गोल-2030 के तहत एक आधुनिक वायुसेना बेड़ा तैयार करने की दिशा में कदम बढ़ा चुका है। इस पहल की शुरुआत 2009 में हुई थी, पर 2017 के बाद उल्लेखनीय प्रगति देखने को मिली। जे-10सीई चीन के वायुसेना में पहले से ही शामिल है। रक्षा विशेषज्ञ मेजर जनरल (सेवानिवृत्त) एएनएम मुनीरुज्जमान ने मीडिया से कहा कि बांग्लादेश वायुसेना लंबे समय से नए लड़ाकू विमान खरीदने की योजना बना रही है। उन्होंने कहा, 'आज की दुनिया में नए-नए रिश्ते बन रहे हैं, इसलिए किसी देश से विमान खरीदने से पहले उसके प्रभावों का विश्लेषण जरूरी है।' वर्तमान में बांग्लादेश वायुसेना के पास 212 विमान हैं, जिनमें से 44 लड़ाकू विमान हैं। इनमें 36 चीनी एफ-7 जेट, 8 रूसी मिग-29बी, और कुछ यक-130 हल्के लड़ाकू विमान शामिल हैं। यह सौदा अगर तय हो जाता है, तो बांग्लादेश वायुसेना की युद्धक क्षमता में बड़ी बढ़ोतरी होगी। मई और अक्टूबर 2025 में वायुसेना प्रमुख हसन महमूद खान की इटली और तुर्किये यात्राओं ने बांग्लादेश के रक्षा सहयोग के नए रास्ते खोले हैं। इटली में उन्होंने लियोनार्डो के संयंत्रों का दौरा किया, जहां से उन्नत रडार, ट्रैकिंग सिस्टम और हेलिकॉप्टर तकनीक की खरीद पर चर्चा हुई। वहीं, तुर्किये में 1 से 6 अक्टूबर तक उन्होंने तुर्किश एयरस्पेस इंडस्ट्री सहित कई रक्षा कंपनियों से वार्ता की। तुर्किये के साथ ड्रोन तकनीक, एंटी-मिसाइल सिस्टम और निगरानी उपकरणों के संभावित सौदे पर भी विचार हुआ है। आंतरिक सूत्रों के अनुसार, चीन अभी भी लड़ाकू विमानों के लिए प्रमुख आपूर्तिकर्ता बना हुआ है। मई में पाकिस्तान ने संघर्ष के दौरान भारत के खिलाफ जिन फाइटर जेट्स का इस्तेमाल किया था उसमें जे-10सी फाइटर जेट भी शामिल था। भारत के स्वदेशी हथियारों (जैसे ब्रह्मोस और आकाशतीर) ने इन्हें नाकाम कर दिया था। इसके अलावा, चीन का पीएल-15 और एचक्यु-9पि मिसाइल, जेएफ-17 फाइटर जेट को भी नाकाम किया था। 9 मई को पंजाब के होशियारपुर जिले में एक खेत से पीएल-15ई मिसाइल के टुकड़े भी बरामद किए गए थे। यह मिसाइल चीन में बनी थी। इसके बाद 12 मई को वायु सेना ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में पहली बार इसका मलबा दिखाया था। पाकिस्तान ने जेएफ -17 लड़ाकू विमान से चीन में बनी पीएल -15ई मिसाइल दागी थी, लेकिन उसे हवा में ही नाकाम कर दिया गया, जिससे वह अपने निशाने तक नहीं पहुंच सकी। रिपोर्ट्स के मुताबिक पहली बार किसी संघर्ष में पीएल -1ई मिसाइल का इस्तेमाल हुआ है।

पाकिस्तान का नाबालिग प्रेमी जोड़ा सीमा पार कर गुजरात पहुंचा,इस्लामकोट से 4 दिन पहले भागे थे

कच्छ। गुजरात के कच्छ में एक पाकिस्तानी प्रेमी जोड़े को अवैध रूप से सीमा पार कर भारत में घुसते हुए पकड़ा गया है। यह नाबालिग जोड़ा भारतीय सीमा में 40 किलोमीटर अंदर तक आ पहुंचा था। इसी दौरान बुधवार की शाम गांववालों की इन पर नजर पड़ गई। गांववालों ने इन्हें पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया। दोनों नाबालिग प्रेमी ने पूछताछ में बताया है कि पाकिस्तान के दोनों ने कबूल किया किया कि वे पाकिस्तान में इस्लामकोट के लासरी गांव के रहने वाले हैं। वे शादी करना चाहते थे, लेकिन घरवालों को उनका रिश्ता मंजूर नहीं था। इसीलिए भागकर भारत आ गए। कच्छ पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक, दोनों के पास से उनकी पहचान का कोई डॉक्यूमेंट्स नहीं मिला है। लेकिन दोनों ने पूछताछ में बताया कि वे इस्लामकोट के लासरी गांव के रहने वाले हैं। वे मंगलवार की रात गांव से भागे थे। इसके बाद रेगिस्तान पार करते हुए 60 किलोमीटर दूर भारत की सीमा में दाखिल हुए। दोनों गुजरात के रतनपार गांव की सीमा पर संगवारी मंदिर के पास पहुंचे तो गांववालों ने इन्हें देखा। गांव के आसपास इन्हें पहले कभी नहीं देखा गया था, जिससे गांववालों को इन पर शक हुआ। उन्होंने खादिर पुलिस थाने को सूचना दी। दोनों को हिरासत में लेकर सुरक्षा एजेंसियों को जानकारी दी गई। खादिर थाने के हेड कांस्टेबल अजय सिंह झाला ने बताया कि दोनों ने अपनी पहचान मीर समुदाय का होना बताया है। लड़के की 16 और लड़की की उम्र 15 साल है। पूछताछ में उन्होंने बताया कि वे चार दिन पहले रात के करीब 12 बजे घर से भागे थे। रास्ते के लिए उन्होंने थोड़ा खाना और दो-तीन लीटर पानी भी साथ रख लिया था। करीब 30 किमी की सफर तय करने के बाद वे एक टापू पर रुके। यहां उन्होंने बारिश का पानी इकट्ठा किया और इसके बाद रेगिस्तान पार किया। सीमा पार का यह पहला मामला नहीं है।

अतीत का झरोखा

अपहरण करके 3 साल गैंगरेप किया:पिता और भाई का मर्डर, मां की अधजली लाश मिली; 2 को फांसी की सजा

पटना। 2015 का साल था और तारीख 24 फरवरी। जगह पूर्वी चंपारण जिले का ढाका। सुबह के 10:30 बज रहे थे। पुलिस एक घर में छापेमारी करने पहुंची। एक वाहन चोरी के मामले में पुलिस आरोपी शमीम को पकड़ने पहुंची थी। पुलिस जब उस घर के एक कमरे में पहुंची तो दरवाजे पर दो-दो ताले लगे थे। ताला तोड़कर पुलिस अंदर पहुंची। अंदर कोई नहीं मिला, लेकिन पीछे के कमरे से तेज बदबू आ रही थी। पुलिस ने वो कमरा खोला तो उनके होश उड़ गए। फर्श पर एक नाबालिग लड़की बेहोशी की हालत में पड़ी थी। कपड़े फटे और बेहद मैले। कमरे में जगह-जगह मल-मूत्र के निशान थे। पुलिस ने लड़की को बाहर निकाला। वह इस कदर कमजोर हो चुकी थी कि ठीक से बोल तक नहीं पा रही थी। उसे तुरंत अस्पताल में भर्ती कराया गया। वहां मेडिकल चेकअप के दौरान डॉक्टरों ने पाया कि उसके शरीर पर गहरे जख्म हैं, मारपीट के निशान हैं। पीठ और जांघों पर जलाने के दाग थे। उसकी मानसिक हालत ठीक नहीं थी। शाम 6 बजे जब लड़की को होश आया, तो उसने महिला थाना प्रभारी को आपबीती बताई।लड़की बोली- मेरा नाम सिमरन है। मैं सीतामढ़ी जिले के एक छोटे से गांव- महुआवा टोला की रहने वाली हूं। पापा राजीव कुमार सिंह गांव के ही एक प्राइमरी स्कूल में पढ़ाते थे। साथ में खेती-बाड़ी का काम भी देखते थे। पापा के साथ मैं, भाई अमनदीप और मम्मी रीना रहती थीं। मम्मी अक्सर कहतीं- 'बस इतना हो जाए कि बच्चे पढ़-लिख लें, यही बहुत है।' पापा हंसकर जवाब देते- 'अमनदीप को इंजीनियर बनाऊंगा, सिमरन टीचर बनेगी।' 2008 की बात है। एक दिन गांव के स्कूल में एक आदमी आया। उसके गले में आईडी कार्ड था- नाम था मोहम्मद शमीम अख्तर। शमीम ने ही मुझे उस घर में बंद कर रखा था। वो पापा से खुद को पत्रकार बताता था। वो गांव में जब पापा से मिला था तब उनसे कहा था- 'सुना है आप गांव में पढ़ाई-लिखाई का बहुत काम करते हैं।' पापा ने कहा- 'हां, बस थोड़ा बहुत।' शमीम ने कहा- 'लोकल रिपोर्टिंग के लिए आप जैसे लोगों से मिलना जरूरी है।' उस दिन पापा और वो अखबार, खबरें, वगैरह पर बातें करते रहे। पापा को अच्छा लगा कि कोई 'बाहर का आदमी' गांव की बातें सुन रहा है। अगले हफ्ते शमीम फिर आया- इस बार उसके हाथ में मिठाई का डिब्बा था। कहने लगा, 'सुना था आपकी बिटिया ने टॉप किया है, सोचा मिठाई दे दूं।' उस दिन उसने मम्मी से भी बात की। अब वो अक्सर घर आने लगा। वो कभी हमारी पढ़ाई में मदद करता, कभी बिजली का बिल भरने में हाथ बंटाता। मम्मी कहती- 'बड़ा भला लड़का है, सबका ख्याल रखता है।' पापा को भी उस पर किसी तरह का शक नहीं हुआ। शमीम अब कुछ और खुलने लगा था। वो मम्मी से अकेले में बातें करने लगा। वो कहता- 'आपके पति काम

में बिजी रहते हैं... आप कितना अकेला महसूस करती होंगी।' मम्मी चुप रह जातीं। वो उसका इरादा समझ नहीं पा रही थीं। इस तरह वो मम्मी से नजदीकी बढ़ाने लगा। शमीम धीरे-धीरे हमारी जिंदगी का हिस्सा बन गया। अब वो कभी मम्मी के साथ आंगन में बैठता, कभी रसोई में चाय बनवाता। उस समय पापा को लगता कि 'कोई भला इंसान' है, जो उनके परिवार का इस तरह ख्याल रख रहा है। एक शाम पापा खेत से लौटे, तो देखा- शमीम और मम्मी दोनों घर के पीछे वाले बरामदे में थे। वे आपस में कुछ फुसफुसा रहे थे। उस दिन शमीम हंसकर बोला- 'अरे भाई साहब, बस बच्चों की ट्यूशन की बात कर रहा हूं और कुछ नहीं,' उस वक्त तो पापा ने कुछ नहीं कहा। लेकिन वो उस रात सो नहीं पाए। मुझे बार-बार पानी लाने को कहते। अगले दिन शमीम फिर घर आया है। इस बार उसके हाथ में मोबाइल था। वो मम्मी को कुछ दिखा रहा था। उस पर पापा ने आवाज लगाई, 'क्या दिखा रहे हैं?' शमीम मुस्कुराकर बोला- 'बस एक वीडियो है, बच्चों का कार्टून।' पापा कुछ पल उसे देखते रहे- फिर चुपचाप अपने कमरे में चले गए। इसी तरह शमीम हर दिन आता। अब उसको लेकर गांव के लोग भी फुसफुसाने लगे थे। कहते- 'रीना और वो पत्रकार... कुछ ज्यादा ही मिलने लगे हैं।' पापा को ये सब सुनकर शर्म आती और गुस्सा भी, लेकिन वो बोलते नहीं। एक दोपहर अचानक पापा घर पहुंचे- दरवाजा भीतर से बंद था। आवाज दी- 'रीना!' कोई जवाब नहीं आया। पापा ने जोर से धक्का मारा। दरवाजा खुला- कमरे में शमीम था। मम्मी मेरे कमरे से निकलकर बाहर आ रही थीं। उनके बाल बिखरे हुए थे। उस दिन पापा की आंखों में गुस्सा उतर आया था। पापा ने कहा- 'ये क्या हो रहा है?' शमीम ने हकलाते हुए कहा- 'कुछ नहीं भैया, आपको कोई गलतफहमी हुई है।' पापा गुस्से से तमतमा उठे, लेकिन अपनी शराफत की वजह से कुछ कह नहीं पाए। अगले दिन शाम का वक्त था। पापा बरामदे में कुर्सी पर बैठे थे। वो अंदर ही अंदर कुछ सोच रहे थे। काफी परेशान, लेकिन कुछ कह नहीं रहे थे। थोड़ी देर में शमीम आया। सफेद कुर्ता-पायजामा पहने। काफी सजा-धजा और मुस्कुराता हुआ। उस दिन पापा ने तुरंत सीधे और सख्त लहजे में कहा- 'शमीम, अब तुम मेरे घर मत आया करो।' वो ठिठक गया। कहने लगा- 'क्या हुआ राजीव जी, मैंने क्या गलती कर दी?' पापा की आवाज धीमी थी, लेकिन बहुत गुस्से में थे। उन्होंने कहा- 'जो कुछ चल रहा है, वह ठीक नहीं है। बच्चों के सामने, गांव में लोग बातें बना रहे हैं। पत्नी भी आज से तुमसे बात नहीं करेगी। अगर तुमने ये सब हरकतें नहीं रोकी, तो मैं पुलिस में शिकायत करूंगा।' उसके बाद तो शमीम का चेहरा तमतमा उठा। वह कुछ पल चुप रहा, फिर धीरे से बोला, 'अच्छा, आपको लगता है कि मैं बुरा आदमी हूं? ठीक हैष्ठ अब तुम देख लेना, कौन बुरा है।' यही कहते हुए वो चला गया। पापा देर तक दरवाजे की ओर देखते रहे। अंदर मम्मी चुपचाप खड़ी थीं। पापा को खेत में धोखे से बुलाया और गला दबाकर मार दिया- कुछ ही दिन बाद की बात है। रात करीब 11 बज रहे थे, शमीम आया। उसने पापा से कहा- 'राजीव जी, आपके रिश्तेदार की तबीयत बिगड़ गई है। जल्दी चलिए।' पापा बिना किसी शक के सिर पर पगड़ी बांधे और चल दिए। उस वक्त भाई अमनदीप सो रहा था, लेकिन मैं जाग रही थी। पापा घर से निकले। रास्ते में जब खेत आया तो शमीम ने पापा को वहीं रोक लिया। उसने पहले से अपने दो साथियों को बुला रखा था। सभी ने पापा को घेर लिया और पीटने लगे। उस दिन पापा को बहुत मारा। तीनों ने लात-घूंसों से पीटना शुरू कर दिया। जब पापा अधमरे हो गए, तो शमीम ने उनका गला दबा दिया। जब पापा मर गए तो उनकी लाश खेत में ले जाकर फेंक दी। सुबह जब पापा घर नहीं लौटे तो मम्मी ने आवाज लगाई। लेकिन, उनका कहीं कुछ पता नहीं चला। मैं और मेरा भाई भी सो कर उठ चुके थे। पापा की तलाश शुरू हुई। गांव के लोग भी जुटने लगे। काफी तलाश के बाद गांव के बाहर एक सुनसान खेत में उनकी लाश मिली। गांव के लोगों ने तुरंत पुलिस को फोन किया। पुलिस ने मुझसे, मम्मी से और गांव के कुछ लोगों से पूछताछ की। हमारे बयान दर्ज किए, लेकिन मामला दुर्घटना में दर्ज किया। उसके बाद अगले दिन शमीम फिर घर आया। उस दिन मम्मी ने उससे कोई बात नहीं की। हम सब परेशान थे। उस दिन वो परेशान होकर चला गया। उस समय भाई केवल 11 साल का था। पापा की हत्या के बाद वो बहुत उदास रह रहा था। अक्सर मम्मी से पूछता- पापा के साथ क्या हुआ?' वह बार-बार कहता- शमीम अंकल ने कुछ किया है क्या? लेकिन मां चुप रहतीं, कोई जवाब न देतीं। एक दिन सुबह, उसने दरवाजा खोला और मम्मी से कहा- 'मम्मी, बाहर खेलने जा रहा हूं। जल्दी आ जाऊंगा'। वह खेलने के लिए खेतों की ओर चला गया। काफी देर हो गई, लेकिन लौटकर नहीं आया। सभी उसे खोजने लगे। काफी खोजबीन के बाद गांव में चर्चा फैल गई- 'बेटा भी लापता हो गया।' मम्मी और मैं बहुत रो रहे थे। उसका कहीं कुछ पता नहीं चल रहा था।

कुछ दिनों बाद पुलिस को पास के गांव के पास खेत में एक बच्चे की लाश मिली। हम देखने पहुंचे। उसका चेहरा कुचल दिया गया था, जिससे पहचान में नहीं आ रहा था। उसके शरीर पर कपड़े भी नहीं थे, लेकिन उस दिन मैंने पुलिस से कहा था- ये भाई अमनदीप का शव है। पर पुलिस नहीं मानी। पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में पता चला कि उसके सिर पर गहरी चोट लगी थी। गला घोंटने के निशान थे, लेकिन पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की। उसके बाद 2009 में शमीम मुझे और मम्मी को महुआवा टोला से, पूर्वी चंपारण के ढाका लेकर आया। वहां गांधी नगर मोहल्ले में एक छोटा किराए का घर लिया। वो हम दोनों का खर्च उठा रहा था। खुद भी आता-जाता रहता। गांव और मोहल्ले के लोगों से कहता- 'मैं इनका गार्जियन हूं।' फिर उस पर कोई शक नहीं करता। उस दौरान शमीम मम्मी को लगातार मना रहा था कि वह उससे कोर्ट में चलकर शादी कर लें। लेकिन मम्मी तैयार नहीं हुईं। 2013 की गर्मियों में एक दिन सुबह मम्मी भी लापता हो गईं। मैं सो कर उठी तो वो घर पर नहीं थीं। शमीम उस दिन घर पर मौजूद था। उसने कहा, 'तुम्हारी मम्मी अभी लौटकर आ जाएंगी, कहीं गई हैं।' लेकिन वो लौट कर नहीं आईं। उसके बाद मेरा डर बढ़ गया था। मैं बार-बार उससे पूछती- 'बताओ मम्मी कहां हैं?' लेकिन वो मुझे डराने लगा कि- 'चुप रहो, कुछ मत कहो। बाहर मत जाना, वर्ना जान से मार देंगे।' उसके बाद मैं डर-डरकर रहने लगी। बहुत परेशान थी। कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि अब कहां जाऊं। डर था कि अगर भागूंगी तो वो कहीं मुझे भी न मार दे। मम्मी के लापता हुए अब तक एक महीने हो चुके थे। ढाका के पास खेत में एक महिला की अधजली लाश मिली। चर्चा थी- 'शायद यह रीना की लाश है।' पुलिस आई, लाश को कब्जे में लिया, लेकिन रिपोर्ट में लिखा- 'शव की पहचान नहीं हो पाई।' अब जब मैं अकेले हो गई, तो शमीम ने मुझे गांधी नगर के उसी सुनसान घर में शिफ्ट कर दिया, जहां से आप लोगों ने अब मुझे ढूंढा है। उसने जब उस घर में मुझे रखा तो मेरा मोबाइल छीन लिया। उस घर में मुझे अक्सर नशे की गोलियां, इंजेक्शन दिए जाते, ताकि कोई विरोध न कर सकूं। उसमें मुझे पिछले 3 साल से बंद रखा गया था। वहां बहुत सारे लोग आते और मेरे साथ गंदा काम करते। मेरे साथ शमीम अख्तर, राजू मियां, इसरार मियां, माजिद, अमित और चंदन ने गंदा काम किया। ये लोग रोज मुझे मारते भी थे। कई बार भूखा रखा और धमकाया कि अगर बाहर भागने की कोशिश की तो वे मां की तरह मुझे भी जला देंगे। पुलिस ने उसी रात पॉक्सो एक्ट के तहत मामला दर्ज किया। सिमरन को एक शेल्टर होम में पहुंचाया। वहां 3 महीने तक उसकी काउंसलिंग कराई। उसके बाद पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज किया। उसके मुताबिक, जिस घर में सिमरन को रखा गया था, उसमें न खिड़की थी, न ठीक से बिजली-पानी की व्यवस्था। आस-पास कोई पड़ोसी भी नहीं था। दरवाजे पर बाहर से दो-दो ताले लगते थे। इस दौरान शमीम उसे बाहर से खाना लाकर देता। इस घर का मालिक शमीम का ही परिचित था, जो हर महीने चुपचाप किराया लेकर चला जाता था। पुलिस की रिपोर्ट के मुताबिक, एक दिन शमीम अख्तर, उसके करीबी राजू मियां, उस घर की देखरेख करने वाला इसरार मियां, कस्बे के एक होटल में काम करने वाले माजिद, ढाका के एक स्थानीय राजनीतिक नेता का रिश्तेदार अमित, उसी मोहल्ले में रहने वाले चंदन ने उसे नशे का इंजेक्शन दिया और सभी ने उसके साथ बलात्कार किया। उसके बाद यह सिलसिला हर दिन का हो गया। ये लोग रोज आते और सिमरन के साथ रेप करते। पुलिस ने एफआईआर दर्ज करने के बाद आरोपियों को दबोचने का प्लान बनाया। पुलिस की टीमों ने जगह-जगह छापे मारने शुरू किए। फरवरी 2015 की सुबह थी। सूचना खबर मिली कि राजू मियां और चंदन गांधीनगर मोहल्ले के पास खिरबी टोला गांव के एक रिश्तेदार के घर छिपे हुए हैं। पुलिस ने दो अलग-अलग टीमें बनाई। एक टीम को राजू मियां को पकड़ना था और दूसरी टीम चंदन के लिए लगाई गई। टीमें खिरबी टोला गांव पहुंची। राजू मियां को पता चल गया। वो गांव से भागने लगा। खेतों से होते हुए गांव के पास ईंट-भट्ठे तक पहुंचा। पुलिस ने उसे भागते देख लिया और पीछा किया। वह ईंट-भट्ठे के शेड के पीछे छिपना चाहा, लेकिन पुलिस ने दबोच लिया। वहीं दूसरी तरफ, चंदन गांव में ही एक बैलगाड़ी के शेड के नीचे छिपा था। जब उसने भागने की कोशिश की, तो पुलिस ने उसे भी दबोच लिया। गांव में अब हलचल थी। लोग खिड़कियों और दरवाजों से पुलिस की कार्रवाई देख रहे थे। राजू मियां और चंदन को पुलिस थाने लेकर गई। ढाका थाना प्रभारी ने मीडिया को बताया, 'गांव वालों की मदद से दोनों की गिरफ्तारी हुई। इनसे पूछताछ में कई और नाम सामने आए हैं। आरोपियों को 26 फरवरी को न्यायिक हिरासत में भेजा गया है और पुलिस ने कोर्ट से शमीम अख्तर और इसरार मियां के खिलाफ गिरफ्तारी वारंट की मांग की है।' 2017 में मामला कोर्ट पहुंचा। पुलिस ने चार्जशीट दाखिल की। कुल छह लोगों पर मामला दर्ज था। मुख्य आरोपी शमीम अख्तर अब भी फरार था। मुकदमे में कुल 12 गवाहों के बयान दर्ज हुए। इसमें मेडिकल अफसर, आईओ, शेल्टर होम सुपरिटेंडेंट और सिमरन का बयान शामिल थे। सिमरन ने कोर्ट में बताया- 'मुझे एक कमरे में बंद रखा गया। मेरे शरीर पर नाखूनों के निशान थे। हर तीसरे दिन कोई नया आदमी आता, मुझे मारता और मेरे साथ बलात्कार करता।' जुलाई 2022 में जज ने फैसला सुनाया। राजू मियां और इसरार मियां को दोषी पाया गया। सजा थी- फांसी। साथ ही 75-75 हजार रुपए का जुर्माना। बाकी आरोपियों- चंदन, माजिद और अमित को सबूतों अभाव में बरी कर दिया गया। फैसले को लेकर सिमरन ने कहा- 'मुझे पूरा न्याय नहीं मिला। शमीम, माजिद, अमित और चंदन को भी फांसी होनी चाहिए।' बिहार में इससे पहले जहां कानून व्यवस्था को लेकर पूर्व की आरजेडी सरकार पर सवाल उठते थे, वहीं इस कांड ने अब नीतीश सरकार की कानून-व्यवस्था पर सवाल खड़े करने लगे। विपक्ष ने नीतीश को घेरना शुरू कर दिया। हालांकि विपक्ष इस घटना का सियासी फायदा नहीं उठा पाया। (यह रिपोर्ट को लिखने में क्रिएटिव लिबर्टी का इस्तेमाल किया गया है। सिमरन बदला हुआ नाम है।https://www.bhaskar.com/bihar-election/news/bihar-simran-rape-kidnapping-story-shamim-akhtar-motihari-136142805.htmlव यह भास्कर से लिया गया हैं)

एसपी ने छात्राओं को महिला सुरक्षा, साइबर जागरूकता की दी गई जानकारी,मिशन शक्ति कार्यक्रम के तहत आयोजित हुई गोष्ठी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। पुलिस अधीक्षक के एवं आत्मनिर्भरता हेतु किए जा रहे प्रयासों की जानकारी दी गई। सोशल मीडिया पर सुरक्षित रहने की सावधानियों एवं शिकायत दर्ज

निर्देशन में शुक्रवार को राजकीय इंजीनियरिंग कॉलेज, चुर्क, सोनभद्र में मिशन शक्ति के अंतर्गत एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान पुलिस अधीक्षक अभिषेक वर्मा द्वारा छात्राओं को संबोधित करते हुए मिशन शक्ति अभियान की रूपरेखा, उद्देश्य एवं इसके तहत महिलाओं और बालिकाओं की सुरक्षा, सम्मान क्षेत्राधिकारी नगर डॉ0 चारु द्विवेदी द्वारा छात्राओं को महिला सुरक्षा से संबंधित विभिन्न हेल्पलाइन नंबरों जैसे -1090 (महिला हेल्पलाइन), 181 (महिला सहायता), 112 (आपातकालीन सेवा), 1930 (साइबर हेल्पलाइन) आदि के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। वहीं, निरीक्षक धीरेन्द्र चौधरी द्वारा साइबर अपराध से बचाव के उपायों, कराने की प्रक्रिया के संबंध में विस्तारपूर्वक जानकारी दी गई। इस अवसर पर अपर पुलिस अधीक्षक त्रिभुवन नाथ त्रिपाठी, ज्वाइंट मजिस्ट्रेट उत्कर्ष द्विवेदी, क्षेत्राधिकारी नगर रणधीर मिश्रा , महिला थानाध्यक्ष सविता सरोज राजकीय इंजीनियरिंग कॉलेज के प्रबंधक, शिक्षकगण एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

पति की दीर्घायु के लिए महिलाओं ने रखा व्रत

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। करवा चौथ पर्व जिले भर की पूजा की जाती है। इस दिन चंद्रोदय के बाद ही व्रत खोला जाता मुख्यालय स्थित विकास नगर निवासी दीपिका सिंह अपने पति

में इस बार शुक्रवार को मनाया गया। इस पर्व पर विवाहित महिलाएं अपने पति की लंबी उम्र और सुख-समृद्धि की कामना के लिए निर्जला व्रत रखती हैं। इस दिन महिलाएं सुबह सूर्योदय से पहले सरगीती और पूजा-अर्चना करती हैं। आचार्य सौरव कुमार भारद्वाज ने बताया कि जिसमें भगवान शिव, पार्वती और गणेश है और चंद्रमा को अर्घ्य दिया जाता है। करवा चौथ का महत्व हिंदू संस्कृति में बहुत अधिक है, खासकर विवाहित महिलाओं के लिए। यह पर्व पति-पत्नी के बीच के प्रेम और विश्वास को मजबूत बनाने का प्रतीक है। इस दिन महिलाएं अपने पति की लंबी उम्र और सुखी जीवन की कामना करती हैं।वही जिला राजेश कुमार के लिए व्रत रख पूजा नाचन कर उनकी दीर्घायु की कामना वहीं करवा चौथ पर्व को लेकर दिन भर बाजारों में रौनक बढ़ी रही , जहां महिलाएं पूजन सामग्री और श्रृंगार की खरीदारी करती हैं। इस पर्व का महत्व और इसकी परंपराएं हिंदू संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

जयप्रकाश ने अन्याय भ्रष्टाचार सत्ता के अहंकार के खिलाफ छेड़ था आंदोलनःराम निहोर

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। समाजवादी नेता संपूर्ण ने अन्याय भ्रष्टाचार और सत्ता के अहंकार के खिलाफ देशव्यापी कर रहे हैं ।उनकी राह ही हम समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ताओं

क्रांति के लोकनायक जयप्रकाश नारायण की जयंती पर विनम्र श्रद्धांजलि दी गयी और संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता समाजवादी पार्टी जिला अध्यक्ष राम निहोर यादव ने किया और संचालन जिला महासचिव मोहम्मद सईद कुरैशी ने किया ।संगोष्ठी को संबोधित करते हुए समाजवादी पार्टी के जिला अध्यक्ष राम निहोर यादव ने कहा कि महान समाजवादी नेता संपूर्ण क्रांति के लोकनायक जयप्रकाश नारायण आंदोलन छेड़ कर लोकतंत्र की रक्षा की थी । उनकी प्रेरणा से ही समाजवादी आंदोलन ने नई ऊर्जा पाई । गरीब किसान नौजवान और आम जनता की आवाज को मजबूती दिलाने का काम किया था। आज समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने उन्हीं के आदर्शों पर चलते हुए लोकतंत्र समाजवाद और समानता को आगे बढ़ने का काम कर रहे हैं और हर वर्ग की लड़ाई लड़ने का काम का मार्गदर्शन है। संगोष्ठी को संबोधित करने वालों में मुख्य रूप से प्रदेश सचिव चौधरी यशवंत सिंह जिला महासचिव मोहम्मद शईद कुरैशी जिला उपाध्यक्ष वेदमणी शुक्ला समाजवादी छात्र सभा के जिला अध्यक्ष पवन पटेल अनिल प्रधान लल्लू भारती अमन विश्वकर्मा आदित्य सिंह बड़ी शुभम वसीम अहमद कृष्णा पंडित महेश यादव अभय यादव के साथ दर्जनों कार्यकर्ताओं ने श्रद्धांजलि दी।

बच्चों के सुरक्षा एवं संरक्षण हम सबकी भागीदारी- राजेश चौबे,सड़क किनारे कुड़ा बीनने वाले छह नाबालिग बच्चों को कराया मुक्त

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। ब्लाक रावर्टसगंज के कस्बा अन्तर्गत सड़क के किनारे कुड़ा कटककर बीन रहे कुल छह नाबालिग बच्चों मुक्त कराते हुए सोनभद्र विकास समिति सोनभद्र द्वारा संस्था कार्यालय में लेजाकर संस्था काउंसलर साधना सिंह द्वारा काउंसलिंग किया गया संस्था सचिव राजेश चौबे द्वारा बताया गया कि सभी नाबालिग बच्चों कि काउंसलिंग से पता चला कि सभी बच्चों द्वारा प्रत्येक दिन इसी तरह से कुड़ा कटककर बीनते रहते हैं बच्चों के माता पिता कि भी काउंसलिंग करते हुए बच्चों के पठन-पाठन कराने के लिए जागरूक किया गया साथ ही यह भी बताया गया कि नाबालिग बच्चों के द्वारा बाल भिक्षा वृत्ति, सड़क के किनारे कुड़ा - करकट उठाते, बाल श्रम, बाल विवाह संबंधित प्रकरण संज्ञान में आता है तो चाईल्ड हेल्पलाइन टोल फ्री नम्बर 1098 पर सूचित कर सकते हैं। जिससे कि तत्काल नियमानुसार आवश्यक कार्यवाही और बच्चों को सुरक्षा एवं संरक्षण प्रदान हो सके। मौकेपर सोनभद्र विकास समिति के काउंसलर साधना सिंह,सामाजिक कार्यकर्त्ता, दिनेश विश्वकर्मा, डाटा आपरेटर प्रीती सही अन्य लोग मौजूद रहे।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने पूर्ण गणवेश में अनुशासित तरीके से किया पथ संचलन,करमा के सिरसिया ठकुराई मंडल में हुआ आयोजन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ विजयादशमी तक संघ शताब्दी वर्ष के कार्यक्रम मनाएगा। राष्ट्रीय चलने वाला संगठन है।अब तक के इतिहास में यह सिद्ध हुआ है कि

के गौरवमयी शताब्दी वर्ष के अवसर करमा के सिरसिया ठुकराई मंडल में विजयादशमी उत्सव व पथ संचलन स्वयंसेवक संघ का मुख्य उद्देश्य हिंदू संस्कृति, एकता और राष्ट्रीय गौरव को बढ़ावा देना है। आज भी बहुत कार्य इस दिशा में बहुत हुआ परंतु उन सब के लिए आभार व्यक्त करते हुए और उनसे प्रेरणा लेते हुए हमें

का आयोजन किया गया। इस अवसर पर स्वयंसेवकों ने पूर्ण गणवेश में भाग लिया और अनुशासित तरीके से पथ संचलन किया। पथ संचलन का उद्देश्य समाज में एकता और सांस्कृतिक चेतना का प्रसार करना है। पथ संचलन से पूर्व विभाग संपर्क प्रमुख बृजेश जी द्वारा एकत्रित स्वयं सेवकों को संघ की 100 वर्ष गौरव पूर्ण यात्रा पर पाथेय प्राप्त हुआ। बौद्धिक उद्बोधन मे विभाग संपर्क प्रमुख वृजेश सिंह ने संघ के स्थापना से लेकर अब तक संघ के गौरवमयी स्मृतियों पर प्रकाश डाला उन्होंने कहा आज संघ शून्य से शिखर तक पहुँच चुका है आज राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ विश्व की सबसे बड़ी स्वयंसेवी संस्था है। यह वर्ष संघ का शताब्दी वर्ष है और 2025 विजयादशमी से 2026 सारे संत महात्मा और संगठन राष्ट्र की धर्म संस्कृति की रक्षा करने के लिए तत्पर हैं संघ ने भी उसी क्रम में समाज की के पुनरुत्थान के लिए कार्य प्रारंभ किया । आरएसएस स्वयंसेवकों के माध्यम से सामाजिक सेवा, शिक्षा और चरित्र निर्माण पर जोर देता है। यह शाखाओं के जरिए शारीरिक प्रशिक्षण, अनुशासन और बौद्धिक विकास के जरिए व्यक्ति निर्माण करता है। आज संघ के समाज जीवन से जुड़े अनेक संगठन है जो विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं और उनकी अपनी विशेष पहचान है सेवा के 1 लाख से अधिक प्रकल्प चलते हैं संघ का कार्य किसी के प्रतिक्रिया में या निषेधात्मक नहीं है यह धर्म की रक्षा करते हुए राष्ट्र को परम वैभव पर ले जाने के लिए एक सकारात्मक कार्य योजना लेकर यह शिक्षा लेनी है कि दीर्घकाल तक कार्य करने के लिए हमें अनुशासन और संगठन करना होगा तथा अपने हृदय में अक्षय ध्येय निष्ठा जागृत रखनी होगी तभी हमें सफलता मिलेगी और भारत माता विश्व गुरु के सिंहासन पर अधिष्ठित हो सकेंगी। पथ संचलन का कार्यक्रम राज कॉन्वेंट स्कूल करमा से करमा बाजार भ्रमण करते हुए वापस राज कॉन्वेंट स्कूल पर पथयात्रा का विश्राम हुआ। सोनभद्र नगर प्रचारक हरेंद्र, खंड कार्यवाह कामेश,खंड संपर्क प्रमुख भूपेंद्र ,खंड प्रचार प्रमुख संतोष ,खंड सह कार्यवाह जितेंद्र, विचार परिवार से आशुतोष सिंह अंकुर, राजेश मिश्रा, राजेन्द्र त्रिपाठी, गोपाल सिंह वैद्य, वरुण त्रिपाठी, नीरज तिवारी व अन्य कार्यकर्ता मौजूद रहे।

लेखपालों के तबादले बने मज़ाक कोई 10 तो कोई 5 साल से एक ही सर्किल पर जमे, जुगाड़ से फिर लौट आते हैं मनचाही पोस्टिंग पर

वीआईपी और वीवीआईपी सर्किलों पर कुछ चुनिंदा लेखपालों की पकड़ इतनी मजबूत है कि प्रशासनिक आदेश भी औपचारिकता बनकर रह गया

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। राजस्व विभाग में दिनों में फिर उसी सर्किल में लौट आते हैं। वीआईपी सर्किलों में जमे कई चर्चित नाम अब भी अपनी पुरानी जगहों पर सक्रिय हैं,

लेखपालों की भूमिका बेहद अहम मानी जाती है ज़मीन-जायदाद, हैसियत, जाति और निवास से जुड़ी हर रिपोर्ट में लेखपाल की सिफारिश ही निर्णायक होती है। लेकिन सोनभद्र में यह जिम्मेदार पद अब जुगाड़ और पहुंच का केंद्र बन गया है। जिले में दर्जनों ऐसे लेखपाल हैं जो पिछले कई वर्षों से एक ही सर्किल या तहसील में जमे हुए हैं। कोई 10 साल, तो कोई 5 साल से ज्यादा समय से एक ही क्षेत्र में तैनाती का लुत्फ उठा रहा है। शासन द्वारा तबादले के आदेश जारी होने के बावजूद इनकी पोस्टिंग पर कोई असर नहीं पड़ता। सूत्रों की मानें तो जैसे ही तबादले की सूची जारी होती है, कई प्रभावशाली लेखपाल अपने संपर्कों और सेटिंग के जरिए तबादला निरस्त करा लेते हैं या कुछ ही प्रभावशाली लेखपाल जिले के कई वीआईपी और वीवीआईपी सर्किलों पर कुछ चुनिंदा लेखपालों की पकड़ इतनी मजबूत है कि प्रशासनिक आदेश भी उन तक पहुंचकर औपचारिकता बनकर रह जाते हैं। ऐसे सर्किलों में जहां ज़मीन के विवाद, मुआवज़े या खनन से जुड़े मामलों की भरमार है, वहां लंबे समय से वही चेहरे तैनात हैं जिनके नाम कई बार तबादला सूची में भी शामिल हुए, पर हकीकत में कुर्सी नहीं छोड़ी। शासन के निर्देश बेअसर, जुगाड़ का खेल जारी हाल ही में शासन ने सभी जिलों में लेखपालों के कार्यक्षेत्र बदलने का निर्देश दिया था ताकि पारदर्शिता बनी रहे और क्षेत्रीय प्रभाव समाप्त हो। लेकिन सोनभद्र में इन आदेशों का कोई विशेष असर दिखाई नहीं दिया। जबकि प्रशासनिक स्तर पर उनके तबादले के आदेश भी पहले जारी किए जा चुके हैं। प्रशासन की चुप्पी पर उठ रहे सवाल जिले में यह चर्चा आम है कि कुछ लेखपालों की पहुंच इतनी ऊंची है कि अधिकारी भी उनके तबादले को लेकर असहज महसूस करते हैं। ऐसे में सवाल उठता है कि क्या राजस्व विभाग में तबादले सिर्फ कागज़ी प्रक्रिया बनकर रह गए हैं? निष्कर्ष जहां एक ओर शासन राजस्व व्यवस्था को पारदर्शी बनाने की बात करता है, वहीं दूसरी ओर सोनभद्र में लेखपालों की मनमानी और जुगाड़बाज़ी ने पूरे सिस्टम की साख पर सवाल खड़ा कर दिया है। जनता उम्मीद कर रही है कि इस बार सिर्फ आदेश नहीं, वास्तविक कार्रवाई भी देखने को मिले।

मिशन सशक्तिकरण को एसपी ने दिया संदेश छात्राओं के साथ लगाई दौड़,छात्राओं को सुरक्षा, साइबर जागरूकता एवं आत्मनिर्भरता दी जानकारी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। पुलिस अधीक्षक अभिषेक वर्मा के निर्देशन में तथा मिशन शक्ति की नोडल अधिकारी/क्षेत्राधिकारी यातायात डॉ0 चारु द्विवेदी के नेतृत्व में थाना चोपन क्षेत्रांतर्गत सेंट जेवियर पब्लिक स्कूल, डाला (चोपन), सोनभद्र में मिशन शक्ति के तहत एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।कार्यक्रम के दौरान पुलिस अधीक्षक सोनभद्र के आगमन पर विद्यालय के प्रधानाचार्य द्वारा पुष्प गुच्छ एवं शाल भेंट कर उनका स्वागत एवं सम्मान किया गया। तत्पश्चात मिशन शक्ति की नोडल अधिकारी डॉ0 चारु द्विवेदी द्वारा ''मिशन सशक्तिकरण के लिए दौड़'' का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 01 किलोमीटर की दौड़ संपन्न हुई। इस दौड़ का शुभारम्भ पुलिस अधीक्षक सोनभद्र द्वारा फीता काटकर किया गया। महिला सशक्तिकरण और जनजागरूकता का संदेश देने हेतु पुलिस अधीक्षक सोनभद्र स्वयं भी दौड़ में सम्मिलित हुए। उन्होंने छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि 'महिला स्वयं एक शक्ति है – आवश्यकता है अपने अधिकारों की जानकारी और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने की।' इस अवसर पर क्षेत्राधिकारी नगर रणधीर कुमार मिश्रा द्वारा विद्यार्थियों को साइबर अपराध एवं ऑनलाइन सुरक्षा से संबंधित जानकारी देते हुए उन्हें इंटरनेट के सुरक्षित उपयोग के प्रति जागरूक किया गया।दौड़ प्रतियोगिता में प्रथम स्थान सवानी पुत्री रामनारायण सिंह, द्वितीय सान्वी पुत्री कृपाशंकर, एवं तृतीय अल्का पुत्री विजय ने प्राप्त किया। तीनों छात्राओं को पुलिस अधीक्षक सोनभद्र द्वारा प्रशस्ति पत्र एवं पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस आयोजन के माध्यम से बालिकाओं में आत्मविश्वास, जागरूकता एवं नेतृत्व की भावना को प्रोत्साहित करने का प्रयास किया गया। इस अवसर पर प्रतिसार निरीक्षक नदीम, प्रभारी निरीक्षक चोपन कुमुद शेखर सिंह, चौकी प्रभारी डाला आशीष कुमार पटेल, मिशन शक्ति टीम, विद्यालय के शिक्षकगण, छात्र-छात्राएँ एवं पुलिस विभाग के अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित रहे।

छात्राओं को मिला गोल्ड मेडल व प्रशस्ति पत्र खिले चेहरे

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ से सम्बद्ध विन्ध्य कन्या परिवार में हर्ष की लहर व्याप्त है। उक्त छात्राओं को महाविद्यालय भी अपने 19वें वार्षिकोत्सव पर

स्नातकोत्तर महाविद्यालय राबर्ट्सगंज सोनभद्र में विश्वविद्यालय के 47वें दीक्षांत समारोह मे मां0 महामहिम राज्यपाल द्वारा स्नातकोत्तर गृहविज्ञान विषय में साधना सिंह आठवां स्थान समाजशास्त्र में प्रेरणा केशरी चतुर्थ स्थान, शिक्षाशास्त्र में लक्ष्मीरानी चतुर्थ स्थान, चित्रकला विषय में सुरूचि द्वितीय स्थान, कु0प्रिया गुप्ता पंचम व प्रतिभा छठां स्थान व मध्यकालीन इतिहास में आरती नवमं स्थान प्राप्त करने पर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति महामहिम राज्यपाल व विश्वविद्यालय के कुलपति द्वारा प्रशस्ति पत्र व प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया। छात्राओं के सम्मानित होने पर महाविद्यालय सम्मानित करेगा।

महाविद्यालय के मुख्य ट्रस्टी डॉ0 अजय कुमार सिंह ने कहा की उपर्युक्त छात्राऐं पढ़ाई में हमेशा सर्वश्रेष्ठ रही है।

महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ0 अंजली विक्रम सिंह ने छात्राओं को उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए प्रसन्नता व्यक्त की और कहा की छात्रायें अध्ययन के साथ-साथ महाविद्यालय के समस्त क्रिया कलापो में भी बढ़ चढ़ कर भी प्रतिभाग करती थी। इस अवसर पर डॉ0 कैलाशनाथ, डॉ0 अनुग्रह नारायण सिंह डॉ0 मालती, डॉ0 गीता सरस्वती, डॉ0 अरूणेन्द्र संदल, अनीश, मनीष, प्रतीक, पंकज, कीर्ति, अरूणा, आदि लोग उपस्थित रहें।

रालोद के राष्ट्रीय महासचिव का आगमन 15 कोःविवेक चतुर्वेदी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। राष्ट्रीय लोकदल के राष्ट्रीय जिला कार्यालय पर प्रेसवार्ता कर दोपहर 2:30 बजे क्षेत्रीय भ्रमण कर

महासचिव के आगमन को लेकर कैम्प कार्यालय रावट्र्सगंज में पदाधिकारियों की बैठक की गई, जिसमें सोनभद्र के जिला मीडिया प्रभारी विकास पाण्डेय ने बताया कि राष्ट्रीय लोकदल के राष्ट्रीय महासचिव अनिल दुबे का आगमन सोनभद्र में दोपहर 12 बजे होगा, तत्पश्चात सिंचाई डाक बंगला रावट्र्सगंज में भारतरत्न एवं किसान मसीहा चौधरी चरण सिंह के प्रतिमा पर माल्यार्पण कर दोपहर 1 बजे उरमौरा स्थित जिला कार्यालय पर पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं के साथ बैठक करेंगे। दोपहर 2 बजे लखनऊ के लिए प्रस्थान करेंगे। कार्यक्रम युवा रालोद के प्रदेश सचिव विवेक चतुर्वेदी के नेतृत्व में किया जाएगा। इस मौके पर रालोद के प्रदेश सचिव रामसेवक पटेल, युवा रालोद के प्रदेश सचिव अभय सिंह पटेल, राष्ट्रीय लोकदल के जिला संगठन महासचिव पवन शुक्ला, जिला कोषाध्यक्ष चन्द्रभान सिंह पटेल, व्यापार प्रकोष्ठ के जिला अध्यक्ष सचिन गुप्ता, छात्र प्रकोष्ठ के जिला अध्यक्ष सूरज चौबे, नीतेश, शैलेश, श्यामू, किशन विश्वकर्मा समेत दर्जनों कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

इको प्वाइंट के पास हॉट स्पॉट क्षेत्रों में पुलिस ने की कॉम्बिंग

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। पुलिस अधीक्षक अभिषेक वर्मा के निर्देशन में अपर पुलिस अधीक्षक अनिल कुमार के पर्यवेक्षण में तथा क्षेत्राधिकारी नगर रणधीर कुमार मिश्रा के नेतृत्व में प्रभारी निरीक्षक रॉबर्ट्सगंज माधव सिंह, चौकी प्रभारी लोढ़ी उमाशंकर यादव तथा पीएसी बल के साथ थाना रॉबर्ट्सगंज क्षेत्रान्तर्गत इको प्वाइंट के पास स्थित हॉट स्पॉट स्थानों पर सघन कॉम्बिंग अभियान चलाया गया। इस दौरान संदिग्ध व्यक्तियों एवं स्थलों की गहन चेकिंग की गई तथा ड्रोन कैमरे की सहायता से क्षेत्र की निगरानी भी की गई। पुलिस द्वारा कानून-व्यवस्था बनाए रखने हेतु इसी प्रकार सतत् रूप से प्रभावी कार्यवाही की जा रही है।

पाक रक्षामंत्री बोले-हमारे मिलिट्री एक्शन से मोदी की लोकप्रियता घटी,बिहार में चुनाव के कारण भारत भड़काऊ कार्रवाई कर रहा

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने कहा कि बिहार चुनाव की वजह से भारत भड़काऊ कार्रवाई कर रहा है। उन्होंने यह बयान पाकिस्तानी न्यूज चैनल समा टीवी पर बुधवार को दिया। ख्वाजा आसिफ ने कहा कि मई में

भारत के खिलाफ पाकिस्तान की सैन्य कार्रवाई से मोदी की लोकप्रियता घटी है। मोदी के समर्थक भी अब उनकी आलोचना कर रहे हैं। आसिफ ने संघर्ष के दौरान 6 भारतीय फाइटर जेट मार गिराने का दावा किया। आसिफ ने दावा किया कि पहले जो देश भारत-पाकिस्तान संघर्ष के दौरान न्यूट्रल रहते थे, वे अब हमारे खेमे में शामिल हो गए हैं और जो भारत का समर्थन कर रहे थे, वे अब चुप हैं। यह बात भारत को सालों तक परेशान करेगी। उन्होंने यह भी कहा कि भारत सिर्फ औरंगजेब के समय ही एकजुट था। इतिहास बताता है कि औरंगजेब की हुकूमत के अलावा भारत कभी पूरी तरह एकजुट नहीं रहा। पाकिस्तान अल्लाह के नाम पर बना है। हम घर में आपस में लड़ते हैं, लेकिन भारत से लड़ाई होने पर एक हो जाते हैं। ख्वाजा आसिफ ने तीन दिन पहले भारत को धमकी देते हुए कहा था कि अब की बार जंग हुई तो भारत अपने लड़ाकू विमानों के मलबे के नीचे दब जाएगा। उन्होंने रविवार को सोशल मीडिया एक्स पर लिखा कि भारतीय लीडरशिप अपनी खोई हुई विश्वसनीयता पाने के लिए भड़काऊ बयान दे रही है। आसिफ ने आरोप लगाया कि नई दिल्ली जानबूझकर तनाव बढ़ा रही है ताकि नागरिकों का ध्यान घरेलू चुनौतियों से भटकाया जा सके। पाकिस्तान की तरफ से बीते कुछ दिनों से लगातार भड़काऊ बयानबाजी की जा रही है। दो दिन पहले पाकिस्तानी सेना के प्रवक्ता जनरल अहमद चौधरी ने कहा था कि भारत के खिलाफ संघर्ष में चीनी हथियारों ने मई में बेहतरीन काम किया था। उन्होंने कहा था कि हम हर तरह की तकनीक के लिए खुले हैं। चीनी तकनीक ने बहुत अच्छा काम किया। पाकिस्तान ने 7 भारतीय फाइटर जेट मार गिराए थे, जबकि भारत ने एक भी पाकिस्तानी विमान नहीं गिराया।

शिवकुमार बोले- मुझे पता है अपना टाइम कब आएगा,कर्नाटक सीएम बनने को लेकर कहा- 2028 में दोबारा कांग्रेस सरकार बनाऊंगा, तब मेरा समय आएगा

कर्नाटक। कर्नाटक के डिप्टी सीएम डीके शिवकुमार ने शनिवार को मुख्यमंत्री बनने की खबरों को सख्ती से खारिज

किया है। उन्होंने कहा कि कुछ लोग और मीडिया भ्रम फैलाने की कोशिश कर रहे हैं, जबकि उनकी प्राथमिकता सिर्फ पार्टी के लिए काम करना है। शिवकुमार ने लालबाग में कहा- 'मैंने नेतृत्व परिवर्तन पर कोई बात नहीं की है। कुछ लोगों की इच्छा है कि मैं सीएम बनूं। उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या इसका समय नजदीक आ रहा है, तो मैंने बस कहा- देखिए। इसका मतलब यह नहीं कि मैं किसी पद के लिए प्रयास कर रहा हूं।' डिप्टी सीएम ने कहा- 'कुछ मीडिया वाले भ्रम फैला रहे हैं। मुझे पता है मेरा टाइम कब आएगा। मेरा टाइम तब होगा जब मैं 2028 में कर्नाटक में फिर से कांग्रेस की सरकार बनाऊंगा। यही मेरा लक्ष्य है।' कांग्रेस नेता ने नाराजगी जताते हुए कहा- 'अगर कोई झूठी बातें फैला रहा है या कोई चैनल गुमराह करने की कोशिश कर रहा है तो मुझे आपके (मीडिया) खिलाफ मानहानि का केस करना पड़ेगा। मैं पूरी तरह से सचेत हूं।' उन्होंने कहा- 'मुझे पता है कि ईश्वर ने मुझे क्या अवसर दिया है और वह मुझे कब अवसर देंगे। मैं अपने राज्य के लोगों की सेवा करना चाहता हूं और बेंगलुरु के लोगों को अच्छा प्रशासन देना चाहता हूं। इसी इरादे से मैं सुबह से शाम तक काम कर रहा हूं।' शिवकुमार ने कहा, 'हमें बीजेपी की बातों पर प्रतिक्रिया देने की जरूरत नहीं है। कोई भी सीएम पद पर टिप्पणी न करे। मुख्यमंत्री सिद्धारमैया और मैं मिलकर काम कर रहे हैं और पार्टी हाईकमान के दिशा-निर्देशों का पालन कर रहे हैं।' कुछ दिन पहले शिवकुमार ने पार्टी नेताओं को चेतावनी दी थी कि वे मुख्यमंत्री पद में बदलाव या साझा कार्यकाल (पद बंटवारे) जैसे मुद्दों पर सार्वजनिक रूप से बयान न दें। उन्होंने कर्नाटक प्रदेश कांग्रेस समिति के कार्यकारी अध्यक्ष जीसी चंद्रशेखर को निर्देश दिया है कि जो नेता इस विषय पर बोलें, उन्हें नोटिस जारी किया जाए। राज्य में कैबिनेट फेरबदल की अटकलें भी तेज हो गई हैं। सीएम सिद्धारमैया ने 13 अक्टूबर को सभी मंत्रियों को डिनर पर बुलाया है।

हालांकि उन्होंने यह साफ किया कि इस डिनर का किसी राजनीतिक बदलाव से कोई संबंध नहीं है। उन्होंने कहा- 'काफी समय से मैंने मंत्रियों को भोजन के लिए नहीं बुलाया था, इसलिए उन्हें सिर्फ मिल-बैठने के लिए बुलाया है।

इसका कैबिनेट फेरबदल से कोई लेना-देना नहीं है।' कर्नाटक विधानसभा में 21 अगस्त को चिन्नास्वामी स्टेडियम भगदड़ (4 जून) पर चर्चा हो रही थी। इस दौरान विधानसभा में भाजपा विधायक आर. अशोक ने शिवकुमार की ओर इशारा करते हुए कहा कि कर्नाटक सरकार को आरसीबी भगदड़ की जिम्मेदारी लेनी चाहिए। इस पर डिप्टी सीएम शिवकुमार ने कहा कि उन्हें भाजपा की चालों के बारे में सब पता है। फिर उन्होंने भाजपा विधायक के साथ बहस के दौरान आरएसएस की प्रार्थना 'नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमे' की 2 लाइनें गा दीं। इस दौरान कांग्रेस खेमे के साथ-साथ विपक्ष भी चौंक गया। सोशल मीडिया पर शिवकुमार का यह वीडियो वायरल भी हो गया।

भागवत बोले-आरएसएस जैसी संस्था केवल नागपुर में बन सकती थी,आरएसएस का उद्देश्य अनुशासन और सामाजिक जिम्मेदारी बनाना

नागपुर। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) चीफ मोहन

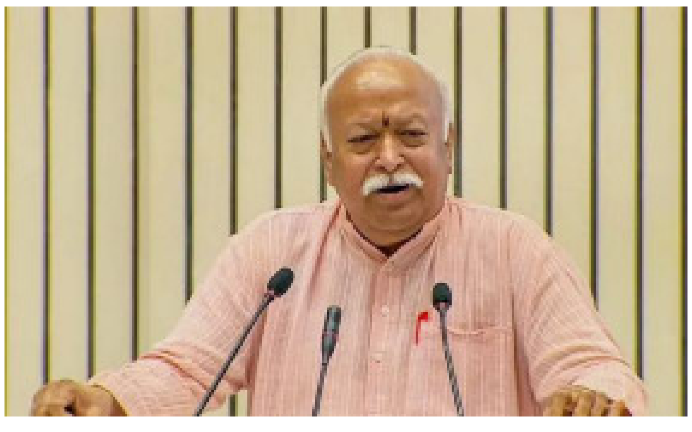

भागवत ने कहा, 'देश में कई लोग हिंदुत्व पर गर्व करते थे और हिंदू एकता की बात करते थे, लेकिन आरएसएस जैसी संस्था केवल नागपुर में ही बन सकती थी। यहां पहले से ही त्याग और समाज सेवा की भावना थी।' उन्होंने कहा- आरएसएस ने हाल ही में दशहरे पर अपने 100 साल पूरे किए। इसकी स्थापना साल 1925 में नागपुर में डॉ. हेडगेवार ने की थी। संगठन का उद्देश्य समाज में अनुशासन, सेवा, सांस्कृतिक जागरूकता और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना पैदा करना था। शुक्रवार को नागपुर में एक कार्यक्रम के दौरान भागवत ने कहा-'छत्रपति शिवाजी महाराज ने स्वराज की स्थापना अपने लिए नहीं, बल्कि ईश्वर, धर्म और राष्ट्र के लिए की थी। उन्होंने लोगों को एक महान उद्देश्य के लिए जोड़ा। उनकी एकता की भावना ने समाज को ताकत दी। जब तक उनके आदर्श जीवित रहे, तब तक समाज में प्रगति और विकास होता रहा। उनके विचारों ने आगे चलकर 1857 के स्वतंत्रता संग्राम तक को प्रेरित किया।' आरएसएस चीफ ने कहा कि ब्रिटिश शासन ने योजनाबद्ध तरीके से उन प्रतीकों और परंपराओं को खत्म करने की कोशिश की, जो भारतीयों को एकजुट करती थीं। इसलिए इतिहास से सीखें और उन लोगों की निस्वार्थ भावना को याद रखें, जिन्होंने समाज और देश के हित के लिए काम किया। 100 साल का संघ, एपिसोड-1:मुस्लिमों का साथ देने पर गांधी से नाराज एक कांग्रेसी ने बनाया आरएसएस, उनकी आखिरी चिट्ठी पढ़ सब हैरान क्यों रह गए2 अक्टूबर को विजयादशमी के मौके पर आरएसएस के शताब्दी समारोह पर मोहन भागवत ने कहा था कि पहलगाम हमले में आतंकियों ने धर्म पूछकर हिंदुओं की हत्या की। हमारी सरकार और सेना ने इसका जवाब दिया। इस घटना से हमें दोस्त और दुश्मन का पता चला।उन्होंने कहा था कि हमें अंतरराष्ट्रीय संबंधों में समझ रखनी होगी। पहलगाम घटना हमें सिखा गई कि भले ही हम सभी के साथ दोस्ती का भाव रखते हैं और रखेंगे, लेकिन हमें अपनी सुरक्षा के प्रति और अधिक सजग, समर्थ रहना पड़ेगा।भागवत ने 41 मिनट के भाषण में समाज में आ रहे बदलाव, सरकारों का रवैया, लोगों में बेचैनी, पड़ोसी देशों में उथल-पुथल, अमेरिकी टैरिफ का जिक्र किया था।

मोदी बोले-हमने बीज से लेकर बाजार तक सुधार किए,पिछली सरकारों ने कृषि को छोड़ा; पीएम ने 35 हजार करोड़ की कृषि योजनाओं की शुरुआत की

नयी दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार दोपहर दिल्ली के

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान में कृषि क्षेत्र के लिए 35 हजार 440 करोड़ की दो बड़ी योजनाएं शुरू कीं। उन्होंने पीएम 11,440 करोड़ की दाल उत्पादन मिशन योजना और 24 हजार करोड़ की पीएम धन धान्य कृषि योजना का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि, 'कृषि और खेती हमेशा हमारे विकास यात्रा का महत्वपूर्ण हिस्सा रही हैं। समय के साथ यह जरूरी है कि कृषि को सरकार का समर्थन मिलता रहे। दुर्भाग्य से पिछली सरकारों ने कृषि को छोड़ दिया था।' पीएम ने कहा कि 21वीं सदी के भारत को तेजी से विकसित करने के लिए हमारी कृषि प्रणाली में सुधार आवश्यक था। यह काम 2014 में शुरू हुआ। हमने पिछली सरकारों के लापरवाह रवैये को बदला। बीज से लेकर बाजार तक, किसानों के लाभ के लिए अनगिनत सुधार किए।पीएम मोदी ने कहा- पिछली सरकारों ने देश के 100 से अधिक जिलों को पिछड़ा घोषित किया, फिर उन्हें भुला दिया। हमने इन जिलों पर विशेष ध्यान दिया, इन्हें आशास्पद जिले घोषित किया। इन जिलों को सह-संयोजन, सहयोग और प्रतिस्पर्धा के अपने मंत्र से बदला। यहां की 20फीसदी बस्तियों में स्वतंत्रता के बाद भी सड़क नहीं थी। आज इन बस्तियों का अधिकांश हिस्सा सड़कों से जुड़ चुका है। पहले यहां के 17फीसदी बच्चों को टीकाकरण का लाभ नहीं मिल रहा था, लेकिन आज मिल रहा है। 15फीसदी से अधिक स्कूलों में बिजली नहीं थी, लेकिन अब योजना के तहत हर स्कूल में बिजली कनेक्शन उपलब्ध कराया गया है। पीएम ने कहा- भारत दुनिया में दूध उत्पादन में नंबर वन हैं। भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा मछली उत्पादक देश है। 2014 के मुकाबले शहद का उत्पादन भी दोगुना हुआ है। अंडे का प्रोडक्शन भी पिछले 11 सालों में दोगुना हुआ। उन्होंने कहा कि पिछले 11 सालों में भारत का कृषि निर्यात लगभग दोगुना हो गया है। अन्न उत्पादन में लगभग 90 मिलियन मीट्रिक टन की वृद्धि हुई है। फल और सब्जियों का उत्पादन 64 मिलियन मीट्रिक टन से अधिक बढ़ा है। पिछले 11 सालों में देश में छह बड़े फर्टीलाइजर प्लांट बनाए गए। किसानों को 2.5 करोड़ से अधिक मिट्टी स्वास्थ्य कार्ड बांटे। माइक्रो-इरीगेशन की सुविधा 100 लाख हेक्टेयर तक पहुंची। पीएम फसल बीमा योजना से लगभग 2 लाख करोड़ के क्लेम मिले। पीएम मोदी ने कहा कि पिछले 11 साल में 10 हजार से ज्यादा किसान उत्पादक संघ का गठन किया गया। इन सालों में देश के किसानों ने कई उपलब्धियां हासिल की हैं।आज देश का स्वभाव ऐसा हो गया है कि सिर्फ कुछ उपलब्धियों से संतुष्टि नहीं होती। यदि हम विकसित बनना चाहते हैं, तो हमें हर क्षेत्र में लगातार सुधार करना होगा। पीएम धन-धान्य कृषि योजना इसी सोच का परिणाम है। पीएम मोदी ने कार्यक्रम में 815 करोड़ रुपए की लागत से तैयार होने वाली आंध्र प्रदेश में इंटीग्रेटेड कोल्ड चेन और वैल्यू एडिशन सुविधाएं, उत्तराखंड में ट्राउट मत्स्य पालन, नगालैंड में एकीकृत एक्वा पार्क, पुडुचेरी में स्मार्ट फिशिंग हार्बर और ओडिशा के हीराकुंड में एडवांस्ड एक्वा पार्क की भी नींव रखी।कार्यक्रम में मौजूद केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि प्रधानमंत्री ने रबी फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य बढ़ाया है। एमएसपी बढ़ाने से तय हुआ है कि किसानों को उनकी उपज के लिए सही और पूरा मूल्य मिले। हम प्रधानमंत्री के आभारी हैं क्योंकि पीएम-किसान सम्मान निधि के तहत अब तक डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर के जरिए 3 लाख 90 हजार करोड़ रुपए जमा किए जा चुके हैं।

पश्चिम बंगाल के दुर्गापुर में मेडिकल स्टूडेंट से गैंगरेप,3 लोगों ने रास्ता रोका, साथ में दोस्त था, वह छोड़कर भाग गया

कोलकाता। पश्चिम बंगाल के पश्चिम बर्धमान जिले के दुर्गापुर में एक मेडिकल स्टूडेंट के साथ शुक्रवार को गैंगरेप हुआ। पीड़ित

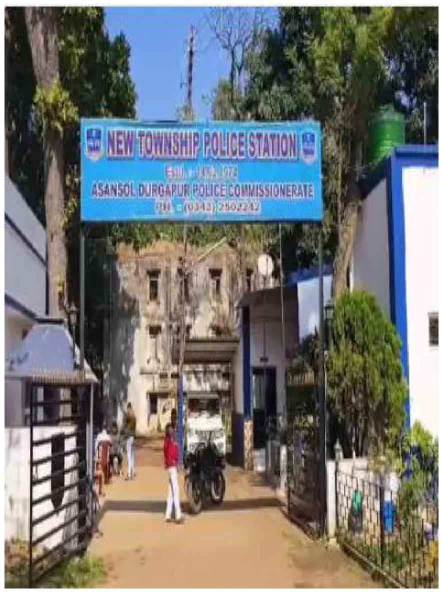

अपने एक पुरुष दोस्त के साथ डिनर पर गई थी। वापस लौटते समय 3 लोगों ने उनका रास्ता रोका। छात्रा का दोस्त उसे छोड़कर भाग गया, जिसके बाद आरोपियों ने उससे दरिंदगी की।पुलिस ने शनिवार को बताया कि पीड़ित ओडिशा के जलेश्वर की रहने वाली है और दुर्गापुर के एक प्राइवेट मेडिकल कॉलेज में सेकेंड ईयर की स्टूडेंट है। यह घटना मेडिकल कॉलेज कैंपस के बाहर हुई। मेडिकल छात्रा का पास के एक अस्पताल में इलाज चल रहा है। छात्रा रात करीब 8:30 से 9 बजे बाहर गई थी। रात करीब 10 बजे वापस लौटते समय गैंगरेप की घटना हुई। छात्रा के माता-पिता को देर रात मामले की जानकारी दी गई। वे आज सुबह दुर्गापुर पहुंचे और दुर्गापुर न्यू टाउनशिप थाने में अज्ञात लोगों के खिलाफ मामला दर्ज कराया। पुलिस के मुताबिक, छात्रा ने बताया कि जब तीन लोगों ने उसका रास्ता रोका, तो उसका दोस्त उसे अकेला छोड़कर चला गया। फिर आरोपियों ने उसका फोन छीन लिया और उसे जंगल में ले गए, जहां तीनों ने उसके साथ रेप किया।आरोपियों ने घटना के बारे में किसी को बताने पर छात्रा को अंजाम भुगतने की धमकी भी दी। फिर उसका मोबाइल फोन वापस करने के लिए पैसे भी मांगे। पुलिस ने बताया कि उन्होंने पीड़ित छात्रा का बयान दर्ज कर लिया है। पुलिस ने बताया कि कल रात पीड़ित की दोस्त से भी पूछताछ की गई है। सीसीटीवी फुटेज की जांच कर रहे हैं। सबूत इकट्ठा करने के लिए एक फोरेंसिक टीम घटनास्थल का दौरा करेगी। अभी तक मामले में किसी आरोपी की पहचान या गिरफ्तारी नहीं हुई है। मेडिकल कॉलेज के कर्मचारियों से भी पूछताछ हो रही है। घटना पर छात्रा के पिता ने कहा- हम आज सुबह यहां आए और पुलिस में शिकायत दर्ज कराई। मैंने सुना था कि कॉलेज अच्छा है, इसलिए अपनी बेटी को यहां मेडिकल की पढ़ाई के लिए भेजा था। कभी नहीं सोचा था कि उसके साथ ऐसा कुछ होगा। यहां सुरक्षा की कोई व्यवस्था नहीं है। पश्चिम बंगाल में मेडिकल स्टूडेंट के साथ गैंगरेप की इस घटना ने 2024 के आरजी कर मामले की यादें ताजा कर दी हैं। कोलकाता स्थित आरजी कर मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल में 8-9 अगस्त की रात एक ट्रेनी डॉक्टर का रेप-मर्डर हुआ था। 9 अगस्त की सुबह डॉक्टर की लाश सेमिनार हॉल में मिली थी। सीसीटीवी फुटेज के आधार पर पुलिस ने संजय रॉय नाम के सिविक वॉलंटियर को अरेस्ट किया था। 20 जनवरी, 2025 को उसे उम्रकैद की सजा सुनाई गई। इस घटना को लेकर कोलकाता समेत देशभर में आक्रोश फैला था। बंगाल में 2 महीने से भी ज्यादा समय तक मेडिकल सेवाएं ठप रही थीं। नेशनल क्राइम रिकॉर्ड्स ब्यूरो ने 30 सितंबर को देश में 2023 के दौरान हुए अपराधों की रिपोर्ट सार्वजनिक की। इस रिपोर्ट के मुताबिक, महिलाओं पर अपराध के मामले में पश्चिम बंगाल देश के टॉप 5 राज्यों में चौथे नंबर पर है। महिलाओं के खिलाफ अपराधों में यूपी, महाराष्ट्र, राजस्थान सबसे आगे हैं। वहीं, पांचवे नंबर पर मध्य प्रदेश है, जहां महिलाएं सबसे ज्यादा अपराध का शिकार हैं। एनसीआरबी ने बताया कि 2023 में महिलाओं के खिलाफ अपराध से जुड़े 4 लाख 48 हजार 211 केस दर्ज हुए, जिसमें सबसे ज्यादा 'पति या रिश्तेदार द्वारा क्रूरता', 'अपहरण', 'बलात्कार' और 'छेड़छाड़' के मामले थे।

10 महीने जेल में रहे नवजोत सिंह सिद्धू,जीवन के तमाम उतार-चढ़ाव के बाद बने रियलिटी शो के मशहूर जज और कमेंटेटर

अमृतसर। क्रिकेट की पिच पर जुनून, राजनीति की गलियों में संघर्ष और टीवी की दुनिया में ठहाकों की गूंज। नवजोत सिंह सिद्धू की जिंदगी किसी फिल्मी कहानी से कम नहीं। एक बल्लेबाज, नेता, टीवी स्टार और प्यार में डूबा जीवनसाथी। सिद्धू ने हर मोड़ पर अपनी अलग पहचान बनाई, लेकिन एक समय ऐसा भी था जब उनके अंदर संवाद की कमजोरी थी और वे बातचीत में थोड़ा शर्मीले थे। यहां तक कि स्कूल में 'छुट्टी' शब्द तक नहीं बोल पाते थे। क्रिकेट से संन्यास लेने के बाद सिद्धू ने कमेंट्री की ओर रुख किया। उनकी कमेंट्री स्टाइल बेहद जोशीली, धाराप्रवाह और मनोरंजक है, जिसके कारण वे कमेंट्री बॉक्स में 'सिक्सर सिद्धू' और 'कमेंट्री बॉक्स के सरदार' के नाम से प्रसिद्ध हुए। उनकी हाजिरजवाबी, प्रेरक बातें और वन-लाइनर लोगों के दिलों तक पहुंचने लगे, जिससे उनका व्यक्तित्व और प्रभाव बढ़ा। नवजोत सिंह सिद्धू की यह कहानी बताती है कि कैसे एक शर्मीला व्यक्ति विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा और मेहनत से चमकता हुआ मशहूर टीवी कमेंटेटर, रियलिटी शो का जज और मोटिवेशनल स्पीकर बन सकता है। उन्होंने अपने जीवन में आए उतार-चढ़ाव को अपने अनुभव के रूप में लिया और अपने व्यक्तित्व को नया रूप दिया। 20 अक्टूबर 1963 को पटियाला, पंजाब में जन्मे नवजोत सिंह सिद्धू का बचपन क्रिकेट के जुनून में बीता। उनके पिता भगवंत सिंह खुद एक मशहूर क्रिकेटर थे, जिनसे सिद्धू ने क्रिकेट का पहला पाठ सीखा। सिद्धू ने अपनी शुरुआती पढ़ाई पटियाला के यदविंद्र पब्लिक स्कूल से की। पढ़ाई के साथ-साथ उनका मन हमेशा क्रिकेट के मैदान में रमता रहा। कॉलेज पहुंचने तक सिद्धू की पहचान एक होनहार बल्लेबाज के रूप में हो चुकी थी। आगे चलकर उन्होंने भारतीय टीम

में जगह बनाकर देश का नाम रोशन किया। सिद्धू की लव स्टोरी भी किसी फिल्मी कहानी से कम नहीं। कॉलेज के दिनों में वह नवजोत कौर से पहली नजर में ही प्यार करने लगे थे। वे घंटों कॉलेज के बाहर धूप में सिर्फ उन्हें देखने खड़े रहते थे। नवजोत कौर उस समय एमबीबीएस की पढ़ाई कर रही थीं। दोनों के बीच धीरे-धीरे दोस्ती हुई और वक्त के साथ रिश्ता गहराता चला गया। लंबे इंतजार और समर्पण के बाद सिद्धू ने उन्हें प्रपोज किया। शादी से पहले सिद्धू ने नवजोत कौर की जन्मपत्री मिलवाई और जब 36 में से पूरे 36 गुण मिले तो दोनों ने शादी कर ली। शादी के बाद सिद्धू और नवजोत कौर दो बच्चों, बेटे करण और बेटी राबिया के माता-पिता बने। नवजोत कौर राजनीति और समाजसेवा में भी सक्रिय रहीं, अमृतसर से विधायक बनकर उन्होंने जनता की सेवा की, लेकिन जीवन में एक वक्त ऐसा आया जब नवजोत को कैंसर ने घेर लिया। उस कठिन समय में सिद्धू ने हर पल उनका साथ निभाया। साल 2023-24 में नवजोत कौर ने कैंसर को मात दी। इस दौरान सिद्धू ने सोशल मीडिया पर अपनी पत्नी के लिए भावुक संदेश लिखे- 'तुम्हारे बिना जीना नहीं आता नोनी।' यह संदेश उनके अटूट प्रेम और साथ निभाने के वादे की मिसाल बन गया। 1983 में वेस्टइंडीज के खिलाफ भारतीय टेस्ट टीम से शुरुआत करने वाले सिद्धू का करियर कई उतार-चढ़ाव से गुजरा। शुरू में उन्हें तकनीकी कमजोरियों के लिए आलोचना मिली, लेकिन 1987 के विश्व कप में पाकिस्तान के खिलाफ उन्होंने लगातार छक्के मारकर 'सिक्सर सिद्धू' का दर्जा पा लिया। इनके नाम 51 टेस्ट और 136 वनडे हैं, जिसमें कई यादगार पारी शामिल हैं। 1999 में अचानक क्रिकेट से संन्यास लेने के बाद उन्होंने कई बार टीम के चयनकर्ताओं और मैनेजमेंट से मतभेद का खुलासा किया। यही चुनौती उन्हें राजनीति और टीवी के सफर पर ले आई। 2004 में बीजेपी के टिकट से अमृतसर से सांसद बने। संसद में शेरो-शायरी और आक्रामक भाषण से उनको अलग पहचान मिली। 2016 में बीजेपी छोड़कर कांग्रेस में शामिल हुए, 2017 में पंजाब सरकार में मंत्री बने। पार्टी के भीतर मतभेदों ने भी कई बार सुर्खियां बटोरीं। क्रिकेट से संन्यास के बाद टीवी पर कमेंटेटर के तौर पर नई पारी शुरू हुई। उनके वन-लाइनर्स, जोश और हिंदी शायरी दर्शकों को भा गई। 'द ग्रेट इंडियन लाफ्टर चैलेंज' और 'कॉमेडी नाइट्स विद कपिल' में उनकी मौजूदगी ने शो को एक अलग ऊंचाई दी। कपिल शर्मा शो में उनकी ठहाकों की सीट लोगों में लोकप्रिय थी। 2019 में पुलवामा हमले के बाद सिद्धू के बयान को लेकर विवाद हुआ। जनता के दबाव में उन्हें शो से निकालना पड़ा। उनकी कुर्सी पर अर्चना पूरन सिंह आईं, जिन्होंने सिद्धू की जगह ली और आज तक शो की जान बनी हुई हैं। सिद्धू के लिए यह बड़ा झटका था। टेलीविजन की दुनिया में वापसी सिद्धू ने जज के रूप में 'इंडियाज गॉट टैलेंट' से की। शो के दौरान उन्होंने संघर्ष को याद करते हुए कहा–'गिरना जरूरी है, तभी उठना आता है।' यह शो सिद्धू की हंसी, शेरो-शायरी और आत्मविश्वास से भरी वापसी है। सिद्धू कहते हैं- अगर मुझे एक घंटा बोलना हो तो मैं एक मिनट भी तैयारी नहीं करता, लेकिन आधे घंटे के लिए दस मिनट और तीन मिनट के लिए पूरा एक घंटा तैयारी करता हूं। सही शब्द चुनना और कम शब्दों में बात को साफ कहना ही कमेंट्री की ताकत है। कई बार एक लाइन पूरी कहानी बयान कर देती है। यह हुनर किताबों से नहीं आता, यह तब आता है जब आप खुद को समझते हैं। जैसे सागर मंथन से अमृत निकलता है, वैसे ही ध्यान और अभ्यास से भीतर की शक्ति जागती है। जो कुछ ब्रह्मांड में है, वह हमारे भीतर भी है। लोग बाहर भटकते हैं, जबकि असली जवाब भीतर छुपा है- जैसे कस्तूरी मृग अपनी नाभि की खुशबू के लिए जंगलों में फिरता है। 36 साल क्रिकेट खेलने के बाद मैंने अपने खान-पान को अनुशासित किया, मन को गुलाम बनाने वाली आदतों को चैनलाइज किया और योगी बन गया। इंद्रियां बहुत प्रबल हैं, लोग दिखावे में खोए रहते हैं, लेकिन मैं भीतर उतरा हूं। असली ताकत हर इंसान के अंदर है, बस ढूंढनी पड़ती है। पहले मन उलझन और नकारात्मक सोच में फंसा था। स्वामी विवेकानंद को पढ़कर समझ आया कि असली सुख भीतर है। वही लड़का जो स्कूल के सामने 'छुट्टी' शब्द तक नहीं बोल पाता था, आज लाखों लोगों के सामने बोलता है। मन शांत हो तो जिंदगी सुंदर दिखती है। झील का पानी स्थिर हो तो चांद की परछाई साफ दिखती है, वही हाल मन का है। जिंदगी जल्दबाजी से नहीं मिलती, शांति में जीनी पड़ती है। लोग बाहर से मुझे वन-लाइनर, शायरी और एंटरटेनमेंट के लिए पहचानते हैं, लेकिन भीतर की शांति और गहराई को कम लोग देखते हैं। योगी अंदर से जागरूक और संतुलित होता है। तीन महीने नाड़ी शोधन करें तो शरीर हल्का हो जाएगा, चेहरा दमकने लगेगा और मन शांत रहेगा। मेरी सबसे बड़ी ताकत है मां पार्वती का प्यार। संगत का असर सबसे गहरा होता है। जैसे लकड़ी में लोहे का कील डाल दो तो वो लंबे समय तक तैरेगी, वैसे ही सही संगत जीवन को ऊंचा उठाती है। बाबा नानक की क्षमा, महावीर का धैर्य, करोड़ों में एक को मिलती है। जब यह अवस्था आए तो किसी चीज की कमी या डर नहीं रहता। दुनिया में सबसे बड़ा डर असफलता का है। डर दूर करना है तो पल में जीना सीखो। कल का पछतावा और कल की चिंता आज का मौका छीन लेते हैं। राहुल द्रविड़ ने कहा था- 'एक गेंद पर ध्यान दो, पूरी पारी नहीं।' नवजोत सिंह सिद्धू को 1988 के एक विवादित रोड रेज केस में सुप्रीम कोर्ट ने एक साल की सजा सुनाई थी।

सिंगर जुबीन गर्ग मौत केस में चचेरा भाई गिरफ्तार,असम पुलिस में हैं डीएसपी

गुवाहाटी। सिंगर जुबीन गर्ग की मौत के मामले में बुधवार को असम पुलिस के डीएसपी संदीपन गर्ग को अरेस्ट किया गया है। संदीपन, सिंगर के चचेरे भाई हैं। हादसे के वक्त वह सिंगापुर में साथ थे। अधिकारी ने बताया कि संदीपन से जुबीन की मौत के सिलसिले में पिछले कुछ दिनों से पूछताछ की जा रही है। उनके खिलाफ गैर इरादतन हत्या, आपराधिक षड़यंत्र और लापरवाही से मौत का कारण बनने का केस दर्ज किया गया है। जुबीन की मौत के मामले में यह पांचवीं गिरफ्तारी है। इससे पहले, नॉर्थ ईस्ट इंडिया फेस्टिवल के मुख्य आयोजक श्यामकानु महंत, गायक के मैनेजर सिद्धार्थ शर्मा और उनके दो बैंड सदस्यों - शेखर ज्योति गोस्वामी और अमृत प्रभा महंत को अरेस्ट किया गया था। जुबीन गर्ग का निधन सिंगापुर में 19 सितंबर को हुआ था। सिंगर 20 सितंबर को होने वाले नॉर्थ ईस्ट इंडिया फेस्टिवल के लिए सिंगापुर गए हुए थे, जहां उन्होंने वाटर स्पोर्ट्स एक्टिविटी में हिस्सा लिया था। दावा किया गया कि उनकी मौत स्कूबा डाइविंग के दौरान एक हादसे में हुई थी। सिंगर जुबीन गर्ग की मौत के मामले में गिरफ्तार उनके बैंडमेट (साथी सिंगर) शेखर ज्योति गोस्वामी ने 4 अक्टूबर को दावा किया था कि सिंगर के मैनेजर सिद्धार्थ शर्मा और इवेंट ऑर्गनाइजर श्यामकनु महंत ने उन्हें जहर दिया था। दोनों ने हत्या को हादसा दिखाने की साजिश रची थी। बैंडमेट गोस्वामी के 4 दावे- हम सभी 19 सितंबर को समुद्र में एक याट पर गए थे। शर्मा के कंट्रोल में लेने के बाद याट समुद्र में खतरनाक तरीके से हिलने लगी थी।। सभी की जान जोखिम में पड़ गई थी। उन्होंने यह भी कहा कि शर्मा ने असम एसोसिएशन (सिंगापुर) के सदस्य और NRI तन्मॉय फुकन को ड्रिंक की व्यवस्था न करने को कहा और खुद ही सभी ड्रिंक्स देने की बात कही। जब जुबीन को सांस लेने में दिक्कत हो रही थी और वो लगभग डूब रहे थे, तब शर्मा चिल्लाते हुए सुने गए, 'जाबो दे, जाबो दे' (जाने दो, जाने दो)। जुबीन ट्रेंड स्विमर था। उसने मुझे और शर्मा को भी तैरना सिखाया था, इसलिए उनकी मौत डूबने से नहीं हो सकती। शर्मा और महंत दोनों ने सिंगर को जहर दिया और साजिश छुपाने के लिए सिंगापुर को चुना। शर्मा ने मुझे याट के किसी भी वीडियो को किसी के साथ शेयर न करने के लिए कहा था। स्पेशल इन्वेस्टिगेशन टीम ने बताया कि जुबीन की मौत के मामले में अब तक राज्य में 10 लोगों के खिलाफ 60 से ज्यादा एफआईआर दर्ज की गई हैं। स्पेशल डीजीपी गुप्ता ने बताया कि सिंगापुर में की गई पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट प्रोटोकॉल के अनुसार परिवार को दी जाएगी। सिंगापुर की जांच टीम ने भी काम किया। उन्होंने परिवार से संपर्क भी किया है। वहीं, गुवाहाटी में किए गए दूसरे पोस्टमॉर्टम की रिपोर्ट का इंतजार है। विसरा सैंपल को डिटेल जांच के लिए दिल्ली के सेंट्रल फोरेंसिक लैब भेजा गया है। गुप्ता ने कहा कि विसरा रिपोर्ट मिलने के बाद पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट तैयार और हमारे पास उपलब्ध हो जाएगी। मृत्यु की असली वजह जानने के लिए पोस्टमॉर्टम के दौरान शरीर के आंतरिक अंगों जैसे आंत, लिवर, किडनी से लिए जाने वाले नमूने विसरा सैंपल कहलाते हैं। पुलिस अधिकारी ने कहा था कि हमें आरोपियों के खिलाफ कुछ सबूत मिले हैं। इसलिए आगे जांच के लिए उनकी गिरफ्तारी जरूरी थी।

हाई हील्स से टेढ़े हो सकते हैं पैर,दुनिया के 23फीसदी लोगों को बूनियन डिजीज

नयी दिल्ली। बूनियन पैरों की एक कॉमन समस्या है, जिसमें पैर के अंगूठे के पास हड्डी जैसा उभार आ जाता है। अंगूठा उंगलियों की तरफ मुड़ जाता है। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ में पब्लिश एक स्टडी के मुताबिक, पूरी दुनिया में लगभग 23फीसदी एडल्ट्स को यह समस्या है। महिलाओं में यह खतरा पुरुषों की अपेक्षा 2 से 10 गुना ज्यादा होता है। टाइट और पॉइंटेड शूज, खासकर हाई हील्स पहनने से पैरों पर दबाव पड़ता है। अगर समय पर ध्यान न दिया जाए, तो यह दर्दनाक हो सकता है। चलने में तकलीफ, जूते पहनने में परेशानी और यहां तक कि आस्टियोआर्थराइटिस भी हो सकता है। बूनियन कोई नई समस्या नहीं है। यह जेनेटिक कारणों से भी हो सकता है या फिर गलत जूते-चप्पल पहनने से हो सकता है। हालांकि, सही जूते चुनकर, एक्सरसाइज करके और डॉक्टर की सलाह से इसे मैनेज किया जा सकता है। आज बूनियन डिजीज के बारे में बात करेंगे। साथ ही जानेंगे कि- बूनियन क्या है और इसे कैसे पहचानें? यह क्यों होता है और इसके खतरे क्या हैं? इसे कैसे मैनेज करें और कैसे इलाज करें? बूनियन क्या है? बूनियन पैर के बड़े अंगूठे के जोड़ पर होने वाला एक उभार है। यह हड्डी की गांठ जैसा बन जाता है, जो पैर के अंदर की तरफ बढ़ता है। मेडिसिन की भाषा में इसे हेलक्स वैल्गस भी कहते हैं। अंगूठे पर बूनियन सबसे कॉमन है। इसमें अंगूठे के आधार पर उभार हो जाता है। हालांकि, बूनियन सिर्फ अंगूठे में नहीं, छोटी उंगली में भी हो सकता है। यह जन्म से, टीनएज में या उम्र बढ़ने पर धीरे-धीरे विकसित होता है। बूनियनेटः छोटी उंगली के आधार पर, टाइट जूतों से। कॉन्जेनाइटल बूनियनः जन्म से ही बच्चों में।जुवेनाइल बूनियनः 18 साल से कम उम्र में। बूनियन को कैसे पहचानेंगे? बूनियन की शुरुआत धीमी होती है। पहले तो बस हल्का उभार नजर आता है, लेकिन धीरे-धीरे दर्द बढ़ता जाता है। अगर आपका बड़ा अंगूठा दूसरी उंगलियों की तरफ मुड़ रहा है, या जूते पहनने पर रगड़ लगती है, तो सावधान हो जाएं। कई लोग सोचते हैं कि यह

X-ray

Bunion Deformity

बस थकान है, लेकिन असल में यह बूनियन का संकेत हो सकता है। लक्षणों को इग्नोर न करें, क्योंकि समय के साथ यह बदतर हो जाता है। चलने में लंगड़ाहट आ सकती है, या पैर सुन्न पड़ सकते हैं। महिलाएं ज्यादा प्रभावित होती हैं, क्योंकि फैशन के चक्कर में वे असुविधाजनक जूते चुनती हैं। एक दोस्त ने बताया कि उसकी मां को हाई हील्स की वजह से इतना दर्द हुआ कि वे घर पर भी चप्पल नहीं पहन पाती थीं। बूनियन कोई एक वजह से नहीं होता। कई फैक्टर मिलकर इसे ट्रिगर करते हैं। सबसे बड़ी वजह है गलत जूते। हाई हील्स या नुकीले टिप वाले शूज पैरों पर अतिरिक्त दबाव डालते हैं, जिससे अंगूठा अपनी जगह से हट जाता है। जेनेटिक्स भी रोल प्ले करता है- अगर परिवार में किसी को है, तो आपको भी हो सकता है। इसके अलावा, पैर की बनावट, जैसे फ्लैट फुट या हाई आर्च, खतरा बढ़ाते हैं। गठिया जैसी बीमारियां, चोट लगना या ज्यादा देर खड़े रहना भी कारण बन सकता है। महिलाओं में हॉर्मोनल बदलाव, जैसे प्रेग्नेंसी, इसे और खराब कर देते हैं। एक स्टडी कहती है कि 70इ से ज्यादा मामलों में फैमिली हिस्ट्री जुड़ी होती है। सो, अगर आपका वजन ज्यादा है या काम ऐसा है कि पैरों पर जोर पड़ता है, तो सतर्क रहें। अगर बूनियन का इलाज न किया जाए, तो यह सिर्फ दर्द तक सीमित नहीं रहता। यह बर्साइटिस का कारण बन सकता है, जिसमें जोड़ों के आसपास सूजन आ जाती है। हैमर-टो की समस्या हो सकती है, जहां उंगलियां मुड़ जाती हैं। लंबे समय में आस्टियोआर्थराइटिस हो सकता है, जो जोड़ों को कमजोर कर देता है। चलना-फिरना मुश्किल हो जाता है, और रोजमर्रा के काम प्रभावित होते हैं। कुछ मामलों में पैर सुन्न पड़ जाते हैं या इन्फेक्शन का खतरा बढ़ जाता है। इसलिए, शुरू में ही डॉक्टर से मिलें। मेरी सलाह है कि दर्द को नजरअंदाज न करें, क्योंकि बाद में सर्जरी की नौबत आ सकती है। डॉक्टर पहले पैर की जांच करते हैं। वे उभार देखते हैं, दर्द पूछते हैं और चलने का तरीका चेक करते हैं। अगर जरूरी हो, तो एक्स-रे करवाते हैं, जो हड्डियों की एलाइन्मेंट दिखाता है। किसी पोडियाट्रिस्ट से मिलना अच्छा रहता है। वे बताते हैं कि समस्या कितनी गंभीर है। ज्यादातर मामलों में सर्जरी की जरूरत नहीं पड़ती है। शुरू में लाइफस्टाइल बदलाव से ही कंट्रोल हो जाता है। सबसे पहले जूते बदलें- चौड़े और आरामदायक शूज चुनें, जिनमें टो बॉक्स बड़ा हो। बूनियन पैड्स या टेपिंग से दबाव कम करें। दर्द कम करने के लिए डॉक्टर से पूछकर पेन किलर ले सकते हैं। बर्फ से सिंकाई करें, इससे सूजन कम होती है। ऑर्थोटिक्स (शू इंसर्ट) पैरों को सपोर्ट देते हैं। फिजिकल थेरेपी से एक्सरसाइज सीखें, जो पैरों को मजबूत बनाती हैं। अगर दर्द बहुत ज्यादा है, तो कोरटीकोस्टरॉयड इंजेक्शन लगवाएं। अगर ये सब काम न करें, तो सर्जरी ऑप्शन हो सकता है। इसमें हड्डी को सही जगह पर लाया जाता है। सर्जरी के बाद 2-3 महीने में नॉर्मल लाइफ पर लौट सकते हैं। लेकिन सर्जरी आखिरी विकल्प है। प्रिवेंशन इलाज से बेहतर है। सही जूते चुनें- नुकीले या टाइट वाले अवॉइड करें। दिन के अंत में जूते ट्राई करें, क्योंकि पैर थोड़े सूज जाते हैं। अगर पैरों में कोई समस्या है, जैसे फ्लैट फुट, तो ऑर्थोटिक्स यूज करें। वजन कंट्रोल में रखें, क्योंकि एक्स्ट्रा वेट पैरों पर दबाव डालता है। रोज पैरों की एक्सरसाइज करें, जैसे अंगूठे को स्ट्रेच करना। महिलाएं हाई हील्स कम पहनें, और अगर पहनें तो ज्यादा देर न रहें। बच्चों में अगर संकेत दिखें, तो जल्दी डॉक्टर दिखाएं। सवालः क्या बूनियन अपने आप ठीक हो सकता है? जवाबः नहीं, बूनियन खुद से नहीं जाता। लेकिन सही मैनेजमेंट से लक्षण कंट्रोल हो सकते हैं। डॉक्टर से मिलें। सवालः महिलाओं को यह समस्या ज्यादा क्यों होती है? जवाबः महिलाएं हाई हील्स और टाइट शूज ज्यादा पहनती हैं, जो पैरों पर दबाव डालते हैं। हॉर्मोनल बदलाव भी रोल प्ले करते हैं। सवालः सर्जरी कब जरूरी होती है? जवाबः जब दर्द बहुत ज्यादा हो, चलना मुश्किल हो या अन्य तरीके काम न करें। डॉक्टर तय करेंगे। सवालः बूनियन से बचने के लिए क्या करें?जवाबः आरामदायक जूते पहनें, वजन कंट्रोल रखें, पैरों को रेस्ट दें और एक्सरसाइज करें। अगर फैमिली हिस्ट्री है, तो रेगुलर चेकअप करवाएं। बूनियन कोई बड़ी बीमारी नहीं, लेकिन इग्नोर करने से परेशानी बढ़ सकती है। सही जानकारी और छोटे बदलाव से इसे मैनेज कर सकते हैं। अगर लक्षण दिखें, तो डॉक्टर से बात करें। पैरों की सेहत अच्छी रखें, क्योंकि ये हमें हर कदम पर साथ देते हैं।

बॉयफ्रेंड पजेसिव था तो ब्रेकअप कर लिया,अब वो अमीर हो गया है तो उसे मिस कर रही हूं, क्या मेरी फीलिंग सही है?

नयी दिल्ली। मामले को समझेंगे एक्सपर्टः डॉ. जया सुकुल, क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट, नोएडा से सवाल जवाब के माध्यम से सवाल- मैं 28 साल की हूं और करीब दो साल तक एक रिलेशनशिप में थी। मैंने उस रिश्ते को निभाने की बहुत कोशिश की, लेकिन बात नहीं बनी। मेरा बॉयफ्रेंड मुझसे बहुत प्यार करता था, लेकिन वो जरूरत से ज्यादा ही प्रोटेक्टिव और शक्की मिजाज था। वो हर वक्त यह जानना चाहता था कि मैं कहां हूं, किससे बात कर रही हूं, क्या पहन रही हूं, यहां तक कि सोशल मीडिया पर किससे कनेक्ट हूं। धीरे-धीरे मुझे लगने लगा कि ये प्यार नहीं, एक तरह का कंट्रोल है। कई बार हमने इस बात को लेकर बहस की, पर कुछ सुधरा नहीं। आखिरकार मैंने ब्रेकअप कर लिया। ब्रेकअप के बाद भी मैं पूरी तरह उबर नहीं पाई। मैं कभी-कभी उसकी इंस्टाग्राम प्रोफाइल देखती थी। कुछ दिन पहले मुझे पता चला कि उसने लैंड रोवर गाड़ी खरीदी है। पता चला कि उसकी फैमिली के जो खेत थे, वहां से हाईवे निकला है। पहले वो एक साधारण मिडिल क्लास लड़का था, लेकिन अब रातोंरात करोड़पति हो गया है। उसके

इंस्टाग्राम से पता चलता है कि वो काफी एलीट लाइफ स्टाइल इंजॉय कर रहा है। आए दिन क्लबिंग और पार्टी चल रही है। ये जानकर मन में अजीब-सा अफसोस हुआ। अब जब वो इतना अमीर हो गया है तो मैं उसकी जिंदगी में नहीं हूं। मुझे समझ नहीं आ रहा है- क्या मैं उसे सच में मिस कर रही हूं या फिर उसके अमीर होने की खबर से मुझे दुख हो रहा है। क्या ये फीलिंग्स नॉर्मल हैं? क्या मुझे उससे माफी मांगकर दोबारा कोशिश करनी चाहिए? जवाबः सबसे पहले तो ये जान लीजिए कि आप अकेली नहीं हैं। आपने जो महसूस किया और जो सवाल पूछे, वो बहुत से लोग अपने दिल में सोचते हैं। 28 साल की उम्र में आपने दो साल तक एक रिश्ते को दिल से निभाया। ये आसान नहीं होता, खासकर तब जब वो रिश्ता आपको खुशी की जगह घुटन देने लगे। आपने हिम्मत दिखाई और खुद को उस टॉक्सिक रिलेशनशिप से बाहर निकाला, ये बहुत बड़ी बात है। अपने लिए ऐसा फैसला लेना हर किसी के बस की बात नहीं होती। अब जो आप महसूस कर रही हैं- वो बेचैनी, वो अफसोस ये सब इंसान होने की निशानी है। जब हम किसी के साथ इतना वक्त बिताते हैं और फिर वो हमारी जिंदगी से चला जाता है, तो उसकी लाइफ के अपडेट्स सुनकर मन में उथल-पुथल होना आम बात है। खासकर तब, जब वो इंसान अचानक बहुत आगे बढ़ जाता है। क्या आप सच में उसे मिस कर रही हैं या कुछ और है? हम सब अच्छी जिंदगी के सपने देखते हैं। ऐसी जिंदगी, जिसमें पैसों की टेंशन न हो, शानदार गाड़ियां हों, छुट्टियों की प्लानिंग हो और हर दिन खुशी से बीत रहा हो। जब आप अपने एक्स की नई जिंदगी देखती हैं, उसकी लैंड रोवर, उसकी पार्टियां, तो शायद आपको लगता है कि काश, मैं भी उसकी जिंदगी का हिस्सा होती। ये सोचना बिल्कुल नॉर्मल है। लेकिन सवाल ये है कि क्या आप उसे सचमुच मिस कर रही हैं या उसकी नई चमक-दमक को? अगर वो आज भी वही मिडिल-क्लास लड़का होता, जिसके पास न गाड़ी होती, न पैसे होते तो क्या तब भी आप उसे इतना याद करतीं? शायद नहीं। इसलिए हो सकता है कि आपका दुख उसके जाने का कम और उसकी नई जिंदगी का हिस्सा न होने का ज्यादा हो। आपने जो बताया, उससे यह स्पष्ट है कि वो रिश्ता आपके लिए सही नहीं था। प्यार में इंसान को अपने पार्टनर की फिक्र होती है, पर किसी को हर कदम पर कंट्रोल करना प्यार नहीं होता। वो हर वक्त आप पर नजर रखता था, कहां जा रही हो, क्या पहन रही हो, किससे बात कर रही हो। ये सब सुनने में प्यार जैसा लग सकता है, पर असल में ये घुटन की तरह महसूस होता है।

महानायक हुए 83 वर्ष के,अमिताभ को पिता की आत्मा मानते थे हरिवंशराय,पिता से पूछा था- आपने मुझे पैदा क्यों किया

मुंबई। 10 अक्टूबर 1941, अमिताभ बच्चन के जन्म से ठीक एक साल एक दिन पहले की तारीख थी। हरिवंशराय बच्चन की जिंदगी में दुखों का पहाड़ टूट पड़ा। लंबी बीमारी से

पिता प्रताप नारायण श्रीवास्तव चल बसे। मां ने उसी दिन जीने की इच्छा खत्म कर दी। हरिवंशराय बच्चन, पहली पत्नी श्यामा को भी टीबी से खो चुके थे। जीते जी पिता लगातार उन्हें दूसरी शादी के लिए मनाते रहे, लेकिन वो दोबारा घर न बसाने की जिद पर अड़े रहे। यही वजह रही कि उनकी पिता से ज्यादा बनती न थी, लेकिन पिता के गुजर जाने के बाद उन्हें उनकी कही आखिरी बात याद रही कि 'बेटा मैं मरने से पहले तुम्हें सुखी देखना चाहता हूं।' यहां सुखी देखने का अर्थ उनकी शादी से था। पिता के गुजर जाने के बाद घर में अजीब सन्नाटा पसर गया, लेकिन अब भी उनका मन घर बसाने का न था। लेकिन एक रोज इत्तेफाकन उनकी मिस तेजी सूरी (अमिताभ बच्चन की मां) से मुलाकात हो गई। तेजी 1941 में लाहौर के फतेहचंद कॉलेज में साइकोलॉजी पढ़ाती थीं। उस समय हरिवंश राय साहब कॉलेज में पढ़ाई के साथ अपनी छपी हुईं मधुशाला जैसी किताबों और लेखन के लिए मशहूर थे। दोनों ही अब तक एक दूसरे के अस्तित्व से अनजान थे। एक शाम लाहौर में महफिल जमी, जहां कुछ स्टूडेंट्स ने हरिवंशराय बच्चन से कुछ पंक्तियां सुनाने को कहा। उनके दोस्त प्रकाश की पत्नी प्रेमा ने आवाज देकर अपनी सहेली तेजी को भी कविता सुनने बुला लिया। हरिवंश राय ने जैसे ही कविता खत्म की, मिस तेजी सूरी के आंसू बहने लगे। और ये आंसू ही दोनों के ताउम्र रिश्ते के कारण बने। तेजी से चंद बातें करने के बाद हरिवंशराय बच्चन ने कभी शादी न करने का मन एक झटके में बदल लिया। वहीं, तेजी ने अपनी सगाई तोड़कर हरिवंशराय बच्चन से जनवरी 1941 में सिविल मैरिज की। चंद महीनों में तेजी ने खुशखबरी सुना दी कि वो जल्द मां बनने वाली हैं।हरिवंशराय बच्चन के करीबी दोस्त सुमित्रानंदन पंत अल्मोड़ा से काम के सिलसिले में इलाहाबाद (अब प्रयागराज) आए थे। हरिवंशराय और तेजी बच्चन ने दबाव बनाकर उन्हें अपने ही घर में ठहरा लिया। इस दिन हरिवंशराय बच्चन के पिता की पहली बरसी थी। रात को देर तक बात करने के बाद सभी सोने चल दिए। हरिवंशराय गहरी नींद में थे। उन्होंने ख्वाब देखा कि उनके चक वाले पुश्तैनी घर की पूजा की कोठरी में उनके दिवंगत पिताजी चश्मा लगाए रामचरितमानस लिए पढ़ रहे हैं। वो पत्नी तेजी के साथ वहीं पास बैठे सुन रहे हैं। पिता पांचवें विश्राम पाठ में थे, जिसमें मनु और उनकी पत्नी शतरूपा की तपस्या से खुश होकर भगवान विष्णु प्रकट होते हैं। दोनों उनसे वरदान मांगते हैं-"चाहउं तुम्हहि समान सुत' (मैं तुम्हारे समान पुत्र चाहता हूं)।' इतने में तेजी ने उन्हें नींद से जगा दिया। उन्हें प्रसव पीड़ा होने लगी थी। पत्नी दर्द में थी, लेकिन हरिवंशराय बच्चन का सपना इतना साफ था कि वो बिना सुनाए रह न सके। उन्होंने झट से पत्नी से कहा- 'तेजी तुम्हें लड़का ही होगा, उसके रूप में मेरे पिताजी की आत्मा आ रही है।'कुछ ही घंटों बाद यानी 11 अक्टूबर 1942 को तेजी बच्चन ने बेटे को जन्म दिया। सुमित्रानंदन पंत जब शाम को घर लौटे तो जच्चा-बच्चा से मिलने के बाद उन्होंने उस बच्चे को अमिताभ नाम दिया। पुत्र सुख प्राप्त कर हरिवंशराय बच्चन ने कविता लिखी-'फुल्ल कमल, गोद नवल, मोद नवल, गेह में विनोद नवल। बाल नवल, लाल नवल, दीपक में ज्वाल नवल । (खिला हुआ कमल नया है, गोद में बालक नया है, हर्ष नया है, घर में आनंद नया है। बालक नया है, लाल (पुत्र) नया है, जैसे दीपक में नई ज्योति जल उठी हो।)' जिस बच्चे के जन्म से पहले उनके पिता ने भविष्यवाणी की, जिसके जन्म पर पिता ने कविता लिख डाली, वो बच्चा आज सदी का महानायक है। उसने पिता की कविताओं के जरिए अपनी जिंदगी में नाकामी, कामयाबी का सार खोजा और उससे सीख ली। अमिताभ जब एक साल के हुए तो मां ने अंग्रेजी में एम.ए. में दाखिला ले लिया। चंद महीने बीते ही थे कि बेटे का स्वास्थ्य गिरने लगा, तो मां ने पढ़ाई छोड़ दी। इसी समय हरिवंशराय बच्चन को यूनिवर्सिटी ऑफिसर्स की एक ट्रेनिंग के सिलसिले में महू जाना पड़ा, तो उनके पीछे तेजी ने अमिताभ को अकेले संभाला। एक रोज हरिवंशराय बच्चन को तेजी का खत मिला, जिसमें उन्होंने कहा कि बेटे अमिताभ को मलेरिया हो गया है। बेटे की फिक्र में वो बस खतों का इंतजार करते रहते। आने वाले खतों में बस यही लिखा होता था कि अमिताभ का स्वास्थ्य ठीक होने के बजाय दिन-ब-दिन बिगड़ता जा रहा है। हरिवंशराय बच्चन को हमेशा डर लगा रहता था कि कहीं अगले खत में कोई अनहोनी की खबर न आ जाए। इसी समय साथियों के दबाव में हरिवंशराय बच्चन ने शराब पीनी शुरू कर दी। एक रोज उन्हें ख्याल आया कि जब बाबर को इस तरह चुनौतियां मिली होंगी तो उसने क्या किया होगा। पानीपत की लड़ाई में जब उसे लगा कि उसे हार मिलने वाली है, तब उसने प्रण किया कि अगर जीत हुई तो कभी शराब नहीं पियूंगा। जीत हुई तो बाबर ने शराब छोड़ दी। कहीं न कहीं हरिवंश जानते थे कि बाबर के जंग जीतने और शराब छोड़ने का कोई भौतिक संबंध न था, लेकिन फिर भी पुत्र की बीमारी से चिंतित होकर उन्होंने एक रोज प्रण कर लिया कि अमित (अमिताभ) अगर स्वस्थ हो जाए तो वो कभी शराब न पिएंगे। तेजी ने जब अगला खत लिखा तो उसमें लिखा कि अमित की तबीयत में सुधार आ रहा है। उन्होंने इसका श्रेय अपने त्याग को दिया और जब अगले खत में उन्हें पता चला कि बेटा स्वस्थ हो गया तो फिर उन्होंने ताउम्र शराब को छुआ तक नहीं।अमिताभ 4 साल के हुए तो उनका दाखिला स्ट्रेची रोड, इलाहाबाद के बंगले के पास स्थित सेंट मैरीज कॉन्वेंट स्कूल में करवाया गया। हरिवंशराय बच्चन ने खुद सरकारी स्कूल में पढ़ाई की थी, जहां उनकी फीस एक पैसे थी, लेकिन पत्नी तेजी ने कॉन्वेंट से पढ़ाई की तो वो चाहती थीं बेटा भी कॉन्वेंट में पढ़े, चाहे फीस कितनी भी हो। तेजी की जीत हुई और कॉन्वेंट स्कूल में अमिताभ की महीने की फीस 15 रुपए रही। हरिवंशराय बच्चन के लिए फीस ज्यादा थी, लेकिन जिस तरह अमिताभ ने पढ़ाई में और सीखने में रुचि दिखाई, उससे उन्हें कभी महसूस नहीं हुआ कि ये फीस बेकार गई। स्कूल में बेटे अमिताभ का नाम लिखवाते हुए हरिवंशराय बच्चन ने एक नई उम्मीद पाल ली। वो और तेजी कास्ट सिस्टम के खिलाफ थे। हरिवंशराय का सरनेम वैसे तो श्रीवास्तव था, लेकिन एक बार कैंब्रिज यूनिवर्सिटी में उन्होंने बच्चन शब्द का प्रयोग किया और फिर उन्होंने अपनी सारी किताबें बच्चन (बच्चों सा) नाम

से छापीं। एक समय ऐसा आया, जब लोग उन्हें मिस्टर बच्चन कहने लगे और उनकी पत्नी को मिसेज बच्चन। हरिवंशराय बच्चन चाहते थे कि उनके परिवार की हर पीढ़ी पुरानी रूढ़ियां तोड़कर आगे बढ़े, अकेलेपन को बल बनाए और किसी भारी-भरकम सरनेम से मिली पहचान में न सिमटे। यही वजह रही कि हरिवंशराय ने बेटे का पूरा नाम स्कूल में अमिताभ बच्चन रख दिया। वो इसे नए परिवार का प्रारंभ कहते हैं। क्योंकि अमिताभ बच्चन का जन्म महात्मा गांधी द्वारा शुरू की गई अगस्त क्रांति के ठीक तीन महीने बाद हुआ था, तो सुमित्रानंदन पंत उन्हें इंकलाब कहते थे। 1946 में जब अमिताभ के छोटे भाई का जन्म हुआ तो भी पंत जी ने ही उसका नाम अजिताभ रखा। अजिताभ का जन्म आजादी से तीन माह पहले हुआ तो पंत जी उन्हें भी आजाद कहा करते थे, लेकिन आम दिनों में वो अजिताभ का परिचय, अमिताभ का छोटा भाई कहकर करवाते थे।मां और पिता ने अमिताभ को जिंदगी के हर मोड़ पर सीख दी। इनमें से एक थी, अपने दुश्मनों का सामना करना, चाहे वो आपसे ताकतवर क्यों न हों। एक रोज अमिताभ खेलने, घर से निकले और घर के आसपास के बड़े लड़कों से मार खाकर घर लौटे। मां ने देखा, तो वो खूब गुस्सा हुईं, उन लड़कों पर नहीं, अपने बेटे पर। तेजी ने उन्हें चिल्लाते हुए कहा, 'जाओ और जिसने पीटा, उसे पीटकर आओ।'छरहरा शरीर लिए मां की बात पर अमिताभ निकल पड़े और इस बार उन लड़कों की पिटाई कर लौटे। अमिताभ की परवरिश वैसी ही हुई, जैसे हर आम बच्चे की होती है। अच्छा काम करने पर तारीफें भी मिलीं और बदमाशी करने पर मार भी पड़ती थी। बारिश के मौसम में अमिताभ आस-पड़ोस के बच्चों के साथ खूब भीगा करते थे। एक रोज वो ऐसे भीगे कि पूरा कीचड़ साथ में समेट लाए। जैसे ही मां-बाबूजी घर पहुंचे तो जमकर डांट पड़ी, जिसे अमिताभ बच्चन अपनी जिंदगी की सबसे तेज डांट कहते हैं। मां ने गलती पर दुलार नहीं किया और नन्हे हाथों वाले अमिताभ से ही पूरा फर्श साफ करवाया। ठीक इसी तरह एक रोज अमिताभ बच्चन बदमाशी करते हुए एक दुकान से बिना बताए रबर उठा लाए। दुकानवाला तो समझ न सका, लेकिन घर आकर जब मां ने देखा तो गुस्से में आग बबूला हो गईं। उनके लिए छोटी हो या बड़ी, चोरी तो चोरी थी। उन्होंने बेंत (सहारा लेकर चलने वाली लकड़ी) उठाई और बेटे की तब तक पिटाई की जब तक बेंत टूट न गई। शीला झुनझुनवाला की किताब के अनुसार,

इस पिटाई से अमिताभ के शरीर पर सूजन आ गई थी। इलाहाबाद (अब प्रयागराज) में शुरुआती पढ़ाई के बाद अमिताभ का दाखिला नैनीताल के शेरवुड कॉलेज में करवाया गया। स्कूल में एनुअल प्ले होता था, जिसमें वो पूरे जोश के साथ भाग लेते थे। अभिनय की कला अमिताभ को मां तेजी बच्चन से मिली थी। वो भी नाटकों में हिस्सा लेती थीं और हिंदी सिनेमा से जुड़ना चाहती थीं, लेकिन पहले पढ़ाई, फिर नौकरी और फिर शादी में व्यस्त होने के चलते उन्हें ये ख्वाहिश अधूरी छोड़नी पड़ी। अमिताभ ने एनुअल प्ले में हिस्सा लिया तो उन्हें पहले ही साल बेस्ट एक्टर का अवॉर्ड मिला। अगले साल जब एनुअल डे हुआ तो अमिताभ ने फिर इसमें हिस्सा लिया, पूरी उम्मीद थी कि इस साल भी वही जीतेंगे, लेकिन परफॉर्मेंस से ठीक एक दिन पहले वो ऐसे बीमार पड़े कि उन्हें अस्पताल पहुंचाना पड़ा। इस समय उन्हें बीमारी से ज्यादा प्रतियोगिता न जीत पाने का अफसोस था। बाबूजी हरिवंशराय बच्चन जब उनसे मिलने पहुंचे तो बेटे का चेहरा देख वो भांप गए। इस समय अमिताभ को बाबूजी से पहली और जिंदगी की सबसे कीमती सीख मिली। पिताजी ने बड़े प्यार से कहा- 'मन का हो तो अच्छा, न हो तो और भी अच्छा।' नन्हे से अमिताभ इस बात को क्या ही समझ पाते। उन्होंने झट से कहा, अगर मन का न हो रहा हो तो अच्छा कैसे हो सकता है। तो पिता ने कहा, 'नहीं तब वो ईश्वर के मन का होता है। और ईश्वर हमेशा आपका भला ही चाहेंगे।' अमिताभ 16 बरस के हो चले थे। मां भी नौकरी पर लौट चुकी थीं और लिटरेचर के क्षेत्र में बड़ा मुकाम हासिल कर रही थीं और पिता हरिवंशराय भी बड़े लेखकों में शुमार हो चुके थे। नैनीताल के शेरवुड कॉलेज से स्कूलिंग खत्म कर अमिताभ बच्चन ने दिल्ली के किरोड़ी मल कॉलेज में मां-बाबूजी के कहने पर ग्रेजुएशन में दाखिला ले लिया। इसी समय जब नौकरी की तलाश शुरू की, तो हर तरफ निराशा हाथ आई। एक रोज अमिताभ दिल्ली के कॉफी हाउस में दोस्तों के साथ बैठे थे। लगभग सभी दोस्त नौकरी न मिलने से परेशान हाल थे। इतने में एक दोस्त बोल पड़ा- 'गलती हमारी नहीं है, गलती हमारे माता-पिता की है। गलती ये है कि उन्होंने हमें पैदा क्यों किया।' अमिताभ को लगा कि ये दोस्त सही तो कह रहा है। वैसे तो अमिताभ बड़े शांत स्वभाव के थे और बाबूजी के आगे ज्यादा कुछ बोल नहीं पाते थे, लेकिन दोस्त की बात को मन में लिए जब वो अगली छुट्टी पर घर पहुंचे तो उन्होंने जिंदगी में पहली और आखिरी बार हिम्मत कर कह दिया- 'आज मुझे पता चल गया है कि वजह क्या है। आपने मुझे पैदा क्यों किया था।' (अमिताभ की आवाज में भारी गुस्सा था) पिता उनकी ये बात सुनकर दंग रह गए, लेकिन कुछ कहा नहीं। रोज सुबह 4 बजे सैर पर जाने से पहले हरिवंशराय बेटे को पढ़ाई के लिए उठाते थे, लेकिन उस रोज जब वो निकले तो उन्होंने बेटे को जगाया नहीं, बस हल्के कदमों से उसके कमरे में पहुंचे और सिरहाने एक चिट्ठी छोड़ गए। अमिताभ ने चिट्ठी खोली तो उसमें बीते दिन हुई बात का जवाब लिखा था, जो ऐसा है- 'जिंदगी और जमाने की कशमकश से घबराकर मेरे बेटे मुझसे पूछते हैं कि हमें पैदा क्यों किया था? और मेरे पास इसके सिवाय कोई जवाब नहीं है कि मेरे बाप ने मुझसे बिना पूछे मुझे क्यों पैदा किया था? और मेरे बाप को उनके बाप ने बिना पूछे उन्हें और उनके बाबा को बिना पूछे उनके बाप ने उन्हें क्यों पैदा किया था? जिंदगी और जमाने की कशमकश पहले भी थी, आज भी है शायद ज्यादा, कल भी होगी, शायद और ज्यादा, तुम ही नई लीक रखना, अपने बेटों से पूछकर उन्हें पैदा करना।' पढ़ाई पूरी करने के बाद अमिताभ बच्चन काम की तलाश में कोलकाता पहुंचे, जहां उन्हें शराब कंपनी शॉ वॉलेस शिपिंग फर्म एंड कंपनी में काम क्लर्क की नौकरी की। कुछ समय बाद उन्हें आईसीआई में 1500 रुपए तनख्वाह की अच्छी नौकरी मिल गई। यहीं उनकी मुलाकात चंद्रा नाम की लड़की से हुई, जिनसे उन्हें प्यार हो गया। एक रोज अमिताभ बच्चन ने इजहार-ए-मोहब्बत किया तो लड़की ने इनकार कर दिया। दिल टूटा तो उन्होंने कोलकाता की नौकरी छोड़ दी और मुंबई निकल पड़े। नाटकों में हिस्सा लेते हुए उन्हें अभिनय में रुचि थी, लेकिन बाबूजी चाहते थे कि वो नौकरी ही करें। एक रोज वो रेडियो स्टेशन पहुंचे। उस दौर की मशहूर आवाज रहे अमीन सयानी ने उनका ऑडिशन लिया और ये कहकर रिजेक्ट कर दिया कि लोग तुम्हारी आवाज सुनकर डर जाएंगे। इसके अलावा भी अमिताभ को हर जगह से निराशा हाथ लगी।

इसी समय के आसपास उनके भाई अजिताभ ने एक रोज मुंबई से दिल्ली जाते हुए ट्रेन में पास बैठे लड़के से सुना कि डायरेक्टर ख्वाजा अब्बास फिल्म के लिए नए चेहरे की तलाश में हैं। उन्होंने झट से भाई अमिताभ की तस्वीर उस लड़के को थमा दी। अगले दिन तस्वीर देखकर ख्वाजा अब्बास ने अमिताभ को मिलने बुलाया। वो दिल्ली पहुंचें। सफेद चूड़ीदार, सफेद कुर्ते के साथ नेहरू जैकेट पहने अमिताभ जब बातचीत के लिए तैयार हुए तो ख्वाजा अब्बास ने उनका नाम पूछा। जवाब मिला, 'अमिताभ।' ख्वाजा अब्बास ने आगे पूछा, 'क्या तुमने इससे पहले कभी फिल्मों में काम किया है?' अमिताभ- 'जी नहीं, लोगों ने मुझे कभी फिल्मों में लिया ही नहीं।' ख्वाजा ने वजह पूछी तो जवाब में अमिताभ ने कई बड़ी हस्तियों के नाम लिए। ख्वाजा ने फिर पूछा- 'उन्हें आप में क्या दिक्कत नजर आई?' अमिताभ- 'उन्हें लगता था कि मैं हीरोइनों के हिसाब से काफी लंबा हूं।' ख्वाजा- 'हमारे साथ ऐसी कोई दिक्कत नहीं है, क्योंकि हमारी फिल्म में हीरोइन नहीं है। होती तब भी तुम्हें ले लेते।' अमिताभ- 'आप मुझे फिल्म में ले रहे हैं? क्या वाकई आप मुझे फिल्म में ले रहे हैं? बिना टेस्ट के?'ख्वाजा- 'पहले तुम स्टोरी सुन लो फिर रोल और फीस जान लो। अगर तुम तैयार हुए तो कॉन्ट्रैक्ट साइन करेंगे।' बातचीत में ख्वाजा अब्बास को पता चला कि अमिताभ, मशहूर राइटर हरिवंशराय बच्चन के बेटे हैं। उन्होंने फिर पूछा- 'क्या घर से भागकर आए हो।' अमिताभ ने कहा, 'नहीं।' अमिताभ बच्चन जैसे ही उनकी ऑफिस से निकले, उन्होंने तुरंत हरिवंशराय बच्चन को खत लिखा कि कहीं उन्हें बेटे के फिल्मों में आने पर कोई आपत्ति तो नहीं। हरिवंशराय बच्चन वैसे तो चाहते थे कि अमिताभ नौकरी करें, लेकिन इस खत के जवाब में उन्होंने लिख भेजा कि उन्हें कोई आपत्ति नहीं। इस तरह बात बनी और ख्वाजा अब्बास ने 5 हजार रुपए देकर 15 फरवरी 1969 को अमिताभ को फिल्म सात हिंदुस्तानी में साइन कर लिया। शूटिंग हुई और उनकी पहली फिल्म सात हिंदुस्तानी 7 नवंबर 1969 में रिलीज हुई।

स्वत्वाधिकारी
प्रकाशक एवं मुद्रक
डॉ. दीपक अरोरा
श्री आधुनिक प्रिन्टर्स
एण्ड
पैकेजर्स प्रा.लि.
1- मिर्जापुर रोड नैनी
प्रयागराज उ.प्र. 211008 से
मुद्रित एवं एम2ए/25 एडीए
कालोनी नैनी प्रयागराज
211008 (उ.प्र.)
से प्रकाशित
सम्पादक
डॉ.दीपक अरोरा
मो 0 न0 09415608783
RNI No. UPHIN/2012/41154
website:www.adhuniksamachar.com
नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगे।